

१८२४ ई० सँ प्रतिवर्ष प्रकाशित एवं प्रामाणिक एकमात्र

मिथिलादेशीय मकरन्दानुसारि

विद्यापति-पञ्चाङ्गम्

सन् १३९३ साल

वि० सं० २०४२-४३, शक: १९०७-८, सन् १३९३ साल, अं० १९८५-८६ ई०, ल० सं० ८७६-७७,

भारतीय स्वतन्त्रताब्द: ३७-३८, ने० सं० ११०५-११०६

राजा—मंगल: मन्त्री—शुक्र: वर्षा—९ धान्यम्—७

पंचांगलेखक :

पं० श्री रमानन्द झा, ग० फ० ज्यो० आचार्य

एवं

वराह मिहिर

पुस्तकभंडार, पटना : लहेरियासराय

[मूल्य ६ टाका ६० पैसा]

कार्येषुमार्गरोहणयत्नं कार्यंसमग्राऽलोकनतन्त्रम् ।
यावति विज्ञो यस्य सुवर्णं राजति नव्यं तत्तिथिपत्रम् ॥

निवेदन

१२ वर्षसँ अनवरत प्रकाशित एकमात्र मकरन्दानुसारि मिथिला देशीय पंचांग—विद्यापति पंचांगके प्रकाशित करैत हमरा अपार हर्ष भऽरहल अछि । पुस्तकभंडारक संस्थापक मैथिलीविभूति मैथिलतुलसी आचार्य श्रीरामलोचनशरण जी अनेकानेक हानि होइतहुँ एकरा प्रकाशित करैत रहलाह अछि एवं हमहुँ ओहि परम्पराके आगू बढ़ा रहल छी ।

विद्यापति पंचांगक स्नेहीलोकनिसँ अनुरोध अछि जे पंचांगक सुधारक विषयमे अपन-अपन विचार अवश्य पठाबथि ।

आइ लेल जाए अपन प्रियतम पंचांग—विद्यापति पंचांग, जे अपनेक हाथमे अछि । —प्रकाशक

ग्रहक अनुसार रत्नधारण :

सूर्य— माणिक अभावमे अकौनक जड़ि
चन्द्रमा—मोती ,, पलाश
मंगल— मूंगा ,, खैर
बुध— पन्ना ,, चिड़चिड़ी
गुरु— पोखराज ,, पीपल
शुक्र— हीरा ,, गूलरि
शनि— नीलम ,, शमी
राहु— गोमेद ,, दूब
केतु— लाजावर्त वा लहसुनिया ,, कुश

प्रत्यन्तर्दशा साधन सारिणी

प्रत्यन्तर स्वामी एवं हुनक अवधि

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चंद्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
र.	०।५	०।९	०।६	०।१६	०।१४	०।१७	०।१५	०।६	०।१८	रवि ६ वर्ष
चं.	०।९	०।१५	०।११	०।२७	०।२४	०।२८	०।२६	०।११	१।०	
मं.	०।६	०।१०	०।७	०।१९	०।१६	०।२०	०।१७	०।७	०।२१	
रा.	०।१६	०।२७	०।१९	१।१८	१।१४	१।२१	१।१६	०।१९	१।२४	
बृ.	०।१४	०।२४	०।१७	१।१३	१।८	१।१६	१।११	०।१७	१।१८	
श.	०।१७	०।२८	०।२०	१।२२	१।१६	१।२४	१।१८	०।२०	१।२७	
बु.	०।१५	०।२५	०।१७	१।१६	१।१०	१।१८	१।१३	०।१८	१।२१	
के.	०।७	०।११	०।८	०।१८	०।१७	०।२०	०।१८	०।७	०।२१	
शु.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२१	२।०	
चं.	०।१५	०।२५	०।१८	१।१५	१।१०	१।१८	१।१३	०।१८	१।२०	चन्द्र १० वर्ष
मं.	०।१०	०।१७	०।१२	१।२	०।२८	१।३	०।२९	०।१२	१।५	
रा.	०।२७	१।१५	१।१	२।२१	२।१२	२।२६	२।१७	१।१	३।०	
बृ.	०।२४	१।१०	०।२८	२।१२	२।४	२।१६	२।८	०।२८	२।२०	
श.	०।२८	१।१८	१।४	२।२५	२।१६	३।०	२।२१	१।१	३।५	
बु.	०।२५	१।१२	०।२९	२।१७	२।८	२।२०	२।१२	१।०	२।२५	
के.	०।११	०।१८	०।१३	१।१	०।२८	१।४	१।०	०।१२	१।५	
शु.	१।०	१।२०	१।५	३।०	२।२०	३।५	२।२५	१।५	३।१०	
र.	०।९	०।१५	०।१०	०।२७	०।२४	०।२८	०।२५	०।१०	१।०	
मं.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।८	०।२४	मंगल ७ वर्ष
रा.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२१	२।०	१।२४	०।२२	२।३	
बृ.	०।१७	०।२८	०।२०	१।२१	१।१५	१।२३	१।१७	०।१९	१।२६	
श.	०।२०	१।३	०।२३	१।२६	१।२४	२।३	१।२७	०।२४	२।७	
बु.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१७	१।२५	१।२०	०।२१	१।२६	
के.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।८	०।२५	
शु.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	१।२६	०।२५	२।१०	
र.	०।६	०।११	०।७	०।१९	०।१६	०।२१	०।१६	०।७	०।२१	
चं.	०।१०	०।१७	०।१२	१।२	०।२८	१।३	१।०	०।१२	१।५	

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चन्द्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
रा.	१।१८	२।२१	१।२६	४।२५	४।१०	५।४	४।१८	१।२७	५।१२	राहु १८ वर्ष
बृ.	१।१३	२।१२	१।२१	४।१०	३।२५	४।१७	४।२	१।२०	४।२४	
श.	१।२२	२।२६	२।०	५।४	४।१७	५।१२	४।२६	२।०	५।२१	
बु.	१।१६	२।१६	१।२३	४।१८	४।२	४।२५	४।१०	१।२४	५।३	
के.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२०	२।०	१।२३	०।२२	२।३	
शु.	१।२४	३।०	२।३	५।१२	४।२४	५।२१	५।३	२।३	६।०	
र.	०।१६	०।२७	०।१९	१।१८	१।१३	१।२२	१।१६	०।१९	१।२४	
चं.	०।२७	१।१५	१।२	२।२७	२।१२	२।२५	२।१७	१।१	३।०	
मं.	०।१९	१।१	०।२२	१।२७	१।२१	२।०	१।२३	०।२२	२।३	
बृ.	१।८	२।४	१।१४	३।२५	३।१२	४।२	३।१८	१।१५	४।८	बृहस्पति १६ वर्ष
श.	१।१६	२।१६	१।२४	४।१७	४।२	४।२४	४।१०	१।२३	५।२	
बु.	१।११	२।८	१।१७	४।३	३।१८	४।१०	३।२५	१।१८	४।१६	
के.	०।१७	०।२८	०।२०	१।२०	१।१५	१।२३	१।१८	०।१९	१।२६	
शु.	१।१८	२।२०	१।२६	४।२४	४।८	५।२	४।१६	१।२६	५।१०	
र.	०।१४	०।२४	०।१७	१।१३	१।८	१।१६	१।११	०।१७	१।१८	
चं.	०।२४	१।१०	०।२८	२।१२	२।४	२।१६	२।८	०।२८	२।२०	
मं.	०।१७	०।२८	०।१९	१।२१	१।१४	१।२३	१।१७	०।२०	१।२६	
रा.	१।१३	२।१२	१।२१	४।१०	३।२५	४।१७	४।३	१।२०	४।२४	
श.	१।२४	३।०	२।३	५।१३	४।२५	५।२१	५।४	२।३	६।१	शनि १९ वर्ष
बु.	१।१६	२।२१	१।२७	४।२५	४।६	५।३	४।१७	१।२७	५।१२	
के.	०।२०	१।३	०।२३	२।०	१।२३	२।४	१।२७	०।२४	२।६	
शु.	१।२७	३।५	२।६	५।२१	५।२	६।०	५।११	२।६	६।१०	
र.	०।१७	०।२९	०।२०	१।२१	१।१६	१।२४	१।१८	०।२०	१।२७	
चं.	०।२८	१।१७	१।४	२।२५	२।१६	३।०	२।२१	१।३	३।५	
मं.	०।२०	१।३	०।२३	२।०	१।२३	२।४	१।२६	०।२३	२।६	
रा.	१।२१	२।२६	२।०	५।३	४।१७	५।१२	४।२५	२।०	५।२१	
बृ.	१।१६	२।१६	१।२३	४।१७	४।१	४।२५	४।१०	१।२३	५।२	

प्रत्यन्तर स्वामी	रवि मा.दि.	चन्द्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहु मा.दि.	बृह० मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.	केतु मा.दि.	शुक्र मा.दि.	महा०
बु.	१।१४	२।१२	१।२१	४।१०	३।२५	४।१७	४।२	१।२१	४।२४	बुध १७ वर्ष
के.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२०	२।०	
शु.	१।२१	२।२५	१।२९	५।३	४।१६	५।१२	४।२४	२।०	५।२०	
र.	०।१५	०।२६	०।१८	१।१६	१।११	१।१८	१।१४	०।१८	१।२१	
चं.	०।२५	१।१२	१।०	२।१७	२।८	२।२०	२।१२	१।०	२।२५	
मं.	०।१८	१।०	०।२०	१।२४	१।१७	१।२६	१।२१	०।२०	१।२९	
रा.	१।१६	२।१६	१।२४	४।१७	४।३	४।२६	४।१०	१।२४	५।३	
बृ.	१।११	२।८	१।१८	४।३	३।१८	४।१०	३।२५	१।१८	४।१६	
श.	१।१८	२।२१	१।२६	४।२५	४।१०	५।३	४।१८	१।२६	५।१२	
के.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।२०	०।२४	०।२१	०।८	०।२४	केतु ७ वर्ष
शु.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	२।०	०।२५	२।१०	
र.	०।६	०।११	०।७	०।१९	०।१७	०।२०	०।१८	०।७	०।२१	
चं.	०।१०	०।१७	०।१३	१।२	०।२८	१।४	१।०	०।१२	१।५	
मं.	०।८	०।१२	०।८	०।२२	०।१९	०।२३	०।२१	०।९	०।२४	
रा.	०।१९	१।२	०।२२	१।२६	१।२१	२।०	१।२४	०।२२	२।३	
बृ.	०।१६	०।२८	०।२०	१।२१	१।१४	१।२३	१।१७	०।१९	१।२६	
श.	०।२०	१।३	०।२३	२।०	१।२४	२।३	१।२६	०।२४	२।७	
बु.	०।१८	१।०	०।२१	१।२३	१।१७	१।२६	१।२०	०।२१	२।०	
शु.	२।०	३।१०	२।१०	६।०	५।१०	६।१०	५।२०	२।१०	६।२०	शुक्र २० वर्ष
र.	०।१८	१।०	०।२१	१।२४	१।१८	१।२७	१।२१	०।२१	२।०	
चं.	१।०	१।२०	१।५	३।०	२।२०	३।५	२।२५	१।५	३।१०	
मं.	०।२१	१।५	०।२४	२।३	१।२६	२।७	१।२९	०।२४	२।१०	
रा.	१।२४	३।०	२।३	५।१२	४।२४	५।२१	५।३	२।३	६।०	
बृ.	१।१८	२।२०	१।२६	४।२४	४।८	५।२	४।१६	१।२६	५।१०	
श.	१।२७	३।५	२।७	५।२१	५।२	६।०	५।१२	२।६	६।१०	
बु.	१।२१	२।२५	१।२९	५।३	४।१६	५।१२	४।२४	२।०	५।२०	
के.	०।२१	१।५	०।२५	२।३	१।२६	२।६	२।०	०।२४	२।१०	

प्रकाशक

बालक

गोविदमित्ररोड,

पटना-800004

संपादक : श्री मैथिलीशरण सिंह, श्री सीताशरण सिंह, श्री सियारामशरण, श्री जानकीवल्लभशरण
(स्वत्वाधिकारीगण बालक एवं पुस्तकभंडार)

मुद्रक : श्री हरि प्रसाद सिंह
श्री हिमालय प्रेस, पटना-800004

[बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, असम, बंगाल, दिल्ली, कर्नाटक (बंगलुर), गुजरात, केरल, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र इत्यादि भारतक अनेक शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत]

(३) **परिशिष्ट**

शुद्धाशुद्ध निर्णय

प्रथम श्रावणकृष्ण २ बृहस्पतिसँ प्रथम भाद्रकृष्ण १० बुध धरि शुद्ध। भाद्रशुक्ल मंगलसँ कार्तिकशुक्ल ५ रवि धरि शुद्ध। एवं फाल्गुनशुक्ल १४ मंगलसँ आषाढ़शुक्ल ३ बृहस्पतिधरि शुद्ध अछि।

गतवर्षक सिंहावलोकन

प्रस्तुत पञ्चांगमे लिखल छल जे अधिकारी वर्गमे अधिकाधिक पापग्रहे छथि। मकरन्दक अनुसार रोहिणीक वास तटगत अछि; तेँ उपज सन्तोषप्रद नहि। विविधोत्पात, समय प्रतिकूल, इत्यादि फल अक्षरशः चरितार्थ भेल।

वर्तमान (२०४२) वर्षक वर्षाधिकारी बहुधान्य नामक सम्वत्सर अछि। एहि वर्षमे मकरन्दक अनुसार ग्रहमन्त्रिमण्डलक पदाधिकारी अधोलिखित निर्वाचित छथि: **राजा**—मंगल। **प्रधानमन्त्री**—शुक्र। **गृहमन्त्री**—मंगल। **मेघ (साम्वर्तक) मन्त्री**—चन्द्रमा। **सिंचाइमन्त्री**—मंगल। **खाद्यमन्त्री**—सूर्य। **रक्षामन्त्री**—शनि। ग्रहमन्त्रिमण्डलमे सर्वाधिक पापग्रहे छथि।

वर्षफल, २०४२-४३

बहुधान्य नामक सम्वत्सरक फल—सुभीक्ष, क्षेम, आरोग्य, राजामे शान्ति, चोरक उपद्रव विशेष इत्यादि फल होयत। परार्धमे दुर्भिक्ष, अर्थक हानि, चोरसँ उपद्रव, अधिक जनविग्रह इत्यादि फल होयत।

राजा (मंगल)क फल—वायु वेग अधिक, वृक्षक पतन, मेघक अल्पता, धानक ह्रास, वृष्टिक अल्पता, ज्वरक प्रकोपसँ हाथी, घोड़ा, महिष आ मानवगण व्याकुल, आ राजा युद्धक हेतु उद्यत होयताह।

प्रधानमन्त्री (शुक्र)क फल—मेघ विशेष जलसँ आकुल-व्याकुल रहत। अकालात, पृथ्वी धान्यसमूहसँ पूर्ण; आ नित्य उत्सवसँ प्रमुदित रहतीह। राजा अपना धर्म-कर्ममे संलग्न रहताह, आ दुष्ट जनक विनाश होयत।

गृहमन्त्री (मंगल)क फल—वायुक अधिक प्रकोपसँ वृक्षादिक पतन होयत, सूर्य भगवान् प्रचण्ड किरणसँ उदित रहताह। मेघमे जलाभाव रहत, जनवर्ग विपत्तिसँ व्याकुल रहत। हाथी-घोड़ा, महिष, गाय, बड़द, सिंह प्रभृति पशुक नाश होयत। लोक मन्मथादि रोगसँ विकल रहत।

मेघ मन्त्री (चन्द्रमा)क फल—मेघ अल्प जल वर्षा करत आ खण्ड वृष्टि होयत।

सिंचाइ मन्त्री (मंगल)क फल—पृथ्वी अल्प जलसँ व्याप्त रहतीह।

खाद्यमन्त्री (सूर्य)क फल—लोक रोगसँ व्याकुल रहत, पृथ्वी पर अल्प वृष्टि होयत आ धान्यक विनाश होयत।

रक्षामन्त्री (शनि)क फल—मानवगण धन-धान्यसँ हीन रहत। सदा भयभीत आ दुःख संघसँ क्षीण रहत।

साम्वर्तक नामक मेघक फल—अतिवृष्टि होयत, धानक वृद्धि होयत, जलसँ पृथ्वी पूर्ण रहतीह आ आकाश मेघाच्छन्न रहत।

रोहिणीक वास तटगत—ठीक वर्षा होयत।

पौष समावास्याक फल—जलाभावक कारणे उपज अल्प होयत।

वैशाखशुक्ल तृतीय तिथिक फल—धन-धान्यसँ पृथ्वी सम्पन्न रहतीह।

आर्द्रा वर्षाक ज्ञान—अल्प वृष्टि।

अथ लोक-व्यवहारार्थं विश्वा लिख्यते

वर्षा ९, धान्य ७, शीत ५, तृण ९, उष्ण ११, वायु ११, प्रजावृद्धि १२, प्रजाक्षय १२, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृष्णा ५, निद्रा ७, आलस्य ११, उद्यम ७, शान्ति ११, क्रोध ३, दम्भ ३, मैत्री १, उत्सेव १३, पाप ७, पुण्य ११, रसादि ९, उग्रत्व ५, रसोत्पत्ति १३, फलोत्पत्ति १५, रोग ९, देशक्षय १९, आचार १५, अनाचार १७, मरण ११, व्यापार १७, चौरभय ३, चौरशान्ति ५, अग्निभय ६, अग्निशान्ति १७।

आय-व्यय चक्र

राशि	मेष वृश्चिक	वृष तुला	मिथुन कन्या	कर्क	सिंह	धनु मीन	मकर कुम्भ
आय	८	२	५	१४	२	११	१४
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	१४
फल	लोकापवाद	लाभ	लाभ	विजय	विजय	विजय	क्लेश

राशि-फल

मेष राशिक फल—ग्रहयोगवश ई वर्ष नीक रहत, वर्षक पूर्वार्धमे धनक उन्नति, पदोन्नति, सम्मान, उत्तम प्रभाव, उत्तरार्धमे उत्तम कार्यमे अधिक व्यय, किन्तु कार्यमे सफलता होयत, सन्तान-सुख नीक रहत, व्यवाधिक्यक कारण किछु परेशानी होयत, तथापि कार्य आ प्रभावपर असर नहि होयत, आत्मबलक द्वारा जनसमुदाय अनुकूल रहत, बाह्य कार्यक्षेत्रमे किछु लोकापवाद होयत, उदर-विकार रहत, अतः, कारी वस्त्र, लोह धारण आ शिवाराधन श्रेयस्कर होयत।

वृष राशिक फल—ग्रहस्थितिक अनुसार ई वर्ष सामान्य कोटिक रहत। व्यापारमे यदा-कदा विफलता होयत। कृषिक कार्यमे सफलता भेटत। पारिवारिक समाचार नीक रहत। यद्यपि उत्तम कार्यमे व्यय अधिक होयत तथापि मानसमे शान्ति रहत। समाजमे प्रतिष्ठा भेटत। अनुजवर्गपर प्रभाव नीक रहत। पुरुषार्थ द्वारा उन्नति होयत। कदाचित् अपव्ययक सम्भावना अछि। शिवाराधन लाभप्रद रहत।

मिथुन राशिक फल—ग्रहस्थितिक वश ई वर्ष नीक रहत। व्यापार एवं कृषि कार्यमे सफलता भेटत। शत्रु पर प्रभाव नीक रहत। समाजमे प्रतिष्ठा भेटत। ज्योतिषमे कदाचित् बाधा आयत। किन्तु शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत होयत। सन्तानजन्य परेशानी होयत। वर्षक उत्तरार्ध विशेष नीक रहत। मांगलिक कार्यक विशेष योग अछि। धन बाधक उपद्रव अवश्य होयत। किन्तु शान्तिपूर्वक समय जायत। देवताक आराधनासँ सर्वथा शान्ति भेटत।

कर्क राशिक फल—ग्रहयोगवश ई वर्ष सामान्य कोटिक नीक। व्यापारमे मन्दता रहत, लाभमे किछु विघ्न-बाधा उपस्थित होयत। सुख-शान्तिक कमजोरी दूर होयत। किन्तु कार्य क्षेत्रमे विघ्न रहत। उन्नतिमे किछु बाधा आओत। किन्तु शान्तिपूर्वक कार्य सम्पादन कैने सुधार रहत। जनतापर प्रभाव नीक रहत। वर्षक उत्तरार्धमे सन्तान द्वारा किछु परेशानी होयत। किन्तु सफलता भेटैत जायत। शत्रुवर्गपर प्रभाव नीक रहत।

सिंह राशिक फल—ई वर्ष ग्रहस्थितिक द्वारा सामान्यतः नीके रहत। सुख-शान्तिपूर्वक लोकमे प्रतिष्ठा भेटत। सहायकसँ मानसमे अशान्ति होयत। किन्तु धैर्यपूर्वक कार्य क्षेत्रमे सफलता भेटत। वर्षक पूर्वार्धसँ उत्तरार्ध नीक रहत। लोकमे यश होयत। व्यापारमे लाभ होयत, सन्तान द्वारा परेशानी होयत। आयसँ व्यय अधिक होयत, तथापि शान्तिमय जीवन रहत। परिवारमे विवाद रहत। दुर्गाक आराधनासँ जीवन सुखमय रहत।

कन्या राशिक फल—ई वर्ष ग्रहस्थितिक [illegible] रहत। कार्यमे मन्दता, लाभमे अल्पतासँ किछु चिन्ता रहत, तथापि सहयोग द्वारा शान्ति भेटत। किन्तु परेशानी अनुभव होयत। कृषि कार्यमे सफलता भेटत। सन्तान-सुख नीक होयत। वर्षक उत्तरार्धक अपेक्षा पूर्वार्ध नीक रहत। शत्रुक प्रकोपसँ सीमित रहत, कर्मठताक द्वारा शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त होयत। आय सामान्य कोटिक होयत। कृषि क्षेत्रमे कर्मठता द्वारा समाजहुमे प्रतिष्ठा प्राप्ति सब लोकमे मान्यता होयत। दाम्पत्यमे अनुकूल परिस्थिति रहत। देवताक आराधनासँ सर्वथा सुखी जीवन रहत।

तुला राशिक फल—ग्रह स्थितिक अनुसार ई वर्ष मध्य कोटिक रहत, शारीरिक समाचार ठीक नहि रहत। वात विकार द्वारा कष्ट होयत, पत्नीजन्य कष्टसँ मानसमे अशान्ति रहत। जनसमुदायमे प्रभाव स्वच्छ रहत। व्यापारमे सफलता भेटत। उत्तम कार्यमे व्यय अधिक होयत। धनिक व्यक्ति द्वारा धन लाभमे अस्थिरता रहत। किन्तु पदोन्नति, सम्मान, आ विरोधीपर विजय होयत। सन्तान सुख नीक रहत। शनि आ राहुक अनुकूलताक हेतु कारी वस्त्र, लोह, कारी तिलक देवल लाभप्रद रहत।

वृश्चिक राशिक फल—ई वर्ष उत्तम कोटिक रहत। व्यापारमे लाभ रहत। स्त्री-सुख रहैत यथाकदा अशान्ति रहत। शरीर वातपर अधिक प्रकोप रहत। सन्तान सुख मध्य कोटिक रहत, समाजमे प्रतिष्ठा भेटत। पारिवारिक सुख नीक होयत। कृषिकार्यमे सफलता भेटत। धार्मिककार्यमे व्यय अधिक होयत। वर्षक पूर्वार्ध उत्तरार्ध नीक रहत। अनुकूल कार्यक सिद्धि होयत। शनिपूजा लाभकर रहत।

धनु राशिक फल—ग्रहयोगक अनुसार ई वर्ष उच्च कोटिक रहत। व्यापारमे लाभ, पदोन्नति जनसमुदायमे

प्रभाव उत्तम रहत। वरक वातावरण नीक रहत, पारिवारिक सुख उत्तम रहत। कृषि-कार्यमे सफलता भेटत। व्ययसँ आय अधिक रहत। लोकमे सुयश होयत। वर्षक उत्तरार्द्धमे लाभक ह्रास होयत। धार्मिक आराधनासँ विशेष लाभ होयत। कार्यक्षेत्रमे विजय होयत।

मकर राशिक फल—ई वर्ष साधारण कोटिक रहत। अधिक लाभ रहितहुँ व्यय अधिक रहत। कठिनतासँ पदोन्नति होयत। आय आ व्यय समान रहितहुँ क्लेश अनुभव होयत। पारिवारिक सुख नीक रहत। स्वास्थ्यपर प्रभाव नीक रहत। वर्षक उत्तरार्द्धमे किछु परेशानी होयत। कृषि-विभागसँ लाभान्वित रहब। उन्नतिमे विघ्न-बाधा होयत। समाजमे प्रतिष्ठा उत्तम कोटिक रहत।

कुम्भ राशिक फल—ग्रहस्थितिक अनुसार ई वर्ष उत्तम कोटिक रहत। व्यापारमे लाभ, प्रतिष्ठा, लोकमे सुयश इत्यादि सुख होयत। विद्यामे सफलता, बुद्धि-विवेक द्वारा कार्यमे सफलता भेटत। पदोन्नति होयत। कदाचित् आकस्मिक घटनाक कारण व्यय अधिक होयत। पारिवारिक सुख नीक रहत। मनोनुकूल कार्यक सिद्धि कठिनतासँ होयत। यदा-कदा शारीरिक क्लेश अनुभव होयत। शत्रु विरोध सम्भावना अछि। देवताक आराधनासँ विशेष सुख-शान्ति भेटत।

मीन राशिक फल—ई वर्ष ग्रहगोचरक अनुसार नीके रहत। समाजमे आदर-प्रतिष्ठा नीक रहत। धनक व्यय अधिक होएत। पुरुषार्थ द्वारा भाग्योदय होयत। कृषिसँ परेशानीपूर्ण लाभक योग अछि, पदोन्नति पूर्वक स्थानान्तरणक सम्भावना अछि, पारिवारिक सुख नीक रहत। वर्षक उत्तरार्द्धमे कृषि-विभागसँ लाभ नीक होयत। धन-वैभव भेटत। शत्रुवर्ग पर विजय रहत।

मासफल

प्रथम श्रावण मासक फल—एहि मासमे ५ टा बुध दिन पड़तैँ तथ वस्तुक भावमे तेजी होयत। वर्षाक योग नीक अछि तथा सब खाद्यपदार्थमे तेजी रहत। तेलहन—(सरिसों-राई-तोरी-तीसी) आदिक भाव उन्नत रहत। पशुक पालकक अधिकता रहत। पश्चिम दिशामे वर्षा अधिक होयत। गुड़ एवं धनिहन, आलू आदि आन वस्तुक भाव क्रमशः उन्नत रहत।

द्वितीय श्रावण मासक फल—एहि मासमे वर्षाक योग नीक अछि। द्वितीयपक्षमे कतहु-कतहु खण्ड वृष्टिक योग अछि। खाद्यान्न पदार्थक भावमे तेजी-मन्दी दुनू होयत। सोना-चाँदी आदि धातुक भावमे वृद्धि होयत। प्रजाविद्रोह-जनआन्दोलन, हड़ताल आदि घटनासँ देशक स्थिति दयनीय रहत। जनसंहार होयबाक विशेष सम्भावना अछि। जनवर्ग विशेष कष्टक अनुभव करत, राजा आ प्रजामे अशान्ति रहत। भारतसँ पश्चिम देश (पाकिस्तान) से युद्धक सम्भावना अछि। आहिसँ प्रजा पीड़ित रहत।

भाद्र मासक फल—एहि मासक पूर्व भागमे साधारण वर्षाक योग अछि। उत्तरार्द्धमे विशेष योग अछि। कृषक लोकनि किछु अशान्त मन शान्तिमे अछोताह, भूकम्पक सम्भावना अछि। चीन, भूटान, मंगोलिया आदि देशमे उपद्रव होयत, अग्नि प्रकोपसँ क्षति होयत आ सब वस्तुक भावमे तेजी होयत। तेलहन आदि अन्नक भावमे विशेष उन्नति होयत।

आश्विन मासक फल—एहि मासमे अनुकूल वर्षाक योग अछि। राजा आ प्रजा वर्गमे भयानक स्थिति रहत। जनधन, दुर्भिक्ष इत्यादि विविध क्लेश उपस्थित होयत। कालान्तरमे प्रजा वर्गमे शान्तिक स्थापना होयत। खाद्यान्नक भावमे समता रहत।

कार्तिक मासक फल—एहि मासमे वर्षाक योग साधारण अछि। विश्वयुद्धक सम्भावनासँ देश अशान्त रहत। जन-धनक सम्भावना अछि। मासान्तमे धार्मिक योगसँ प्रजा वर्गमे शान्तिक स्थापना होयत। दुर्भिक्षक योग संघटित होयत। खाद्यान्नक भावमे विशेष परिवर्तन होयत। तेलक भावमे उन्नति आ अन्य वस्तुक भाव पूर्ववत् रहत।

अग्रहण मासक फल—एहि मासमे साधारणतया वर्षाक योग नीक अछि। खाद्यान्नक भावमे समता रहत। भारतसँ पश्चिमक देश (पाकिस्तान) से युद्धक सम्भावना अछि। कोनो प्रधान नेता पर आपत्ति अछि। प्रजावर्गमे अशान्ति रहत। वर्षक उत्तरार्द्धमे प्रजावर्ग सुखशान्तिपूर्वक कालयापन करत। सुभिक्ष होयत।

पौष मासक फल—एहि मासमे वर्षाक योग नीक अछि। जाहिसँ कृषकलोकनि विशेष लाभान्वित रहताह। वस्तुक भावमे विघटन (परिवर्तन) नहि होयत। खाद्यान्नक भावमे तेजी रहत। भूकम्पक योग सेहो अछि। ईशान देशक (भूटान, चीन, मंगोलिया) आदि देश अतिक्रान्त होयत।

माघ मासक फल—एहि मासमे मेघाडम्बर, मेघक छाया विशेष होयत। कतहु-कतहु साधारण वर्षाक योग अछि। मासक पूर्वार्द्धमे खाद्यान्नक भावमे तेजी रहत। उत्तरार्द्धमे परिवर्तन (भावमे गिरावट) होयत। साधारणतः अतिवृष्टिक प्रकोप होयत। वर्षाक अभावसँ कृषक वर्गमे हाहाकार रहत। देशमे युद्धक सम्भावना अछि। राजा आ प्रजामे बड़ा चमत्कारक व्यवहार अछि। ईश्वरक अनुकम्पासँ कृषक वर्गमे शान्तिक स्थापना होयत, पृथ्वी धन-धान्यसँ पूरित रहतीह। प्रजा सुखी होयत।

फाल्गुन मासक फल—एहि मासमे सूर्यनारायणक किरणमे तापमान अधिक होयत, वर्षाक अभाव रहत। मासक पूर्वार्द्धमे खाद्यान्नक भावमे समता रहत। उत्तरार्द्धमे विशेष तेजी होयत। देशमे युद्धक स्थिति चालू रहत। विश्वव्यापी युद्धक सम्भावना अछि। ई राजा आ प्रजा वर्गमे अशान्ति रहत।

चैत्र मासक फल—एहि मासमे वस्तुक भावमे तेजी रहत। उत्तरार्द्धमे धातु पदार्थक भावमे एवं खाद्यान्नक भावमे परिवर्तन (गिरावट) होयत। वायुवेग अधिक रहत। जीवन प्रतिकूल रहत। विवादसँ पश्चिम देशक (पाकिस्तानक) स्थिति ठीक नहि रहत। भकाड़सँ राजा आ प्रजा आतंकित रहत।

वैशाख मासक फल—एहि मासमे खाद्यान्नक भावमे समता रहत। आँधी आदिक योग अछि। वातप्रकोप सदा रहत। मौसम प्रतिकूल। ईश्वरक अनुकम्पासँ समयमे परिवर्तन होयत। राजा आ प्रजावर्गमे शान्तिक स्थापना होयत। प्रजावर्ग सुखी रहत।

ज्येष्ठ मासक फल—एहि मासमे वात प्रकोप अधिक रहत। तापमान अधिक होयत। जीवमात्र क्लेशित रहत। मासक उत्तरार्द्धमे वर्षाक योग अछि। समय सुहावन रहत। खाद्यान्नक भावमे शिथिलता रहत। ईशान (चीन आदि) देशमे भूकम्पक संभावना अछि। देशक स्थिति युद्धोन्मुख रहत। समय भयावह रहत।

आषाढ़ मासक फल—एहि मासमे खाद्यान्नक भावमे सदा गिरावटे रहत। धातु आदि पदार्थक भावमे समता रहत। तापमान अधिक होयत। वर्षाक योग नीक अछि। धन-धान्यसँ पृथ्वी पूरित रहतीह। प्रजाजन सुखी अवस्थामे रहताह। जनवर्ग शान्तिक मुद्रामे रहत। प्रजा धन-धान्यसँ पूर्ण भए सुखी अवस्थामे रहताह।

दुर्वाक्षतमन्त्रः

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

ॐ दीर्घायुर्भव (पुरुषक हेतु); सौभाग्यवती भव (स्त्रीक हेतु) मंत्रसँ कही।

सन् १३९३ सालक पर्व-सूची

मौनापंचमी	७	जुलाई
मधुश्रावणी	१६	अगस्त
नागपंचमी	२१	,,
रक्षाबंधन	१०	,,
कृष्णाष्टमी	७	सितम्बर
कुशी अमावास्या	१४	,,
तीज एवं चौठचंद्र	१७	,,
अनन्त चतुर्दशी	२०	सितम्बर
विश्वकर्मा पूजा	१७	,,
जितिया	७	अक्टूबर
सोमवारी व्रत	१४	,,
कलश-स्थापन	१२	,,
विजयादशमी	२१	अक्टूबर
कोजागरा	२८	,,
दीपावली	१२	नवम्बर
भ्रातृ द्वितीया / चित्रगुप्त पूजा	१४	,,
प्रतिहारषष्ठी	१८	,,
अक्षयनवमी	२१	नवम्बर
देवोत्थान एकादशी	२३	,,
कार्तिकी पूर्णिमा	२७	,,
रविव्रतारंभ	२४	दिसम्बर
विवाहपंचमी	११	,,
तिलासंक्रान्ति	१४	जनवरी
नरकनिवारण १४	७	फरवरी
सरस्वती पूजा	१३	,,
अचलासप्तमी	१६	,,
शिवरात्रि	८	मार्च
होलिकादाह	२६	मार्च
होली	२७	,,

रामनवमी	१८	अप्रैल
जुड़शीतल	१३	अप्रैल
[illegible]	२४	अप्रैल
अक्षयतृतीया	१२	मई
रविव्रतक समाप्ति	११	,,
वटसावित्री	१६	जून
गंगादशहरा	१७	,,
रथयात्रा	२९	जुलाई
हरिशयनी	११ १७	,,
गुरुपूर्णिमा	२१	जुलाई
सोमवारी	७	,,

उपनयनक दिन

मार्च : २८।
अप्रैल : २१।
मई : ११।१९।२० (कन्याक)
जून : २८।६।१२।१८।२१
जुलाई : ६

विवाहक दिन

अप्रैल : २०।२३।३०
मई : ११।१३।१५।१८।१९ ।२१।२३।२५।२८।२९
जून : १।२।११।१८।२२।३०
जुलाई : १।४

द्विरागमनक दिन

अप्रैल : १६।१७।२२।२७
मई : ११।१२।२२।२६

अथ मेषादिषड्राशीनां लग्नसारिणी

अंशाः	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ३।१८ १घ. ५७ मि.	२ ३६ ५२	२ ४७ ८	२ ५४ २४	३ १ ४०	३ ८ ५६	३ १६ १२	३ २३ २८	३ ३० ४४	३ ३८ ००	३ ४६ २२	३ ५४ ४४	४ ३ ६	४ ११ २८	४ १९ ५०	४ २८ १२	४ ३६ ३४	४ ४४ ५६	४ ५३ १८	५ १ ४०	५ १० १२	५ १८ २४	५ २६ ४५	५ ३५ ७	५ ४३ ३०	५ ५१ ५२	६ ०० १४	६ ८ ३६	६ १६ ५८	६ २५ २०	६ ३३ ४२
वृष ४।११ १घ. ४० मि.	६ ४२ ४	६ ५० २६	६ ५८ ४८	७ ७ १०	७ १५ ३२	७ २३ ५४	७ ३२ १६	७ ४० ३८	७ ४९ ००	७ ५९ ६	८ ९ १२	८ १९ १८	८ २९ २४	८ ३९ ३०	८ ४९ ३६	८ ५९ ४२	९ ९ ४८	९ १९ ५४	९ ३० ००	९ ४० ६	९ ५० १२	१० ०० १८	१० १० २४	१० २० ३०	१० ३० ३६	१० ४० ४२	१० ५० ४८	११ ०० ५४	११ ११ ०	११ २१ ६
मिथुन ५।०१ २घ. १ मि.	११ ३१ १२	११ ४१ १८	११ ५१ २४	१२ १ ३०	१२ ११ ३६	१२ २१ ४२	१२ ३१ ४८	१२ ४१ ५४	१२ ५२ ००	१३ ३ २६	१३ १४ ५२	१३ २५ १८	१३ ३७ ४४	१३ ४९ १०	१४ ०० ३६	१४ १२ २	१४ २३ २८	१४ ३४ ५४	१४ ४६ २०	१४ ५७ ४६	१५ ९ १२	१५ २० ३८	१५ ३२ ४	१५ ४३ ३०	१५ ५४ ५६	१६ ६ २२	१६ १७ ४८	१६ २९ १४	१६ ४० ४०	१६ ५२ ६
कर्क ५।२३ २घ. १२ मि.	१७ ३ ३२	१७ १४ ५८	१७ २६ २४	१७ ३७ ५०	१७ ४९ १६	१८ ०० ४२	१८ १२ ८	१८ २३ २४	१८ ३५ ००	१८ ३६ ३३	१८ ५८ ८	१९ ९ ४२	१९ २१ १६	१९ ३२ ५०	१९ ४४ २४	१९ ५५ ५८	२० ७ ३२	२० १९ ६	२० ३० ४०	२० ४३ ४	२० ५३ ४२	२१ ५ २२	२१ १६ ५६	२१ २२ ३०	२१ ४० ४	२१ ५१ ३८	२२ ३ १२	२२ १४ ४६	२२ २६ २०	२२ ३७ ५४
सिंह ५।४० २घ. ४६ मि.	२२ ४९ २८	२३ १ २	२३ १२ ३६	२३ २४ १०	२३ ३५ ४४	२३ ४७ १८	२३ ५८ ५२	२४ १० २६	२४ २२ ००	२४ ३३ १६	२४ ४४ ३२	२४ ५५ ४८	२५ ७ ४	२५ १८ २०	२५ २९ ३६	२५ ४० ५२	२५ ५२ ८	२६ ३ २४	२६ १४ ४०	२६ २५ ५६	२६ ३७ १२	२६ ४८ २८	२६ ५९ ४४	२७ ११ ००	२७ २२ १६	२७ ३३ ३२	२७ ४४ ४८	२७ ५५ ४	२८ ७ २०	२८ १८ ३६
कन्या ५।३८ २घ. ५५ मि.	२८ २९ ५२	२८ ४१ ८	२८ ५२ २४	२९ ३ ४०	२९ १४ ५६	२९ २६ १२	२९ ३७ २८	२९ ४८ ४४	३० ०० ००	३० ११ १६	३० २२ ३२	३० ३३ ४८	३० ४५ ४	३० ५६ २०	३१ ७ ३६	३१ १८ ५२	३१ ३० ८	३१ ४१ २४	३१ ५२ ४०	३२ ३ ५६	३२ १५ १२	३२ २६ २८	३२ ३७ ४४	३२ ४९ ००	३३ ०० १६	३३ ११ ३२	३३ २२ ४८	३३ ३४ ४	३३ ४५ २०	३३ ५६ ३६

अथ तुलादिषड्राशीनां लग्नसारिणी

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
तु०	३४ ७ ५२	३४ १९ ८	३४ ३० २४	३४ ४१ ४०	३४ ५२ ५६	३५ ४ १२	३५ १५ २८	३५ २६ ४४	३५ ३८ ००	३५ ४९ ३४	३६ १ ८	३६ १२ ४२	३६ २४ १६	३६ ३५ ५०	३६ ४७ २४	३६ ५८ ५८	३७ १० ३२	३७ २२ ६	३७ ३३ ४०	३७ ४५ १४	३७ ५६ ४८	३८ ८ २२	३८ १९ ५६	३८ ३१ ३०	३८ ४३ ४	३८ ५४ ३८	३९ ६ १२	३९ १७ ४६	३९ २९ २०	३९ ४० ५४
वृश्चिक ५।४७ २घ. १९ मि.	३९ ५२ २८	४० ४ २	४० १५ ३६	४० २७ १०	४० ३८ ४४	४० ५० १८	४१ १ ५२	४१ १३ २६	४१ २५ ००	४१ ३६ २६	४१ ४७ ५२	४१ ४९ १८	४२ १० ४४	४२ २२ १०	४२ ३३ ३६	४२ ४५ २	४२ ५६ २८	४३ ७ ५४	४३ १९ २०	४३ ३० ४६	४३ ४२ १२	४३ ५३ ३८	४४ ५ ४	४४ १६ ३०	४४ २७ ५६	४४ ३९ २२	४४ ५० ४८	४५ ३ १४	४५ १३ ४०	४५ २५ ६
धनु ५।४३ १घ. १५ मि.	४५ ३६ ३१	४५ ४७ ५७	४५ ५९ २४	४६ १० ५०	४६ २२ १६	४६ ३३ ४२	४६ ४५ ८	४६ ५६ ३४	४७ ८ ००	४७ १८ ६	४७ २८ १२	४७ ३८ १८	४७ ४८ २४	४७ ५८ ३०	४८ ८ ३६	४८ १८ ४२	४८ २८ ४८	४८ ३८ ५४	४८ ४९ ००	४८ ५९ ६	४९ ९ २	४९ १९ १८	४९ २९ २४	४९ ३९ ३०	४९ ४९ ३६	४९ ५९ ४२	५० ९ ४८	५० १९ ५४	५० ३० ००	५० ४० ६
मकर ५।०१ २घ. १ मि.	५० ५० १२	५१ ०० १८	५१ १० २४	५१ २० ३०	५१ ३० ३६	५१ ४० ४२	५१ ५० ४८	५२ ०० ५४	५२ ११ ००	५२ १९ २२	५२ २७ ४४	५२ ३६ ६	५२ ४४ २८	५२ ५२ ५०	५३ १ १२	५३ ९ ३४	५३ १७ ५६	५३ ०६ १८	५३ ३४ ४०	५३ ४३ २	५३ ५१ २४	५३ ५९ ४८	५४ ८ ७	५४ १६ ३७	५४ २४ ५२	५४ ३३ १४	५४ ४१ ३६	५४ ४९ ५८	५४ ५८ २०	५५ ६ ४२
कुम्भ ४।११ १घ. ४० मि.	५५ १५ ४	५५ २३ २६	५५ ३१ ४८	५५ ४० १०	५५ ४८ ३२	५५ ५६ ५४	५६ ५ १६	५६ १३ ३८	५६ २२ ००	५६ २९ १६	५६ ३६ ३२	५६ ४३ ४८	५६ ५१ ४	५६ ५८ २०	५७ ५ ३६	५७ १२ ५२	५७ २० १८	५७ २ २४	५७ ३४ ४०	५७ ४१ ५६	५७ ४९ १२	५७ ५६ २८	५८ ३ ४४	५८ ११ ००	५८ १८ १६	५८ २५ ३२	५८ ३२ ४८	५८ ४० ४	५८ ४७ २०	५८ ५४ ३६
मीन ३।१८ १घ. ३७ मि.	५९ १ ५२	५९ ९ ८	५९ १६ २४	५९ २३ ४०	५९ ३० ५६	५९ ३८ १२	५९ ४५ २८	५९ ५२ ४४	०० ०० ००	०० ७ १६	०० १४ ३२	०० २१ ४८	०० २९ ४	०० ३६ २०	०० ४३ ३६	०० ५० ५२	०० ५८ ८	१ ५ २४	१ १२ ४०	१ १९ ५६	१ २७ १२	१ ३४ २८	१ ४१ ४४	१ ४९ ००	१ ५६ १०	२ ३ ३२	२ १० ४८	२ १८ ४	२ २५ २०	२ ३२ ३६

महामृत्युञ्जय-मन्त्र—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ ।

लघुमृत्युञ्जय मन्त्र—ॐ जूं सः ।

ध्यानम्—चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत् सुदीप्तममलं हास्यास्यपङ्केरुहम् । सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् ।

षष्ठ्यधिकत्वाद्वर्षाविशतययनांशे मिथिलायां प्रथमलग्नसारिणी । लग्नानयनार्थपद्यम् ।।
इष्टार्करात्र्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं च ।। यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलाऽनुपातात् ।

गोचरी ग्रहक विचार—जन्मराशिसँ वा नाम राशिसँ, सूर्य, मंगल-शनि तथा राहु १।२।४।५।७।८।९।१०।१२ स्थानमे हो तँ अशुभ । १०म सूर्य अशुभ नहि होइछ । केतुक फल राहुक समान । चन्द्र—४।६।८।१२ अशुभ ।

बुध—१।३।५।७।९।१२ अशुभ । वृ. १।३।४।६।८।१०।१२ । शुक्र ६।७।८।१० अशुभ । उपर्युक्त लिखित फल साधारण थिक । विशेष फलाफल जन्म कुण्डलीक आधारपर मिलैछ । धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः । धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ।।

बेलान्तर सारिणी

ता.	ज.	फ.	मा.	अ.	म.	जू.	जु.	अ.	सि.	अ.	न.	दि.
१	०४	१४	१२	४	३	२	४	६	+	१०	१६	११
२	४	१४	१२	४	३	२	४	६	×	११	१६	१०
३	५	१४	१२	३	३	२	२	६	१	११	१६	१०
४	५	१४	१२	३	३	२	४	६	१	११	१६	१०
५	६	१४	१२	३	४	२	४	६	१	१२	१६	९
६	६	११	११	२	४	२	४	६	२	१२	१६	९
७	७	१४	११	२	४	१	५	६	२	१२	१६	८
८	७	१४	११	२	४	१	५	५	२	१२	१६	८
९	७	१४	११	२	४	१	५	५	३	१३	१५	७
१०	८	१४	१०	१	४	१	५	५	३	१३	१६	७
११	८	१४	१०	१	४	१	५	५	३	१३	१६	६
१२	९	१४	१०	१	४	×	५	५	४	१४	१६	६
१३	९	१४	१०	×	४	×	५	५	४	१४	१६	६
१४	९	१४	९	×	४	×	६	४	५	१४	१५	५
१५	१०	१४	९	×	४	×	६	४	५	१४	१५	५
१६	१०	१४	९	+	४	०	६	४	५	१४	१५	४

बेलान्तर सारिणी

ता.	ज.	फ.	मा.	अ.	म.	जू.	जु.	अ.	सि.	अ.	न.	दि.
१७	०१०	१४	८	+१	४	०१	६	४	+६	१५	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	१	६	४	६	१५	१५	३
१९	११	१४	८	१	४	१	६	३	६	१५	१४	३
२०	११	१४	८	१	४	१	६	३	७	१५	१४	२
२१	१२	१४	७	१	४	२	६	३	७	१५	१४	२
२२	१२	१४	७	२	४	२	६	३	७	१५	१४	१
२३	१२	१४	७	२	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२४	१२	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	×
२५	१३	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	×
२६	१३	१३	६	२	३	३	६	२	९	१६	१२	०१
२७	१३	१३	५	२	३	३	६	१	९	१६	१२	१
२८	१३	१३	५	३	३	३	६	२	९	१६	१२	२
२९	१३	१२	५	३	३	३	६	२	१०	१६	११	२
३०	१४	×	४	३	३	३	६	×	१०	१६	११	०३
३१	१४	×	४	×	३	×	६	×	×	१६	×	३

स्टैंडर्ड टाइमसँ लोकल टाइम बनएबाक विधि—प्रायः सम्पूर्ण भारतमे स्टैण्डर्ड टाइम एके अछि, एहिमे सर्वत्र एकहि साथ १२ बजैत अछि। किंतु धूप घड़ीक समय प्रत्येक स्थानक भिन्न-भिन्न होइछ। अन्तरक निवारणार्थं दूटा संस्कार देशान्तर तथा बेलान्तरक आवश्यक होइछ। स्टैण्डर्ड टाइममे मिथिला (दरभंगा) के हेतु ११ मि. ४८ से. सर्वदा जोड़ी—ई रेखांशान्तर (देशान्तर) अछि। कोष्ठ मे ० चिह्नसँ लगातार ऋण+चिह्नसँ लगातार धनक शेष मिनट रूपक बेलान्तर अछि। पटनाक हेतु १०।५२ युक्त करी।

मुजफ्फरपुर—१२।२४, जमशेदपुर—१४।४०, जयनगर—१३।३६, मुंगेर—१२।०, गया हेतु—१०।०।

बालकमरणाशौचविचारः

ब्राह्मणबाले सप्तमासात् प्राक्मृते ब्राह्मणानां सद्यश्शौचम्, केशनखच्छेदनं स्नानञ्च। सप्तममासमारभ्य जन्मतो द्वितीयवर्षपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम् उभयत्र भूमिखननं श्मश्रुआदिच्छेदनञ्च। तदूर्ध्वं षड्वर्षं यावत्त्रिरात्रम्, तत्र दाहं कृत्वा पिण्डदानं द्वितीयदिनेऽस्थिसञ्चयनं तदसम्भवे तृतीयदिने पिण्डदानमस्थिसञ्चयनं नखकेशच्छेदनञ्च चतुर्थदिने ब्राह्मणभोजनमिति। षड्वर्षानन्तरं वयस्कानां ब्राह्मणादीनां सम्पूर्णाशौचमिति।

क्षत्रियाणां सप्तमासपर्यन्तं सद्यः अनन्तरं २ वर्षपर्यन्तं द्व्यहम्। तदूर्ध्वं ६ वर्षपर्यन्तं ६ दिनमशौचम्। वैश्यानां ७ मासपर्यन्तं सद्यः, अनन्तरं २ वर्षपर्यन्तं त्र्यहं, ऊर्ध्वं ५ वर्षपर्यन्तं नवरात्रम्। षड्वर्षानन्तरं ब्राह्मणक्षत्रियविशां सम्पूर्णाशौचम्, एकादशाहादिक्रियाश्च। शूद्राणां ७ मासं यावत् सद्यः, अनन्तरं २ वर्षं यावत् पञ्चाहं भूमिखननञ्च। तदूर्ध्वं षोडशवर्षपर्यन्तं अविवाहिते मृते १२ दिनम्, अनन्तरं मासमशौचं श्राद्धादिक्रियाश्च। पञ्चवर्षानन्तरं १६ वर्षं अभ्यन्तरे च विवाहिते मृते मासमशौचं श्राद्धादिक्रियाश्च।

जन्मतो द्वितीयवर्षपर्यन्तं कन्यामरणे सर्ववर्णानां सद्यश्शौचम्। द्वितीय वर्षादूर्ध्वं तुभ्यमेषा कन्या दातव्या इति वाक्प्रयोगपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम् तादृशवाक्यप्रयोगानन्तरं विवाहपर्यन्तं पितृकुले पतिकुले च त्रिरात्रम्। यत्र वाग्दानं नास्ति तत्र द्वितीयवर्षानन्तरं विवाहपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम्।

दाहकर्तुस्तत्रापि त्रिरात्रमशौचमेव, 'दहित्वा च वहित्वा च त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्' इति वचनात्। असम्बन्धिद्विजान् दहित्वा वहित्वा च सद्यःशौचम्। सम्बन्धे सति त्रिरात्रमिति पैठीनसिवचनात्। (कृत्यसारसमुच्चये)

ग्रहाणां यजुर्वेदीयशान्तिमन्त्राः

अथ सूर्यस्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन्।

अथ चन्द्रस्य—ॐ इमं देवा असपत्नर्ठं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठं राजा।

अथ कुजस्य—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपार्ठं रेतार्ठंसि जिन्वति॥

अथ बुधस्य—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसर्ठं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

अथ गुरोः—ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

अथ शुक्रस्य—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं, विपानर्ठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

अथ शनेः—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो (६) भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

अथ राहोः—ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता॥

अथ केतोः—ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे, समुषद्भिरजायथाः॥

इति नवग्रहमन्त्राः। तान्त्रिक मन्त्र तथा शान्ति-द्रव्य-सामग्री आदि पृष्ठ ३८ मे देखू।

वास्तु (गृह) विचार

वास्तु (गृह) विचार—गृहारम्भ प्रवेश मुहूर्त लिखल अछि। गृह-निर्माणसँ पहिने भूमिपरीक्षा, आय एवं पृष्ठ विचार, शल्यशोधन, काकिणी विचार, वंश विचार, द्वार विचार, गृहकाष्ठ विचार, वहिचक्र विचार, अन्नदोषादि परीक्षा, गृह-समीप वृक्षजलाशयादि विचार आ पिण्ड आदि विचार परम आवश्यक। गृहकारक नाम राशिसँ वासक राशि २-५ ९-१०-११ म शुभ होइछ। स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥ किन्तु कश्यप, वशिष्ठ, नारद आदिक विचारसँ वासक काकिणीसँ गृहपक काकणी अधिक होयबाक चाही।

विशेष—गृहक नक्षत्र तथा गृहपतिक नक्षत्र एक्के नहि होएबाक चाही।

प्र० श्रावणकृष्णपक्षः। संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, अं० जुलाई १९८५ ई० । (७)

वर्षासु प्रबलो वायुस्तस्मान्निष्टादयस्त्रयः । रसाः सेव्याः विशेषेण पवनस्योपशान्तये । मधुराम्ल-लवणाः—पाकप्रकाशे ।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घ. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः मि. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मि. ल. घ. मि.	ने. गते	प्र. ता	
१	बु.	२६।४७	दि. ३।५५	पू. १४।५०	दि.११। ८	ए. २६। ५	कौ. २६।४७	म. २६।४०	१७।४६।५३	३४। २	५।१२	६।४८	६। २	१६	३	मन्वन्यशयनव्रतम् । गुरुवक्रशुद्धिः । शुक्रारम्भः ३०।५६ उ० ।
२	बृ.	२४।३१	,, ३।००	उ. १४।१०	,, १०।५२	वै. २१।४२	ग. २४।३१	मकर	१८।४३।४५	३४।००	५।१२	६।४८	५।५८	२०	४	पूर्वदिशि यात्रा दिवा घ. १० मि. ५२ उ० । भ. ५३।५८ उ० ।
३	शु.	२३।२५	,, २।३४	श्र. १४।४६	,, ११। ६	वि. १८।१६	वि. २३।२५	म. ३०।५४	१९।४०।३६	३३।५६	५।१२	६।४८	५।५४	२१	५	भ. २३।२५ या. । श्रीगणेश ४ व्रतम् । पञ्चकारम्भः (मदवा) १४।४६ उ० ।
४	श.	२३।३६	,, २।३८	ध. १६।३४	,, ११।४१	प्री. १५।५६	वा. २३।३६	कुम्भ	२०।३७।२७	३३।५८	५।१२	६।४८	५।५०	२२	६	पुनर्वसौ रविः १५।१ स्त्रीपुम्भयोर्योगः ।
५	र.	२५। ८	,, ३।१६	श. १९।४०	,, १। ५	आ. १४।३५	तै. २५। ८	कुम्भ	२१।३४।१८	३३।५७	५।१३	६।४७	५।४६	२३	७	वक्री बुधः ५६।५३ । मौना ५ पंचमी, श्रीमनसादेव्युत्थानम् ।
६	चं.	२७।४६	,, ४।१९	पू. २३।४१	,, २।४१	सौ. १४। ५	व. २७।४८	कु. ७।४१	२२।३१। ६	३३।५६	५।१३	६।४७	५।४२	२४	८	भ. २७।४६ उ. ५६।३८ या. ।
७	मं.	३१।३०	,, ५।४९	उ. २९। ८	,, ४।५२	शो. १४।३०	ब. ३१।३०	मीन	२३।२८।००	३३।५५	५।१३	६।४७	५।३८	२५	९	द. ति. ३१।३० उ० ।
८	बु.	३६। १	रा. ७।३०	रे. ३५।२२	रा. ७।१८	अ. १५।३७	बा. ००।४६	मी. ३५।१२	२४।२४।५१	३३।५४	५।१३	६।४७	५।३४	२६	१०	द. ति. ३६।१ या. । गं. २३।१२ उ० ३८।१२ या. । पञ्चकान्तः (मदवा) †
९	बृ.	४०।५८	,, ९।३६	अ. ४१।४२	,, ९।५५	सु. १७। ८	तै. ८।२६	मेष	२५।२१।४५	३३।५२	५।१४	६।४६	५।३०	२७	११	लतापादपादिरोनणम् । † ३५।१२ उ० ।
१०	शु.	४९।५८	,, १०। १	भ. ४८।१२	,, १२।३१	धृ. १८।४७	व. ११।२८	मेष	२६।१८।३६	३३।५०	५।१४	६।४६	५।२६	२८	१२	भ. ११।२८ उ. ४१।५८ या. ।
११	श.	५०।३७	,, १।२९	कृ. ५४।१८	,, २।५७	शू. २०।१९	व. १६।१७	मे. ४।४४	२७।१५।३३	३३।४८	५।१४	६।४६	५।२२	२९	१३	कामदाएकादशीव्रतं सर्वेषाम् । ‡ रजनी प्रारम्भः । चतुर्दशीव्रतम् ।
१२	र.	५४।३०	,, ३। ६	रो. ५९।४१	,, ५। ७	गं. २१।२०	कौ. २२।३३	वृष	२८।१२।२७	३३।४७	५।१५	६।४५	५।१८	३०	१४	पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा रात्रौ घं ३ मि. ३ उ. ।
१३	चं.	५७।१७	,, ४।१०	मृ. ६०।००	अहोरात्र	वृ. २१।४३	ग. २५।५४	वृ. ३१।५३	२९। ९।२१	३३।४६	५।१५	६।४५	५।१४	३१	१५	भ. ५७।१७ उ. । प्रदोषव्रतोपवासोव्रतम् । मासान्तः ।
१४	मं.	५९। २	,, ४।५२	मृ. ४। ५	दि. ६।५३	ध्रु. २१।११	वि. २८। ९	मिथुन	०। ६।१५	३३।४५	५।१५	६।४५	५।१०	१	१६	भ. २८।६ या. । पुन. ४ च. कर्के रविः ४०।२५ । मृ. १५ फलं महर्घम् । याम्यायनसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा *
३०	बु.	५९।२५	,, ५। १	आ. ७।१९	,, ८।११	व्या. १९।४४	च. २९।१३	मि. ५३।४५	१। ३। ६	३३।४४	५।१५	६।४५	क.७।३२	२	१७	श्रावणी अमा. ३० । पार्वणम् । मन्वादिः । मलमासारम्भः ५६।२५ उ. । *घं. १२ उ. । दैत्यानां दिनं देवानां ‡

प्र. श्रा. कृ. १ बु. मि. का. ४७। १		
र.	२।१७।४६।५३	५६।५०
मं.	२।२९।३८।२०	४०।१९
बु.	३।११।३६।४६	४०।४१
बृ.	६।२४। ६।१६	५।३२
शु.	१। ४। ५।५१	५४।५८
श.	६।२७। २।५२	२। १
के.	६।२३।५४।५८	३।११
रा.	०।२३।५४।५८	३।११
प.	२२।१७।३६	—

प्र. श्रा. कृ. ८ बु. मि. का. ४६।५७		
र.	२।२४।२४।५१	५६।५२
मं.	२।२६।१६।१०	४०।१९
बु.	३।१९।४०।४१	२८।२७
बृ.	६।२३।२३।३१	६।२५
शु.	१।११।४७।१९	६।११
श.	६।२६।४५।५९	२।१०
के.	६।२३।३२।४१	३।११
रा.	०।२३।३२।४१	३।११
प.	२२।१७।३१	—

प्र. श्रा. कृ. ३० बु. मि. का. ४६।५३		
र.	३। १। ३। ६	५६।५६
मं.	३।००।४४।५३	३९।२८
बु.	३।२४।४९। १	२४।११
बृ.	६।२२।३५। १	७।१६
शु.	१।१९।३३।५५	६७।३३
श.	६।२६।३६। ५	१। ६
के.	६।२३।१०।२७	३।११
रा.	०।२३।१०।२७	३।११
प.	२२।१७।३८	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिममे)

सौम्यायन-याम्यायन, सौम्यगोल, ग्रीष्म वर्षा ऋतु । शुद्ध समय । बृ. श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, मं. पश्चिमास्त बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि सामान्यतया वर्षाक योग नीक । समय सुहावन ।

विशेष-कथन—"सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः । तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाः" ॥ "तपनस्य सुता गङ्गा गोमती च सरिद्वरा । रजसा च न दुष्यन्ति..." ॥ "उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रेतस्नाने तथैव च । चन्द्रसूर्यग्रहे चैव रजो दोषो न विद्यते ।" नदीतीरवासिनान्तु रजोयोगेऽपि सर्वदा नदीस्नाने दोषाभावमाह नियमः—"न दुष्येत्तीरवासिनाम्" । मौना पञ्चमीमे सर्पक माता मनसा देवी (बिसहरा) क पूजन कर्त्तव्य । मनसा देवीक पूजा कएलासं सर्पक भय दूर होइछ । मड़रे आदि मूलक (माण्डर ब्राह्मण) किछु ब्राह्मण तथा शूद्रकें छोड़ि सभक हेतु इएह पंचमी होइत अछि । नागपूजाक हेतु वर्षाऋतु उपयुक्त समय, कारण जे एही ऋतुमे सर्पकें बाहर होएबाक समय होइछ । शीतकालमे तऽ सर्प बहारे नहि होइछ, प्रायः धर्ममे बहराइछ आ वर्षामे तऽ बिवर (बिएरि) मे जल प्रवेशक कारण विवश भऽ बाहर होबहि पड़ैत छैक । एहि हेतु प्रत्यक्ष नागपूजाक इएह समय उचित, एहि समयमे कतहु ने कतहु धोकर दर्शन भइए जाइछ । सर्पपूजन सदासं प्रचलित अछि—"नमोऽस्तु सर्पेभ्यः०—एहि वैदिक मन्त्रसं ज्ञात होइछ जे ई हो संस्कृति अछि ।

शु. | र. मं. | रा. | बु. | चं. बृ. | श. के.

संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, ई० जुलाई १९८५ ई० । "निषेध नहि

प्र० श्रावणशुक्लपक्षः । "स्नानं कृत्वा तु यत्किञ्चित् पुष्पं चिन्वन्ति वै द्विजाः । देवतास्तन्न गृह्णन्ति भस्मी भवति दारवत्"—प्रातःस्नायीकहेतु"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः कर्क-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	च. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	
१	बु.	५८।१९	रा. ४।४०	पु. ६।१६	दि. ८।५८	ह. १७।१९	कि. २८।५७	कर्क	२।००। ८	३३।४२	५।१६	६।४४	७।२८	३	१८	पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
२	शु.	५६।३१	,, ३।४८	पु. ९।५७	,, ९।१५	व. १३।४६	बा. २७।२५	कर्क	२।५७। ७	३३।४१	५।१६	६।४४	७।२४	४	१९	चन्द्रदर्शनम् । गं. ५९।२७ उ. ।
३	श.	५३।१०	,, २।३२	श्ले. १०।२७	,, ९।२७	सि. ९।१९	तै. २४।४५	क. १०।२७	३।५४। ६	३३।४०	५।१६	६।४४	७।२०	५	२०	गं. ४०।२७ या. । पुष्ये रविः ११।१० स्त्रियोर्योगः । वक्री बुधः ३३।५७ ।
४	र.	४९। ३	,, १२।५३	म. ७।५४	,, ८।२६	व्य. ४। ४	व. २१। १	सिंह	४।५१। ५	३३।३९	५।१६	६।४४	७।१६	६	२१	वरीयान्क्षयः दं. ५४।१ । भ. २१।६ उ. ४९।३ या. ।
५	चं.	४४। ६	,, १०।५४	पू. ५।३३	,, ७।२९	प. ५१।२७	ब. १६।११	सि. १९।४५	५।४८। ४	३३।३८	५।१६	६।४४	७।१२	७	२२	द. ति. ४४।६ उ. ।
६	मं.	३८।११	,, ८।४१	उ. २।२३	प्रा. ६।१४	शि. ४७।२०	कौ. १२।१९	कन्या	६।४५। २	३३।३७	५।१७	६।४३	७। ८	८	२३	हस्तक्षयः दं. ५९।१८ । द.-ति. ३८।३१ या. । मार्गी शनिः ४९।४७ ।
७	बु.	३२।१४	दि. ६।१८	चि. ५४।३८	रा. ३। ८	सि. ३६।५५	ग. ५।१२	क. २६।४५	७।४२।००	३३।३६	५।१७	६।४३	७। ४	९	२४	पश्चिमास्तो बुधः ५।४९ ।
८	बृ.	२६।३३	,, ३।५१	स्वा. ५५।२३	,, १।२७	सा. २९।१४	व. २६।२३	तुला	८।३९। ६	३३।३२	५।१८	६।४२	७। ०	१०	२५	पश्चिमदिशि यात्रा ।
९	शु.	२०। ७	,, १।२१	वि. ४६।१६	,, ११।४८	शु. २१।३६	कौ. २०। ७	तुला	९।३६।१२	३३।२९	५।१८	६।४२	६।५६	११	२६	लतापादपादिरोपणम् ।
१०	श.	१४। ७	,, १०।५७	अ. ४२।२६	,, १०।१७	शु. १४। ३	ग. १४। ७	वृश्चिक	१०।३३। ८	३३।२६	५।१९	६।४१	६।५२	१२	२७	पुत्रिकास्थापनम् । लतापादपादिरोपणम् ।
११	र.	८।१०	,, ८।४३	ज्ये. ३९। ३	,, ८।५६	ब्र. ९।४९	वि. ८।३०	वृ. ३९। ३	११।३०।२३	३३।२३	५।१९	६।४१	६।४८	१३	२८	पवित्रा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । गं. ३३।३ उ. ४८।३ या. ।
१२	चं.	३।३१	प्रा. ६।४१	मू. ३९।२०	,, ७।५२	ऐ. ००। ३	बा. ३।२३	धनु	१२।२७।२८	३३।२०	५।२०	६।४०	६।४४	१४	२९	त्रयोदशीक्षयः दं. ५५।४३ । चतुर्दशीक्षयः दं. ५३।५४ । [illegible] ।
१४	मं.	५५।३६	रा. ३।३५	पू. ३४।२८	,, ७। ८	वि. ४८।३२	ग. २५।५५	ध. ४९।१४	१३।२४।३३	३३।१७	५।२१	६।३९	६।४०	१५	३०	म. ५५।३६ उ. । चतुर्दशी १४ व्रतम् ।
१५	बु.	५३।१४	,, २।३९	उ. ३३।३४	,, ६।४७	प्री. ४३।५७	वि. २४।२५	मकर	१४।२१।३८	३३।१४	५।२१	६।३९	६।३६	१६	३१	म. २४।२५ या. । प्रथमश्रावणी-पूर्णिमा-१५ । क्षेत्रस्नानम् । पूर्वदिशि यात्रा सायं घं. ६ मि. ४७ उ. ।

प्र. श्रा. शु. ७ बु. मि. मा. ४६।४८

र.	३। ७।४२।००	५७। २
मं.	३। ५।२५।४०	३९।४१
बु.	३।२४।४८। ४	२४।५८
बृ.	९।२१।४१। ८	७।२६
शु.	१।२७।२९।१०	६७।४९
श.	६।२६।३२।२०	००। ९
के.	६।२२।४८।१२	३।११
रा.	०।२२।४८।१२	३।११
ल.	२२।१७।३२	—

प्र.श्रा.शु.१५ बु. मि. मा. ४६।३७

र.	३।१४।२१।३८	५७।१०
मं.	३। ९।५८।५१	३९।४१
बु.	३।२०।१९।४७	११।२८
बृ.	९।२०।४६।११	७।२६
शु.	२। ५।२९।४१	६७।४९
श.	६।२६।३३।२३	०। ७
के.	६।२२।२५।५७	३।११
रा.	०।२२।२५।५७	३।११
ल.	२२।१७।४०	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिममे)

याम्यायन, सौम्यगोल, वर्षा ऋतु, अशुद्ध समय । बु. श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, ता. २० के बु. वक्री, ता. २१ के श. मार्गी, मं. बु पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—यत्रतत्र वर्षाक योग नीक । वायुक प्रकोप । मौसम प्रिय ।

विशेष कथन—मलमासे कर्त्तव्याकर्त्तव्ये—नित्यनैमित्तिके कुर्यात् प्रयतः सन् मलिम्लुचे । तीर्थस्नानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च । गर्भे वार्धुषिकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु । सपिण्डीकरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः । नित्यं—सन्ध्यावन्दनादिः, नैमित्तिकं—ग्रहणशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं—द्वितीयावृत्ति, गजच्छाया—रविचन्द्रग्रहणनिमित्तकश्राद्धम्, प्रेतस्नानं—मरणनिमित्तकस्नानम्, गर्भे—गर्भाधान-निमित्तककर्मणि, वार्धुषिकृत्ये—ऋणादौ, मृतानां पिण्डकर्मसु—पूरकादिपिण्डेषु एकादशाहश्राद्धादौ च न अधिमासं विदुरिति । उपर्युक्तकार्यं मलमासहुमे कएलजाइछ—बृहस्पतिः । मलमास व्रतक विशेष व्यवस्था अछि—अधिमासे तु सम्प्राप्ते गुडसर्पिर्युतानि च । त्रयस्त्रिंशदपूपानि दातव्यानि दिने-दिने । साज्यानि गुडमिश्राणि अधिमासे नृपोत्तम । अधिमासे तु सम्प्राप्ते त्रयस्त्रिंशत्तु देवताः । उद्दिश्यापूपदानेन पृथ्वीदानफलं लभेत् ॥

द्वि० श्रावणकृष्णपक्षः ।

बेलपत्र तोड़बाक मन्त्र—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शङ्करस्य सदाप्रिय । [illegible] शिवपूजार्थं बिल्वपत्रं चिनोम्यहम् ॥

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः कर्क-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	ल. स. घं. मि.	मे. गते	अं. तां.	
१	बृ.	५२। ४	रा. २।१२	श्र. ३३।५१	रा. ६।५४	पा. ४०।२०	बा. २२।३९	मकर	१५।१८।५२	३३।१०	५।२२	६।३८	६।३२	१७	१	पञ्चकारम्भः (भदवा) रात्री म. ६।५४ उ० । अगस्त ८ ।
२	शु.	५२।१०	,, ३।१५	ध. ३५।२१	,, ७।३१	सौ. ३७।४३	तै. २२। ७	म. ४। ३६	१६।१६। ६	३३। ७	५।२३	६।३७	६।२८	१८	२	नृपदर्शनदिनम् ।
३	श.	५३।३९	,, २।५१	श. ३८। ७	,, ८।३८	शो. ३६। ५	व. २२।५४	कुम्भ	१७।१३।१९	३३। ४	५।२३	६।३७	६।२४	१९	३	भ. २२।५४ उ. ५३।३९ या. । श्लेषायां रविः११।५० स्त्री पुम्भयोर्योगः ।
४	र.	५५।१०	,, ३।५२	पू. ४२। २	,, १०।१३	अ. ३५।३५	व. २४।५४	कु. २६। ३	१८।१०।३२	३३। १	५।२४	६।३६	६।२०	२०	४	श्रीगणेशचतुर्थी व्रतम् ।
५	चं.	५९।५२	,, ५।२१	उ. ४७। ७	,, १२।१५	सु. ३५।३९	कौ. २८। १	मीन	१९। ७।४५	३२।५८	५।२४	६।३५	६।१६	२१	५	द. ति. ५९।५२ उ. ।
६	मं.	६०।००	,, अहोरात्र	रे. ५३।००	,, २।३७	धृ. ३६।३५	ग. ३२। ८	मी. ५३।००	२०। ४।५८	३२।५५	५।२५	६।३५	६।१२	२२	६	द. ति. ६०।०० या. । भ. ४१।०० उ., ५६।०० या. । पञ्चकान्तः (भदवा) ५३।०० उ. ।
६	बु.	४।२१	प्रा. ७।१०	अ. ५९।२३	,, ५।११	शू. ३८।००	व. ४ ।२१	मेष	२१। २।११	३२।५२	५।२६	६।३४	६। ८	२३	७	भ. ४।२१ उ. ३६।५१ या. । द. ति. ४।२१ या. ।
७	बृ.	९।२२	दि. ९।११	भ. ६०।००	,, अहोरात्र	गं. ३९।३८	व. ९ ।२२	मेष	२१।५९।३४	३२।५०	५।२६	६।३४	६। ४	२४	८	पूर्वोदितो बुधः १४।२६ ।
८	शु.	१४।२४	,, ११।१२	भ. ५। ६	दि. ७।२८	वृ. ४१।११	कौ. १४।२४	मे. २१।५१	२२।५६।५७	३२।४८	५।२६	६।३४	६। ०	२५	९	शस्त्रनिर्माणदिनम् ।
९	श.	१९। ५	,, १। ५	कृ. २२। ८	,, १०।१८	ध्रु. ४२।१९	ग. १९। ५	वृष	२३।५४।२०	३२।४६	५।२७	६।३३	५।५६	२६	१०	भ. ५१।३ उ. दक्षिणदिशि यात्रा दिवा घं. १० मिनट १८ उ., दिवा घं. १ मि. ५ या. ।
१०	र.	२३। २	,, २।५०	रो. १७।४१	,, १२।३१	व्या. ४२।४६	वि. २३। २	वृ. ५०।००	२४।५१।४३	३२।४४	५।२७	६।३३	५।५२	२७	११	भ. २३।२ या. । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा दशम्यामेव ।
११	चं.	२६।००	,, ३।५२	मृ. २२।२०	,, २।२४	ह. ४२।२०	बा. २६।००	मिथुन	२५।४९। ६	३२।४२	५।२८	६।३२	५।४८	२८	१२	मार्गीबुधः ४५।१६ । परमा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पश्चिमदक्षिणयोर्यात्रा
१२	मं.	२७।५१	,, ४।३६	आ. २५।५०	,, ३।४८	व. ४१। १	तै. २७।५१	मिथुन	२६।४६।२९	३२।४०	५।२८	६।३२	५।४४	२९	१३	दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा दि. घं. १ मि. ४८ उ० । प्रदोषव्रतम्
१३	बु.	२८।२०	,, ४।४८	पु. २८। ४	,, ४।४२	सि. ३८।४७	व. २८।२०	मि. १२।५१	२७।४३।५२	३२।३८	५।२८	६।३२	५।४०	३०	१४	भ. २८।२० उ. ५७।५६ या. । चतुर्दशीव्रतम् ।
१४	बृ.	२७।३२	,, ४।३०	पु. २९।००	,, ५। ५	व्य. ३५।३०	श. २७।३२	कर्क	२८।४१।२७	३२।३४	५।२९	६।३१	५।३६	३१	१५	सतापावपादिरोपणम् । स्वतन्त्रता दिवसः ।
३०	शु.	२५।३१	,, ३।४१	श्ले. २८।४५	,, ५।००	व. २१।१२	ना. २५।३१	क. २०।४५	२६।३९।२	३२।३०	५।३०	६।३०	५।२२	३२	१६	द्वितीय श्रावणी-अमा-३० । मलमासान्तः २५।३१ उ. । भं. १७।४५ उ. ३२।४५ या. ।

द्वि.श्रा.कृ. ६ बु. मि.श्रा. ४६।२६

र.	३।२१।२ ।११	५७।१७
मं.	३।१४।३०।४१	३८।४९
बु.	३।१५।१५।५२	२५।२१
बृ.	९।१९।४८।००	८।१९
शु.	२।१३।३४।३७	७०। ९
श.	६।२६।२९।४७	१।४६
के.	६।२२।३ ।४२	३।११
रा.	०।२२।३ ।४२	३।११
प.	२२।१७।४१	—

द्वि.श्रा.कृ. १३ बु. मि.श्रा. ४५।१९

र.	१।२७।४१।५२	५७।२८
मं.	३।१९।१९।२८	३८।४९
बु.	३।१४।४१ १	२१। ६
बृ.	९।१८।५१।१९	८।१९
शु.	२।२१।४१।४२	७०।४८
श.	६।२६।२०।५१	१।४६
के.	६।२१।४१।२७	३।११
रा.	०।२१।४१।२७	३।११
प.	२२।१४।४२	—

आकाशक बात— (काल—परिचमने)

गरम्यायन-सौम्यगोल, वर्षा ऋतु, अशुद्ध समय । बृ. बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, मं. बु. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. ८ के बु. पूर्वोदित, ता. १२ के बुध मार्गी ।

कौशल—पञ्चहरि वर्षाक योग नीक अछि, समय सुखद रहत ।

विशेष कथन—पञ्चोपचार पूजा—गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचारः कथितः देवानां प्रीतिहेतवे ॥ पञ्चगव्यम्—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥ पञ्चामृतम्—शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम् । पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते ॥ सन्तानार्थं सन्तानगोपाल मन्त्र—ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ शनि प्रार्थना मन्त्र—पिप्पलाद उवाच । नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते कालकायवे । नमस्ते यमसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः ।— ई मन्त्र प्रतिदिन पाठ कयलासँ शनिक प्रकोप अल्प होइछ । मलमास मे विशेष यात्रा निषेध थिक । मलमासमे राजगृह (राजगीर) अयबाक परम्परा अछि । एहिमासमे गैरिका नदीमे स्नान विहित अछि । मिथिला माहात्म्यक अनुसार ई नदी जनकपुरधामसँ पश्चिम दू कोस पर अछि । मलमासमे अनेको कार्य निषिद्ध अछि, तदर्थं शास्त्र द्रष्टव्य । अमावास्यामे मलमासक अन्त होयत ।

बृ.
चं. रा.
र. मं. बु.
शु.
श. के.

द्वितीय श्रावणशुक्लपक्षः । संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, अं० अगस्त–१९८५ ई० । *बृमिष्ठं च नवोदकम् । श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधि भाद्रपदे त्यजेत् । प्रजा नाशो महिष्यश्च ब्राह्मणी च प्रसूतिका । दशरात्रेण शुध्यन्ति*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.	घं० मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः कर्क-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कर्क. ल. घ. मि.	ने. गते	अं. ता.	
१	श.	१६।२६	दि. १।१८	म.	२७।२३	दि. ४।२६	प. २६। ४	ब. १६।२६	सिंह	००।३६।३७	३२।२६	५।३२	६।२८	५।२८	१	१७	चन्द्रदर्शनम् । मघायां सिंहे रविः ८।२९ मु. ३० कर्न साम्यम् । विष्णुपदीसंक्रान्तेः पुण्यकालः दं. १७।१०या०* *कुतपुमान्तः ।
२	र.	१८।२४	,, १२।२४	पू.	२५।१६	,, ३।३८	शि. २०। ६	कौ. १८।२४	सि. २६।३०	१।३४।१२	३२।२२	५।१२	६।२८	सि. ७।५१	२	१८	मासादिः ।
३	चं.	१३।३३	,, १०।५८	उ.	२२।१३	,, २।२६	सि. ११।३७	ग. १३।३३	कन्या	२।३१।४७	३२।१८	५।३३	६।२७	७।४७	३	१९	म. ४०।४८ उ. । मधुश्रावणीव्रतम् । मन्थियंतमेला ।
४	मं.	८। ४	,, ८।४७	ह.	१८।३८	,, १।००	सा. ६।२९	वि. ८। ४	क. २७।५९	३।२९।२२	३२।१४	५।३३	६।२७	७।४३	४	२०	शुभयोगक्षयः दं. ५२।३१ । म. ८।४ या. । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा ।
५	बु.	२। ६	प्रा. ६।२६	चि.	१४।३६	,, ११।२४	शु. ५१।१०	बा. २। ६	तुला	४।२६।५७	३२।१०	५।३४	६।२६	७।३९	५	२१	षष्ठीक्षयः दं. ५३।५३। नाग ५ पंचमी । कुलिकनामनागराजः सितवर्णः ।
७	बृ.	४९।५०	रा. १।३१	स्वा.	१०।२५	,, ६।४५	ब्र. ४३।३३	ग. २२।५६	तु. ५२।१६	५।२४।४५	३२। ६	५।३५	६।२५	७।३५	६	२२	म. ४६।५० उ. । पश्चिमदिशि यात्रा ।
८	शु.	४३।४०	,, ११। ४	वि.	६।१५	,, ८। ६	ऐ. ३५।५६	वि. १६।४५	वृश्चिक	६।२२।३३	३२। २	५।३६	६।२४	७।३१	७	२३	म. १६।४५ या. ।
९	श.	३८।१२	,, ८।५३	अ.	२।१८	प्रा. ६।२१	वै. २८।३६	बा. १०।५६	वृ. ५८।३४	७।२०।२१	३१।५८	५।३६	६।२४	७।२७	८	२४	ज्येष्ठाक्षयः दं. ५६।२६। द. ति. ३८।१२ उ. । गं. ५२।४४ उ० । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा रात्रौ घं. ८ मि. ५३ या. ।
१०	र.	३३। ३	सं. ६।५०	मू.	५५।४९	रा. ३।५७	वि. २१।३९	तै. ५।३७	धनु	८।१८। ९	३१।५५	५।३७	६।२३	७।२३	९	२५	द. ति. ३३।३ या. । गं. ७।४४ या. ।
११	चं.	२८।४६	दि. ५। ८	पू.	५३।४८	,, ३। ९	प्री. १५।३१	ब. ००।५४	धनु	९।१५।५७	३१।५२	५।३८	६।२२	७।१९	१०	२६	म. ००।५४ उ. २८।४६ या. । पुत्रदा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । उत्तरदिशि यात्रा मध्यमा ।
१२	मं.	२५।१७	,, ३।४५	उ.	५२।३७	,, २।४१	आ. ९।४२	बा. २५।१७	म. ८।३०	१०।१३।४५	३१।४९	५।३८	६।२२	७।१५	११	२७	श्रीधर १२ दूर्वादलेन पारणा । प्रदोषव्रतम् । दक्षिणदिशि यात्रा रात्रौ घं. २ मि: ४१ उ. । सूतीस्नानम् ।
१३	बु.	२२।५२	,, २।४८	श्र.	५२।३४		५।४१	सौ. ४।५३	तै. २२।५२	मकर	११।११।३२	३१।४६	५।३९	६।२१	७।११	१२	२८	चतुर्दशी १४ व्रतम् । यज्ञोपवीतधारणम्: (भदवा) ५२।३४ उ. ।
१४	बृ.	२१।४१	,, २।२०	ध.	५३।४२	,, ३। ९	शो. ००।५७	ब. २१।४१	म. २३। ८	१२। ९।२२	३१।४२	५।४०	६।२०	७। ७	१३	२९	अतिगण्डक्षयः दं. ५७।५ म. २१।४१ उ. ५१।४२ या. । *५८।५३ स्त्रीपुंसयोर्योगः ।
१५	शु.	२१।४४	,, २।२२	श.	५६।१०	,, ४। ८	सु. ५६। ६	ब. २१।४४	कुम्भ	१३।७।१२	३१।३८	५।४०	६।२०	७। ३	१४	३०	द्वितीयश्रावणी-पूर्णिमा । १५ । क्षौरस्नानम् । रक्षाबन्धनम् । वाजसनेयिनामृषितर्पणम् पूर्वफल्गुन्यां रविः*

द्वि. श्रा. शु. ५ बु. मि. श्रा. ४९। ५		
र.	४। ४।२६।५७	५७।४०
मं.	३।२३।३०।१४	३९।२२
बु.	३।१८।५९।५७	५३।५९
बृ.	९।१७।५७। १	७।२९
शु.	२।२९।५७।१७	१७।४८
श.	६।२७। ४।४०	२।४५
के.	६।२१।१९।१२	३।११
रा.	०।२१।१९।१२	३।११
श.	२२।१७।४१	—

द्वि. श्रा. शु. १३ बु. मि. श्रा. ४५।५३		
र.	४।११।११।३२	५७।५५
मं.	३।२७।४७।११	३८।३०
बु.	३।२६।५०।३४	८१।४४
बृ.	९।१७। ६। ७	६।३२
शु.	३। ८।१९।३०	७०।४८
श.	६।२७।२८।४१	३।४३
के.	६।२०।५६।५७	३।११
रा.	०।२०।५६।५७	३।११
श.	२२।१७।४४	—

आवश्यक बात— **(काल–उत्तरवे)**

याम्यायन-सौम्यगोल, वर्षा ऋतु, अशुद्ध समय । बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, मं. पश्चिमास्त, शेषग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि वर्षाक योग नीक । कतहु खण्ड वृष्टिक योग सेहो अछि, मौसम अनुकूल रहत ।

विशेष कथन—मधुश्रावणीमे सौभाग्यवृद्धिक हेतु सधवा स्त्री विशेषतः नव विवाहिता स्त्रीलोकनिसँ श्रीगौरीक पूजन कर्त्तव्य । नागपंचमी दिन तिक्त तथा अम्लरस खएबाक विधान सेहो अछि । श्रा. शु. सप्तमीमे मेघाडम्बर रहए तऽ आगू नीक वर्षा होइछ, शुक्लपक्षक पंचमीमे दक्षिण वा पश्चिम बसात बहए तऽ दुर्भिक्ष होइछ । रक्षाबन्धनक मन्त्र—"येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षे, माचल मा चल" । "भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा । श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ।" देशक मुख्य चारि पावनि—रक्षाबन्धन (राखी), विजयादशमी, दीपावली, होलिकोत्सव, क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रसँ सम्बन्धित अछि, तथापि सभ पावनिमे सभक समाने समादर होइछ, कारण जे संगठित समाजक कोनो अंगक कार्य समग्र समाजहिक कार्य मानल जाइछ । कहल जाइछ जे बृहस्पति द्वारा श्रावणीमे एहि रक्षा-सूत्र धारण कएलाक बादे इन्द्र, महाबली दानवराजके वध कैलन्हि । रक्षाबन्धनक प्रभावसँ आयु-आरोग्यक वृद्धि होइछ । श्रावणी (पूर्णिमा) और श्रवणा (नक्षत्र) जाहि श्रवणाक पति विष्णु मानल जाइत छथि जे सर्वजगतक पालक छथि, हुनक अतिरिक्त आयु-आरोग्य देनिहार के भएसकैछ? श्रावणी-श्रवणाक योग श्रावणेटामे होइछ ।

बृ. | रा. | मं. बु. | शु. | र. | चं. श. के.

भाद्रकृष्णपक्षः । संवत्, २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, ई० अगस्त-सितं० १९८५ ई० । "सर्पदष्टः सुखी भवेत् । (११)
"सिंहे भावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युकारकाः ।" "पत्रवान् ये न हिंसन्ति ताम् हिंसन्ति पन्नगाः"—रम्भास्तम्भरसं पीत्वा*

ति.	वा.	तिथयः घ. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. घ. प.	घं. मि.	योगाः यो. घ. प.	करणानि क. घ. प.	राशयः रा. घ. प.	सूर्यांशाः सिंह-राशौ	दि. मा. घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सिंह ल. घं. मि.	ते. दि.	अं. ति.	
१	शु.	२३।१०	दि. २।५७	पू. ५६।११	रा. ५।२१	धृ. ५३।११	कौ. २३।१०	कु. ४३।२६	१४। ५।३२	३१।३४	५।४१	६।१९	६।५९	१५	२१	शस्त्रनिर्माणदिनम् ।
२	र.	२५।४१	,, ३।५८	उ. ६०।००	अहोरात्र	शु. ५५।१०	ग. २५।४१	मीन	१५। ३।३१	३१।३०	५।४२	६।१८	६।५५	१६	१	म. ५७।३२ उ. । सप्तापादपादिरोपणम् । सितम्बर १ ।
३	चं.	२८।२३	,, ५।२८	उ. ४।१८	दि. ७।३४	गं. ५५।५५	वि. २८।२३	मीन	१६। १।३०	३१।२६	५।४३	६।१७	६।५१	१७	२	भं. २८।२३ या. । गं. ५८।१८ उ. । कज्जल ३ । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा मध्यमा अग्रतः घं. ७ मि. ३४ उ. ।
४	मं.	३३।५३	रा. ७।१७	रे. १०।१८	,, ६।५१	वृ. ५७।११	ब. १।५३	मी. १०।१८	१६।५८।२६	३१।२२	५।४४	६।१६	६।४७	१८	३	गं. १३।१८ या. । पूर्वोदितः कुजः २८।३१ । चन्द्रकालः (भदवा) १०।५८ उ. । चौथचंद ४ सतम् । *
५	बु.	३८।५४	,, ६।१८	अ. १६।३५	,, १।२२	ध्रु. ५८।४४	कौ. ६।२३	मेष	१७।५७।२८	३१।१८	५।४४	६।१६	६।४३	१९	४	पूर्वदिशि यात्रा दिवा घ. १ मि. २२ या. । * बहुला ४ । पूर्वोत्तरयोर्यात्रा ।
६	वृ.	४३।५९	,, ११।२१	भ. २३। ६	,, २।२६	व्या. ६०।००	ग. ११।२६	मे. ३१।४२	१८।५१।२६	३१।१४	५।४५	६।१५	६।३९	२०	५	भ. ४३।५९ उ. ।
७	शु.	४८।४५	,, १।१६	कृ. २९।२९	,, ५।३४	व्या. ००।१७	वि. ११।२२	वृष	१९।४७।३०	३१।१०	५।४६	६।१४	६।३५	२१	६	भ. ११।२२ या. ।
८	श.	५२।५२	,, २।५६	रो. ३५।११	रा. ७।५१	ह. १।२६	बा. २०।४८	वृष	२०।४२।३१	३१। ६	५।४७	६।१३	६।३१	२२	७	श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम् । श्रीकृष्णजयन्तीव्रतम् ।
९	र.	५५।५६	,, ४। ६	मृ. ४०। ३	,, ६।४८	व. २। ३	तै. २४।२४	वृ. ७।३७	२१।३७।३२	३१। ३	५।४७	६।१३	६।२७	२३	८	द. ति. ५५।५६ उ. ।
१०	चं.	५७।५५	,, ४।५८	आ. ४३।४६	,, ११।२०	सि. १।४६	व. २६।५५	मिथुन	२२।३२।३२	३१।००	५।४८	६।१२	६।२३	२४	९	भ. २६।५४ उ. ५७।५५ या. । द. ति. ५७।५५ या. ।
११	मं.	५८।५३	,, ५।२२	पु. ४६।२०	,, १२।२१	व्य. ००।५४	व. २८।२४	मि. १०।४२	२३।२७।३२	३०।५७	५।४९	६।११	६।१९	२५	१०	वरीयान्योगक्षयः घ. ५७।५३ । अजा एकादशीव्रतं स्मार्तानाम् ।
१२	बु.	५७।५१	,, ४।५७	पु. ४६।३३	,, १२।५०	प. ५५।२८	कौ. २८।२२	कर्क	२४।२२।३२	३०।५४	५।४९	६।११	६।१५	२६	११	नववध्वाः पाकारम्भदिनम् । वैष्णवानामेकादशीव्रतम् ।
१३	वृ.	५५।५९	,, ४।१४	श्ले. ४७।३५	,, १२।५१	शि. ५१।२०	ग. २६।५५	क. ४७।३५	२५।२४।१९	३०।४९	५।५०	६।१०	६।११	२७	१२	भ. ५५।५९ उ. । गं. ३६।३५ उ. ५१।३५ या. । पूर्वास्तो गुरुः ३।२७ । प्रदोषव्रतम् । इत्यादि
१४	शु.	५३। १	,, ३। ३	म. ४६।२८	,, १२।२६	सि. ४६।२१	वि. २४।३०	सिंह	२६।२६।००	३०।४४	५।५१	६। ९	६। ७	२८	१३	चतुर्दशी १४ व्रतम् । याम्यामवस्योदयः ।
३०	श.	४९। ४	,, १।३०	पू. ४४।२८	,, ११।३९	सा. ४०।२८	च. २१। २	सि. ५८।४५	२७।२७।४४	३०।४०	५।५२	६। ८	६। ३	२९	१४	माघी अमा० ३० । कुशोत्पाटनम् (कुशी अमावास्या) ।

आनन्द

न्यूजपेपर बैंकिंग एजेंट
रेलवे बुकस्टाल के प्राप्त

भा. कृ. ५ सू. सि. भा. ४५।३१		
र.	४।१७।५७।२८	५८। ८
चं.	४। २।२५।३६	३८।३०
बु.	४। ६।४८।५३	९०। ८
बृ.	९।१६।२१।००	४।३८
शु.	३।१७।१०।३४	७३।४३
श.	६।२७।५५। ९	४।४०
के.	६।२०।५४।४२	३।११
रा.	०।२०।५४।४२	३।११
ल.	२२।१७।४५	—

भा. कृ. १२ सू. सि. भा. ४५।२७		
र.	४।२४।२२।३२	५८।२२
मं.	४। ६।५१।६३	३८।३१
बु.	४।१८। ७। ७	१०१।५२
बृ.	९।१५।४४।५२	४।४४
शु.	३।२९। २।४४	७३।४३
श.	६।२८।२४।५५	४।३८
के.	६।२०।१२।२७	३।११
रा.	०।२०।१२।२७	३।११
ल.	२२।१६।४६	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन–सौम्यगोल, वर्षाऋतु, अशुद्ध समय । बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, सबग्रह पूर्वोदित, ता. १२ के गु. पूर्वास्त ।

मौसम— वर्षाक योग सामान्य कोटिक अछि, कृषक वर्गमे अशान्ति होयत, समय सामान्य रहत ।

विशेष कथन—बहुला गणेश-चतुर्थी-व्रत कएलासँ अनेक शुभ मनोरथ सिद्ध होइछ । श्रीकृष्णाष्टमी व्रत प्रत्येक नर-नारीकेँ कर्तव्य थिक—"नरो वा यदि वा नारी कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् । न करोति तदा घोरा व्याली भवति कानने" (भविष्य पुराण) ॥ कुशीअमावस्यामे उपाड़ल कुश वर्ष पर्यन्त शुद्ध रहैछ । चिता-स्थान, रास्ता, यज्ञभूमि, शय्या, आसन तथा पिण्ड एहिठाम समक कुश अशुद्ध मानल गेल अछि । कुशोत्पाटन मन्त्र—"कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः । कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि !"॥ कुशप्रतिनिधीनाह स्नानसूत्रभाष्ये—कुशाः काशमया दूर्वा उशीराश्च सकुन्दराः ॥ इति कुशाः कुशकार्यकरिणः । कुश स्वयं उपाड़बाक चाही—अन्य द्वारा शूद्र द्वारा च कुशग्रहणमनुचितमुक्तं हारीतेन ॥—"समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् । शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः" ॥ काल विचार—आगाँ पाछाँ तथा मार्गे पूर्वस्थां राहुसंस्थितिः । फाल्गुने च तथा चैत्रे वैशाखे दक्षिणे भवेत् ॥ ज्येष्ठे मासि तथाषाढे श्रावणेऽपि च पश्चिमे । भाद्रे तथाश्विने मासे कार्तिके चोत्तरे भवेत् ॥ दक्षिणे सम्मुखे राहौ स्त्रीयात्रां परिवर्जयेत् । गृहारम्भप्रवेशौ च सम्मुखे चैव वर्जयेत् ॥ (ज्यो. त. ८७ श्लो.) एहि श्लोकक सारांशमे इहो लिखल गेल अछि जे पितृगृह यात्रामे कालक विचार नहि हो ।

	चं. रा.	
बु.		गु.
र. मं. बु.	श. के.	

"समित्पुष्पकुशादीनि बहुतो नाभिवादयेत् ।" "स्नानं कृत्वा तु यत्किञ्चित् पुष्पं चिन्वन्ति वै द्विजाः देवस्तद्भ गृह्णन्ति*)

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः सि.क.-राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दि. ल. घं. मि.	मे. घते	ता	भाद्रशुक्लपक्षः
१	र.	४४।१६	रा. ११।३५	उ. ४१।३८	रा. १०।३२	शु. ३३।५७	किं. १६।४०	कन्या	२८।२६।२७	३०।३६	५।५३	६। ७	५।५९	३०	१५	सूतीस्नानम् ।
२	चं.	३८।५४	,, ९।२८	ह. ३८। ६	,, ९।१०	शु. २६।५२	बा. ११।३५	कन्या	२९।३१।१०	३०।३२	५।५४	६। ६	५।५५	३१	१६	चन्द्रदर्शनम् ।
३	मं.	३३।५४	,, ७। ८	चि. ३४।१२	,, ७।३५	ब्र. १९।२४	तै. ५।२९	क. ६।१०	००।३२।५३	३०।२८	५।५४	६। ६	५।५१	१	१७	उ. फ. २च. कन्यायां रविः ८।२२ षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः द. ८।२२ उ.। मु० ३० फलं साम्यम् । मुद्धारम्भश्च*
४	बु.	२७। १	दि. ४।४५	स्वा. २९।५२	सं. ५।५५	ऐ. ११।४२	वि. ०। ३	तुला	१।३४।३६	३०।२४	५।५५	६। ५	क.८।१०	२	१८	म. ००।३ उ. २७।१ या. । *८।२२ उ.। हरितालिकाव्रतम् (तीज) विनायक ४ चतुर्थी (चौ. चन्द्र पूजा)†
५	बृ.	२०।५१	,, २।१५	वि. २५।४६	दि. ४।१४	वै. ३।५२	बा. २०।५१	तु. ९।३४	२।३३।२२	३०।२०	५।५६	६। ४	८। ६	३	१९	विष्कुम्भयोगक्षयः द. ५२।१८। ऋषिपंचमीव्रतम् । †चन्द्रादर्शनम् । छन्दोगानामृषितर्पणम् विश्वकर्मापूजा।
६	शु.	१४।५४	,, ११।५४	अ. २१।४१	,, २।३८	प्री. ४८।४०	तै. १४।५४	वृश्चिक	३।३२। ७	३०।१६	५।५७	६। ३	८। २	४	२०	पर्पट ६। उत्तरदिशि यात्रा ।
७	श.	९।१९	,, ९।४१	ज्ये. १८। ४	,, १।१२	आ. ४१।३३	व. ९।१९	वृ. १८। ४	४।३०।५९	३०।१२	५।५८	६। २	७।५८	५	२१	म. ९। १९ उ. ३६।४६ या.। द. ति. ९। १९ उ.। मं.१२।४ उ. २७।४ या.।
८	र.	४।१४	,, ७।४०	मू. १४।५८	,, ११।५७	सौ. ३५।००	व. ४।१४	धनु	५।३९।३७	३०। ८	५।५८	६। २	७।५४	६	२२	नवमीक्षयः द. ५५।४१ दोषाष्टमी, महालक्ष्मी कथारम्भः राधिकाष्टमी (श्रीराधिका जयन्ती)। द. ति. ४।१४ या.।
१०	चं.	५५।३२	रा. ४।१२	पू. १२।४४	,, ११। ५	शो. २९। ७	तै. २७।४५	ध. २७।२२	६।२८।२२	३०। ४	५।५९	६। १	७।५०	७	२३	अच्युत १०। दक्षिणदिशि यात्रा मध्यमा ।
११	मं.	५४।११	,, ३।४०	उ. ११।१६	,, १०।३०	अ. २४। ०	व. २४।५१	मकर	७।२७। ७	३०। १	६।००	६।००	७।४६	८	२४	म. २४।५१ उ. ५४।११ या.। श्रीहरेः पार्श्वपरिवर्तनम्, कर्मा-धर्मा एकादशीव्रतं स्मार्तानाम् । सूतीस्नानम् ।
१२	बु.	५३। २	,, ३।१३	श्र. १०।५७	,, १०।२३	सु. १९।४६	ब. २३।३६	म. ४१।२४	८।२५।५२	२९।५८	६।००	६।००	७।४२	९	२५	वैष्णवानामेकादशी व्रतम्। श्रीहृषीकेश १२। कुष्माण्डेन पारणा। चक्रधकारम्भः(भदवा) १०।५७ उ.।*
१३	बृ.	५३। ८	,, ३।१६	ध. ११।५१	,, १०।४५	धृ. १६।३३	कौ. २३। ५	कुम्भ	९।२४।५३	२९।५४	६। १	५।५९	७।३८	१०	२६	प्रदोषव्रयोदशी १३ व्रतम् । *पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा।
१४	शु.	५४।३४	,, ३।५२	श. १३।५९	,, ११।३८	शू. १४।१६	ग. २३।५१	कुम्भ	१०।२३।५४	२९।५०	६। २	५।५८	७।३४	११	२७	म. ५४।३४ उ. । हस्ते रविः ५९।५९। स्त्रीपुम्भयोर्योगः । चतुर्दशी १४ व्रतम् । अनन्त १४ व्रतम् ।
१५	श.	५७। १	,, ४।५१	पू. १७।२५	,, ११। १	गं. १३। ८	वि. २५।४७	कु. ११।३४	११।२२।५५	२९।४६	६। ३	५।५७	७।३०	१२	२८	म. २५। ५७ या. । भाद्री-पूर्णिमा-१५। सेवस्नानम्, अगस्त्यार्घदानम् । सत्ययुगान्तः । महालयारम्भः ५७।१ उ. ।

भा. शु. ४ बु. मि. भा. ४५।१२		
र.	५।१ ।३४।२६	५८।३७
मं.	४।११।१६।५६	३८।३०
बु.	५।००।१०।३८	१०८।४६
बृ.	६।१५।१३।४६	३।४४
शु.	४। ३।२६।२३	७३।१९
श.	६।२८।५७।५६	४।३८
के.	६।१९।५०।११	३।११
रा.	०।१९।५० ११	३।११
म.	२२।१७।४६	—

भा. शु. १२ बु. मि. भा. ४४।५८		
र.	५। ८।२५।५२	५८।५३
मं.	४।१५।४१।१७	३८।३०
बु.	५।१२।३४।१५	१०७।२४
बृ.	६।१४।५४।३४	१। २
शु.	४।११।५५।५८	७३।४३
श.	६।२९।३५। ६	५।३१
के.	६।१९।२७।५५	३।११
रा.	०।१९।२७।५५	३।११
म.	२२।१७।४७	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे) ।

याम्यायन, सौम्यगोल, वर्षा-शरद् ऋतु, । अमृत-बुद्ध समय । वृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी । बु. पूर्वोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

बौखव—पछबरि वर्षाक योग नीक (अधिक), जकर अधिकतासँ समय कतहु सुखद आ कतहु दुःखद ।

विशेष कथन—महर्षि नारद कृष्णकेँ कहलथिन्ह जे अहाँ भाद्रशुक्ल चतुर्थीचन्द्रकेँ देखने छी, तेँ अहाँकेँ व्यर्थ कलंक लागल । हुनक कथनानुसार भाद्रशुक्ल गणेश चतुर्थीमे गणेशजीक व्रत-पूजनसँ मिथ्या अपवादक शुद्धि होइछ । "सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । सुकुमारक, मारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः" एहि मन्त्रसँ चन्द्रमा के दर्शन फल-फूल पक्वान्नपूरित वंश पात्र (चङेरा) लय करबाक विधान अछि, 'दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एहि मन्त्रसँ दधिपात्र समर्पण कएलाक बाद—'रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवन् प्रदेहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे'—प्रार्थना करी । अगस्ति-तर्पण—कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम । उदयं ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयम्प्रतिगृह्यताम् ।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।।उ०।। काशपुष्पप्रतीकाश-वह्निमारुतसम्भव ।।उ०।। वातापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।।

	रा:	
		बु.
मं. शु.	चं. श. के.	
र. बृ.		

आश्विनकृष्णपक्षः ।

संवत् २०४२, शाके १९०७, सन् १३९३ साल, ई० सितम्बर-अक्टूबर १९८५ ई० ।

"सूर्ये कन्यांगते श्राद्धं यो न कुर्याद् गृहाश्रमी । धनं पुत्राः कुतस्तस्य पितृनिःश्वासपीडनात् ॥"

ति.	वा.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः कन्या राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	क. ल. घं. मि.	सौ. गते	अं. ता.	
१	र.	६०।००	अहोरात्र	उ. २११५६	दि. २।५०	वृ. १२।४६	बा. २८।५७	मान	१२।२१।५६	२६।४२	६। ४	५।५६	७।२६	१३	२९	पितृपक्षारम्भः (पार्वणारम्भः) सुतीस्नानम् ।
१	चं.	००।५४	दि. ६।२६	रे. २७।२७	,, ५। ३	ध्रु. १३।१८	कौ. ०।५४	मी. २७।२७	१३।२०।५७	२६।३८	६। ४	५।५६	७।२२	१४	३०	मं० १५।२७ उ. १०।२७ या. । वि. ४ घ० वृश्चिके शनिः ७।४१ । कन्याकान्तः (अदया) २७।२७ उ. ।
२	मं.	५।२६	,, ८।५७	अ. ३३।३७	,, ७।३२	व्या. १४।२२	ग. ५।२६	मेष	१४।१६।५७	२६।३४	६। ५	५।५५	७।१८	१५	१	अ. ३८।०० उ. । पूर्वदिशि यात्रा । अक्टूबर–१० ।
३	बु.	१०।३२	,, १२।१६	भ. ४०। ८	,, १०। ६	ह. १५।४८	वि. १०।३२	मे. ५६।४४	१५।१८।५७	२६।३०	६। ६	५।५४	७।१४	१६	२	म. १०।३२ या. ।
४	बृ.	१५।४३	,, १२।२४	कृ. ४६।३४	,, १२।४५	व. १६।१६	बा. १५।४३	वृष	१६।१८।१४	२६।२६	६। ७	५।५३	७।१०	१७	३	गवांक्रयविक्रयदिनम् ।
५	शु.	२०।३७	,, २।२३	रो. ५२।२७	,, ३। ७	सि. १८।२६	तै. २०।३७	वृष	१७।१७।३१	२६।२२	६। ८	५।५२	७। ६	१८	४	पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा ।
६	श.	२४।४६	,, ४। ४	मृ. ५७।३४	,, ५।१०	व्य. १६।१२	व. २४।४६	वृ. २५।००	१८।१६।१८	२६।१८	६। ८	५।५२	७। २	१९	५	भ. २४।४६ उ० ५६।२३ या. । मार्गी गुरुः २६।३ । दक्षिणदिशि यात्रा ।
७	र.	२७।५७	,, ५।२०	आ. ६०।००	अहोरात्र	व. १६।११	व. २७।५७	मिथुन	१९।१६। ४	२६।१४	६। ९	५।५१	६।५८	२०	६	महालक्ष्मीव्रतम् । द. ति. २७।५७ उ. ।
८	चं.	३०। ३	रा. ६।११	आ. १।३२	दि. ६।४७	प. १८।११	कौ. ३०। ३	मि. ४८।४१	२०।१५।२०	२६।१०	६।१०	५।५०	६।५४	२१	७	द. ति. ३०।३ या० । शाकाष्टका । जीमूतवाहनव्रतम् ।
९	मं.	३०।४८	,, ६।३०	पु. ४।२४	,, ८। ९	शि. १६।२१	ग. ३०।४८	कर्क	२१।१४।३६	२६। ६	६।११	५।४९	६।५०	२२	८	अन्वष्टका ९ । मातृकृत्यम् । जीमूतवाहनव्रतस्य पारणा । दक्षिणदिशि यात्रा ।
१०	बु.	३२।१२	,, ७। ५	पु. ५।५८	,, ८।३५	सि. १३।२५	व. १।३०	कर्क	२२।१३।५२	२६। २	६।१२	५।४८	६।४६	२३	९	भ. १।३० उ. ३१।१२ या. । पं० ५५।१९ उ. ।
११	बृ.	२८।२५	दि. ५।३४	श्ले. ६।१९	,, ८।४४	सा. ९।२४	ब. ००।१८	क. ६।१९	२३।१३।२५	२८।५८	६।१२	५।४८	६।४२	२४	१०	चित्रायां रविः ५४।३१ स्त्रियोर्योगः । भं. १०।१९ या. । इन्दिराएकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	शु.	२५।३३	,, ४।२६	म. ५।३०	,, ८।२५	शु. ४।३०	वै. २५।३३	सिंह	२४।१२।५८	२८।५४	६।१३	५।४७	६।३८	२५	११	शुक्रस्योदयः दं० ५४।१६ । प्रदोषव्रतोदयव्रतम् ।
१३	श.	२१।४१	,, २।५४	पू. ३।४२	रा. ७।४३	ब. ५२।२३	व. २१।४१	सि. १८। १	२५।१२।३०	२८।५०	६।१४	५।४६	६।३४	२६	१२	भं० २१।४१ उ० ४९।२१ या० । । चतुर्दशी १४ व्रतम् ।
१४	र.	१७। १	,, १।३०	उ. ००।५६	,, ६।३६	ऐ. ४५।२२	श. १७। १	कन्या	२६।१२। २	२८।४६	६।१५	५।४५	६।३०	२७	१३	हस्तायः दं. ५४।५० हस्ताविहतानमर्द्य श्राद्धम् ।
३०	चं.	११।४२	,, १०।५७	चि. ५३।४८	,, ३।४७	वै. ३७।५५	ना. ११।४२	क. २५।४४	२७।११।३४	२८।४२	६।१६	५।४४	६।२६	२८	१४	धात्रिनी–अमा–३० । सोमवारीव्रतम् । पार्वणान्तः, महालयारम्भः ।

आ. कृ. ३ बु. मि. आ. ४३।४५		
र.	५।१५।१८।५७	५९। ५
मं.	४।२०। ३।४४	३८।११
बु.	५।२४।५६।५६	१०६।४१
गु.	४।१४।४४।०४	०। २
शु.	४।२०।२७।५४	७३।४३
श.	७। ०।१४।२४	५।३५
के.	६।१९। ५।४०	३।११
रा.	०।१९। ५।४०	३।११
म.	२२।१७।४८	—

आ. कृ. १० बु. मि. आ. ४४।३१		
र.	५।२२।१३।५२	५९।२९
मं.	४।२४।२६।६०	२७।३६
बु.	६। ७। ६।३८	१०।३१
गु.	४।१७।४७।३१	०। २
शु.	४।२६। १।१०	७३।८६
श.	७। ०।०।४८	६।३३
के.	६।१८।४३।२४	३।११
रा.	०।१८।४३।२४	३।११
म.	२२।१७।२४	—

बालक

मूल्य 2.00

आकाशक बात— (काल—उत्तर मे)

याम्यायन-सौम्यगोल, शरद ऋतु, शुद्ध समय । बृ. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बुध पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. ५ के बृ. मार्गी ।

मौसम—पक्षभरि वर्षाक योग नीक अछि, कृषक वर्गमे खुशियाली रहत, समय सुखद ।

विशेष कथन—जितियामे पारणक दिन पारणसँ पूर्व असमर्थावस्थामे दूध-शरबत आदि पेय पदार्थ ग्रहण कयल जासकैछ, भविष्योत्तरमे एहन प्रमाण भेटैछ । "शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः । तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया ।"—ई व्रत पुत्रवती स्त्रीगणसँ अवश्य कर्तव्य । कथाक सारांश—नर्मदा नदीक पश्चिम बाहुटाल नामक मरुस्थलमे भूपाकडिक खोधडिमे गिदरनी आ डारिपर एक चिल्होडि रहैत छलि । स्त्रीगण द्वारा जितिया व्रत-पूजादि करैत देखि ओहो दूनू व्रत कैलक । गिदरनी चुप्पे मुर्दाक मांस खा लेलक आ चिल्होडि नियमानुसार नवमीमे पारण कैलक । दोसर जन्ममे गिदरनी मलयकेतुक रानी (कर्पूरावती) भेलि आ चिल्होडि बुद्धिसेनक रानी शीला भेलि । जितियाव्रतक प्रभावसँ शीलाकेँ क्रमशः सात पुत्र भेलैन्ह जे जीवित रहलन्हि आ कर्पूराकेँ सेहो सात टा पुत्र भेलैन्हि मुदा व्रत भंगक दुष्प्रभावसँ सातो पुत्र नष्ट भऽगेलैन्ह । ईर्ष्यासँ कर्पूरा पारणक दिन शीलाक सातो पुत्रक मूड़ी कटवा कऽ बाँसक डालामे वस्त्रसँ झाँपि शीलाक सातो पुतोहुकेँ पारणक हेतु पठौलन्हि, मुदा जीमूतवाहन, अपन व्रतक प्रभावसँ सातो पुत्रकेँ जीवित कए देल ।

ति.	वा.	तिथयः द. प.		घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.		घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः क.तु.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	च. उ. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	आश्विनशुक्लपक्षः ।
१	मं.	१।१६	दि.	८।३८	स्वा.४६।४१	रा.	२। ८	वि. ३०।११	ब. ५।५६	तुला	२८।११। ६	२८।३८	६।१६	५।४४	६।२२	२९	१५	द्वितीयाक्षयः दं० ५४।२ । चन्द्रदर्शनम् । शारदीयनवरात्रारम्भः । दुर्गोत्सवः । कलशस्थापनम् । तुरगवाहनम् ।*
३	बु.	११।५३	रा.	३।५८	वि. ४५।२७	,,	०।२८	प्री. २२।१८	तै. २६।५२	तु. ३१।३१	२९।१०।३८	२८।३४	६।१७	५।४३	६।१८	३०	१६	मासान्तः । *कलशपूजनम् । रेमन्तपूजा ।
४	बृ.	१७।१६	,,	१।२२	अ. ४१।२२	,,	१०।५१	आ. १४।३०	व. २०।५६	वृश्चिक	०।१०।२६	२८।३०	६।१८	५।४२	६।१४	१	१७	म० २०।५६ उ० ४७।५९ या. । चि० ३ घ० तुलायां रविः३३।५६ । मु० ३० कर्क साम्यम् । विषुवसंक्रान्तेः
५	शु.	१२।२६	,,	११।१९	ज्ये. ३७।३८	,,	९।२२	सौ. ६।५१	ब. १५।१४	वृ. ३७।३८	१।१०।१४	२८।२६	६।१९	५।४१	शु.८।३४	२	१८	शोभनयोगक्षयः दं० ५२।४३ । मातादिः । गं० ३१।३८ उ० ४६।१८ या० । पुण्यकालः दिवा घं० १२ उ० ।
६	श.	१०।२७	,,	८।१९	मू. ३४।२४	,,	८। ६	अ. ५२।४६	कौ. ९।५८	धनु	२।१०। २	२८।२२	६।२०	५।४०	८।३०	३	१९	गजपूजा । बिल्वाभिमन्त्रणम् । उत्तरदिशि यात्रा । नवपत्रिकादिरोपणम् ।
७	र.	१३।१४	,,	७।३८	पू. ३१।५१	,,	७। ४	सु. ४६।३९	ग. ३।१५	ध. ४६।१७	३। ९।५०	२८।१८	६।२०	५।४०	८।२६	४	२०	म. ३३।१४ उ० । पश्चिमोदितो बुधः ३८।१७ । पत्रिकाप्रवेशः । निशापूजा । महारात्रिः । पूर्वोत्तरयोर्यात्रा मध्यमा ।
८	चं.	२१।५३	,,	६।१८	उ. ३०।१५	,,	६।२७	धृ. ४१।१५	वि. १।३३	मकर	४। ९।३७	२८।१४	६।२१	५।३९	८।२२	५	२१	म. १।३३ या. । महाष्टमी ८ व्रतम् ।
९	मं.	२७।५६	,,	६।१८	श्र. २९।३७	,,	६।१३	शू. ३९।४१	कौ. २७।५६	म. ५९।५६	५। ९।२४	२८।१०	६।२२	५।३८	८।१८	६	२२	वज्रकारम्भः (भदवा) २९।३७ उ० । महानवमी ९ व्रतम् । त्रिशूलिनी पूजा । बलिदानादिकृत्यम् । मन्वादिः ।
१०	बु.	२९।१३	,,	५।००	ध. ३०।१४	,,	६।२९	गं. ३३। ७	ग. २६।३३	कुम्भ	६। ९।११	२८। ६	६।२३	५।३७	८।१४	७	२३	म० ५६।३८ उ० । विजयादशमी । अपराजिता पूजा । देवीविसर्जनम् ।
११	बृ.	२६।५४	,,	५। ६	श. ३२। ३	,,	७।१३	वृ. ३०।३२	वि. २६।४४	कुम्भ	७। ९।१४	२८। २	६।२४	५।३६	८।१०	८	२४	म० २६।४४ या० । द० ति० २६।४४ उ० । स्वात्यां रविः १५।३ स्त्रीपुम्सयोर्योगः । पाशांकुशा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	शु.	२८।१७	,,	५।३९	पू. ३५।१०	,,	८।२८	ध्रु. २८।५८	बा. २८।१७	कु. १९।२१	८। ९।१७	२७।५८	६।२४	५।३६	८। ६	९	२५	द० ति० २८।१७ या० । पद्मनाभ १२ । गजेन्द्रपारणा । [illegible]
१३	श.	३०।५८	,,	६।४८	उ. ३९।२१	,,	१०। ९	व्या.२८।१६	तै. ३०।५८	मीन	९। ९।२०	२७।५४	६।२५	५।३५	८। २	१०	२६	प्रदोषव्रतम् । [illegible]
१४	र.	३४।४८	,,	८।२१	रे. ४४।३९	,,	०।१८	ह. २८।२९	व. २।२३	मी. ४४।३९	१०। ९।२३	२७।५१	६।२६	५।३४	७।५८	११	२७	म० ३४।४८ उ० । गं० ३२।३९ उ० ४७।३९ या० । पञ्चकान्तः (भदवा) ४४।३९ उ० । चतुर्दशी १४ व्रतम् ।
१५	चं.	३९।२८	,,	१०।१२	अ. ५०।३९	,,	२।४२	व. २९।१९	वि. ७। ८	मेष	११। ९।२६	२७।४८	६।२६	५।३४	७।५४	१२	२८	म० ७।८ या० । पूर्वाश्विना यात्रा । आश्विनी-पूर्णिमा १५ । कोजागरा, प्रदोषे लक्ष्मीपूजनम् । दिवाऽभोजनम् ।

संवत् २०४२, शक: १९०७, सन् १३९३ साल, ई० अक्टूबर १९८५ ई० । आवश्येन विवर्जयेत् । (१४)

दुग्धं शालयो मुद्गाः शरोऽम्बुः क्वथितं पयः । करवेतानि पथ्यानि प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥"—भावप्रकाश । मुक्तेनावाहयेद्देवी

आ. शु. ३ बु. मि. गा. ४४।१७		
र.	५।२९।१०।३८	५९।१९
मं.	४।२८।४५। ९	३७।५६
बु.	६।१८।३६।५४	९६।१६
बृ.	९।१४।५५। ३	-२।२८
शु.	५। ७।३८।४३	७३।५६
श.	७। ९।४२।३१	६।३३
के.	६।१८।३१।१०	-३।११
रा.	०।१८।३१।१०	-३।११
ग.	२२।१७।५०	—

आ. शु. १० बु. मि. गा. ४४। ३		
र.	६। ६। ९।११	५९।५४
मं.	५। ३। ८।२८	३७।४४
बु.	६।२९।१३।५४	८३।४४
बृ.	९।१५।१५।४०	-४।२१
शु.	५।१६।१६।१९	७३।५६
श.	६। २।१७।३७	६।३३
के.	६।१७।५८।५५	३।११
रा.	०।१७।५८।५५	३।११
ग.	२२।१७।५१	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन, सौम्य-याम्यगोल, शरद् ऋतु, शुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. २० के बु. पश्चिमोदित ।

मौसम—पखवारि वर्षाक योग साधारण । खण्डवृष्टिक सम्भावना, समय सुखद ।

विशेष कथन—खञ्जन दर्शन-मन्त्र—नीलकण्ठ, शुभग्रीव, सर्वकामफलप्रद ! पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट, नमोऽस्तु ते ॥ त्वं योगयुक्तो मुनिपुत्रकस्त्वमदृश्यतामेषि शिखोद्गमेन । संदृश्यसे प्रावृषि निर्गतायां त्वं खञ्जनाश्चर्य ! नमोनमस्ते ॥ दर्शन-फल—पूर्वमे कार्य-सिद्धि, अग्निकोणमे भय, दक्षिणमे अग्निभय, नैऋत्यमे कलह, पश्चिममे लाभ, वायव्यमे अन्न-वस्त्र, उत्तरमे दिव्यांगनाक प्राप्ति, ईशानमे अनिष्ट, उक्त खञ्जन-दर्शनसँ अर्थागम । कमल, गाय, घोड़ा, हाथी, सर्प आ पवित्र भूमि पर देखलासँ आरोग्य, अर्थागम; छाउर, हड्डी, काष्ठ, केश, नख, (लोह) धार भुस्सा पर देखलासँ दुःख । अशुभफल-शान्ति आदि कृत्यसारमे देखी । दुर्गाक पाठ—यथाश्वमेधः क्रतुराट् देवानां च यथा हरिः । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशती स्तवः । "षष्ठ्या: शतावृत्तिपाठात् सर्वा: सिद्ध्यन्ति सिद्धयः" नवरात्र भगवानक सबसँ पैघ शक्ति काल मानल जाइछ—"सोऽनन्तोऽन्तकरः कालोऽनादिरादिकृदव्ययः । जनं जनेन जनयन् मारयन्मृत्युनान्तकम्" भगवानहिक समय रूप शक्तिक अनुभूयमान स्वरूप ऋतुचक्र (संवत्सर) थे सामान्यतः ३६० दिनक मानल जाइछ, जाहिमे ४०(४०×९=३६०) नवरात्र होइछ, जाहिमे पंचमुख्य आश्विनशुक्ल नवरात्र शक्ति-पूजाक हेतु प्रधान मानल जाइछ ।

	रा.	
		बु.
मं.	बृ. के.	
र. शु.		चं. श.

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः सु.-राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सू. स. घं. मि.	अं. गते	अं. ता.	कार्त्तिककृष्णपक्षः । संवत् २०४२, शाके १९०७, सन् १३९३ साल, ई० अक्टूबर-नवम्बर-१९८५ ई० । "तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुत्तमम् । द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे ॥"—मनुः ।
१	मं.	४४।४१	रा. ०।१९	भ. ५७।१०	रा. ४।३५	सि. ३०।३९	बा. १२। ५	मेष	१२। ९।२८	२७।४५	६।२७	५।३३	७।५०	१३	२९	चुल्लिकास्थापनम् ।
२	बु.	४९।५७	,, २।२७	कृ. ६०।००	प्रा. ६।२८	व्य. ३२। ६	तै. १७।१९	मे. १३।४७	१३। ९।३०	२७।४२	६।२८	५।३२	७।४६	१४	३०	पश्चिमास्तः शनिः ५२।५१ । नवान्नाः पाकारम्भदिनम् । सूर्य देव या० केलाश्री जन्म
३	बृ.	५४।५३	,, ४।२६	कृ. ३।३८	दि. ७।५५	व. ३३।१९	व. २२।२६	वृष.	१४।१२।४०	२७।३८	६।२८	५।३२	७।४२	१५	३१	म. २२।२६ उ० ५४।५५ या० ।
४	शु.	५९।११	,, ६। ९	रो. ९।४१	,, १०।२१	प. ३४। ८	ब. २७। ३	वृ. ४२।१५	१५।१५।४९	२७।३५	६।२९	५।३१	७।३८	१६	१	श्रीगणेश ४ व्रतम् । नवम्बर-११ । १२॥ बजे रात्री के द्वितीये कन्या—
५	श.	६०।००	प्रा. ६।३०	मृ. १५।००	,, १२।३०	शि. ३४।१८	कौ. ३०।४७	मिथुन	१६।१८।५८	२७।३२	६।३०	५।३०	७।३४	१७	२	गुल्मलतौषधीनां रोपणम् ।
५	र.	२।२२	दि. ७।२७	आ. १९।१७	,, २।१३	सि. ३३।३१	तै. २।२२	मिथुन	१७।२२। ७	२७।२९	६।३०	५।३०	७।३०	१८	३	चुल्लिकास्थापनम् ।
६	चं.	४।३२	,, ८।४०	पु. २२।२७	,, ३।३०	सा. ३१।५०	व. ४।३२	मि. ६।४०	१८।२५।१६	२७।२६	६।३१	५।२९	७।२६	१९	४	म० ४।३२ उ० ३४।५५ या० । अशोकचन्दन ६ ।
७	मं.	५।१८	,, ८।३८	पु. २४।२०	,, ४।१५	शु. २९।०५	व. ५।१८	कर्क	१९।२८।२५	२७।२३	६।३१	५।२९	७।२२	२०	५	पश्चिमदिशि यात्रा । *लक्ष्मीपूजनम् । उल्काभ्रमणम् । निशीथे श्यामापूजा । [illegible] । पितृविसर्जनम् ॥
८	बु.	४।४५	,, ८।२४	श्ले. २४।५६	,, ४।३०	शु. २५।१९	कौ. ४।४५	क. २४।५६	२०।३१।३४	२७।२०	६।३२	५।२८	७।१८	२१	६	विशाखायां रविः ३६।४१ । मं० १३।५६ या० । †रात्रिशेषे सूर्पवादनम् । दरिद्रानिःसारणम् ।
९	बृ.	३। १	,, ७।४५	म. २३।२२	,, ३।५४	ब्र. २०।३८	ग. ३। १	सिंह	२१।३४।१२	२७।१६	६।३३	५।२७	७।१४	२२	७	म० ३१।५६ उ० ।
१०	शु.	०।११	,, ६।३७	पू. २२।४६	,, ३।३९	ऐ. १५। ६	वि. ०।११	सि. ३७। ९	२२।३६।५०	२७।१३	६।३३	५।२७	७।१०	२३	८	म० ००।११ या० । द० ति० ५६।२४ उ० । एकादशीक्षयः दं० ५६।१३ । रम्भा एकादशी ११ व्रतं स्मार्तानाम् ।
१२	श.	५१।४६	रा. ३।१५	उ. २०।२०	,, २।४२	वै. ८।५४	कौ. २४। ५	कन्या	२३।४०।२८	२७।१०	६।३४	५।२६	७। ६	२४	९	द० ति० ५१।४६ या० । वैष्णवानाम् एकादशीव्रतम् । **पूर्वपश्चिमयोर्यात्रा ।
१३	र.	४६।३०	,, १। १	ह. १७। ९	,, १। ५	वि. २।००	ग. १९। ८	क. ४५।१७	२४।४३। ६	२७। ७	६।३५	५।२५	७। २	२५	१०	म० ४६।३० उ० । प्रीतियोगक्षयः दं० ३२।३६ । प्रदोषव्रतम् । धन्वन्तरिजयन्ती (धनतेरस) ।**
१४	चं.	४०।४८	,, १०।४४	चि. १३।२६	,, १०।४७	प्रा. ४६।५६	वि. १३।३९	तुला	२५।४६।४४	२७। ४	६।३५	५।२५	६।५८	२६	११	म० १३।३९ या० । चतुर्दशी १४ व्रतम् । श्रीहनुमज्जयन्ती । यमपञ्चकारम्भः । यमदीपदानम् ।
३०	मं.	३४।२५	,, ८।२४	स्वा. ९।२०	,, १०।२०	स. ३९। ३	च. ७।५६	तु. ५१।११	२६।४९।२२	२७। १	६।३६	५।२४	६।५४	२७	१२	कार्तिकी–अमा ३० । पार्वणम् । वक्री बुधः ३१।२९ । दीपमालिका (सुखरात्रिः) दिवाप्रबोधनम् । प्रदोषे*

का. कृ. २ सू. मि. सा. ४३।५१		
र.	६।११। ९।३०	६०। ८
मं.	५।०७।२८।४६	३७।२३
बु.	७।०७।३५।४४	६०।३५
बृ.	९।१५।४६।३२	५।१५
शु.	५।२४।५६।३५	७३।२६
श.	७। ३।१४।१४	७।३०
के.	६।१७।५६।४०	३।११
रा.	०।१७।३६।४०	३।११
ध.	२२।१७।५२	—

का. कृ. ८ बु. मि. सा. ४३।४०		
र.	६।२०।११।३४	६०।२१
मं.	५।१३।४८।४४	३७।२३
बु.	७।१३।१६।१७	२८।३७
बृ.	९।१६।२५।११	५। ९
शु.	६। ३।३८।४५	७४।३१
श.	७। ४। ४।३७	७।३०
के.	६।१७।१४।२५	३।११
रा.	०।१७।१४।२५	३।११
ध.	२२।१७।५३	—

आकाशक बात— (काल—उत्तरमे)

याम्यायन, याम्यगोल, शरद् ऋतु, शुद्ध समय। सब ग्रह मार्गी, बृ. पश्चिमोदित। शेष ग्रह पूर्वोदित। ता. ३० दे बु. वक्री।

मौसम—एहि पक्षमे वर्षाक योग साधारण अछि। पक्षक उत्तरार्द्धमे विशेष रोगक प्रकोप अछि। समय सामान्य कोटिक रहत।

विशेष कथन—देशमे सर्वोत्तम ऋतु दुइएटा अछि—शरद् तथा वसन्त। अतएव शरद् ऋतुमे राजासँ रंक तक लक्ष्मीक पूजन करैत छथि। इजोरिया राति दीपावलीक हेतु वेहन उपयोगी नहि, जतेक अमावास्याक घोर अन्धकार; कारण जे एहिमे रोगक कीटाणुक प्राचुर्य रहैछ, जे दीपावलीक प्रकाशसँ अनायासे नष्ट भऽ जाइछ। एहि दिन सन्ध्यामे सर्वत्र दीपमालाक आयोजन करक चाही। कारण, एहि अर्द्धरात्रिमे लक्ष्मी भ्रमण करैत छथि एवं जे घर सभ प्रकाश, धूप-दीप आदिसँ अलंकृत रहैत अछि, तथए निवास करैत छथि। अतः, सम्पूर्ण राति दीपादि प्रकाशसँ गृहादिकेँ जगमगौने रहक चाही। रात्रिक चतुर्थ प्रहरमे सूप आदि बजाकऽ दरिद्राकेँ बहार करबाक प्रथा तऽ प्रचलिते अछि। उल्का भ्रमण—"शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमाङ्गतिम्। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्मं प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।" पितर लोकनिकेँ मार्गदर्शनार्थ ऊँक भाँजल जाइछ।

चं. रा. बृ. र. के. मं. शु. बु. श.

कार्तिकशुक्लपक्षः ।

संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, अं० नवम्बर १९८५ ई० ।

बेलपत्र तोड़बाक मंत्र—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शङ्करस्य सदाप्रिय । अमस्त्व शिवपूजार्थं बिल्वपत्रं चिनोम्यहम् ॥

ति.	वा.	तिथयः घं. प.		घं. मि.	नक्षत्राणि न.	घं. प.		घं. मि.	योगाः यो.	घं. प.	करणानि क.	घं. प.	राशयः रा. घ. प.	सूर्यांशाः तुलाद्-राशौ	दि. मा. घं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	सु. ल. घं. मि.	नै. गते	अं. ता.	
१	बृ.	२८।३६	रा.	६।१०	वि.	५।०८	दि	८।३२	सौ.	३१।१८	कि.	१।५६	वृश्चिक	२७।१४।५६	२६।५८	६।३६	५।२४	६।५०	२८	१३	अन्न्यादिदेवोत्थानम् । गोक्रीड़ा-गोपूजा च । दिवा घ.८ मि.३९ उ. । द्यूतक्रीड़ा, अन्नकूटः । गोवर्धनपूजनोत्सवः ।
२	शु.	२३।१	दि.	१।५१	अ.	०।५८	प्र.	६।५९	अ.	२३।२४	कौ.	२३।०६	वृ. ५७।०६	२८।१५।४१	२६।५४	६।३७	५।२३	६।४६	२९	१४	ज्येष्ठाक्षयः घं. ५६।८ । चन्द्रदर्शनम् । भ्रातृद्वितीया, चित्रगुप्तपूजा च । मं. ५१।६ उ. ।
३	शु.	१०।४१	,,	११।४२	मू.	५३।५२	रा.	४।११	सु.	१५।१७	ग.	१४।४१	धनु	२९।१६।२३	२६।५१	६।३८	५।२२	६।४२	३०	१५	भ. ४७।१३ उ. । मं. ६।६ या. । पश्चिमास्तो बुधः ४५।२९ । मासान्तः । ** घं. १२ उ. । त्रेतायुगान्तः ।
४	श.	१२।४२	,,	११।४४	पू.	५०।५९	,,	३।०२	धृ.	८।५६	वि.	१२।४५	धनु	००।१७।०५	२६।४८	६।३८	५।२२	६।३८	१	१६	भ. १२।४५ या. । वि. ४ घ. वृश्चिके रविः २३।५२ मु. ३० फलं साम्यम् । विष्णुपदीसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा **
५	र.	८।४१	,,	१०।०७	उ.	४६।६०	,,	२।१८	शू.	२।३३	बा.	८।४१	ध. ५।३१	१।१७।४७	२६।४५	६।३९	५।२१	मु.८।५७	२	१७	वज्रयोगक्षयः घ. ५४।१७ । मासादिः । प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य पूर्वदिन कृत्यम् (खरना) ।
६	चं	५।२४	,,	८।५०	श्र.	४८।१५	,,	१।५८	वृ.	५१।५७	तै.	५।२४	मकर	२।१८।२९	२६।४२	६।४०	५।२०	८।५३	३	१८	क्षीणः शुक्रः ३९।१४ । [illegible] ३९।१४ उ. । प्रतिहारषष्ठीव्रतम् (छठि) । सायंकालीनार्घदानम् । ‡
७	मं.	३।११	,,	७।५८	ध.	४८।३२	,,	२।०६	ध्रु.	४८।००	व.	३।१३	म. १८।२३	३।१९।११	२६।३९	६।४१	५।१९	८।४९	४	१९	भ. ३।१३ उ. ३२।४२ या. । प्रातःकालीनार्घदानम् । प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य पारणा । सामापूजारम्भः अनुराधायां ††
८	बु.	२।१७	,,	७।३६	श.	५०।०३	,,	२।४२	व्या.	४५।०३	व.	२।१७	कुम्भ	४।१९।५२	२६।३६	६।४१	५।१९	८।४५	५	२०	गोपाष्टमी८ । यमदंष्ट्रारम्भः ।
९	बृ.	२।३७	,,	७।४४	पू.	५२।५०	,,	३।४९	ह.	४३।०५	कौ.	२।३७	कु. ३५।०८	५।२०।४६	२६।३३	६।४१	५।१९	८।४१	६	२१	अक्षय ९ नवमी । त्रेतायुगादिः । द. ति. २।३७ उ. । ‡ पञ्चकारम्भः (भद्रा) ४८।१२ उ. ।
१०	शु.	५।११	,,	८।४७	उ.	५६।४८	,,	५।२५	व.	४२।०५	ग.	५।१३	मीन	६।२१।४०	२६।३०	६।४२	५।१८	८।३७	७	२२	भ. ३६।९ उ. । द. ति. ५।१३ या. । †† रविः ४४।१८ ।
११	श.	७।६	,,	९।३२	रे.	६०।००	अहोरात्र		सि.	४१।५८	वि.	७।०६	मीन	७।२२।३४	२६।२८	६।४२	५।१८	८।३३	८	२३	भ. ७।६ या. । मं. ४९।५० उ. । देवोत्थानएकादशीव्रतम् सर्वेषाम् । भीष्मपञ्चकव्रतारम्भः । गृहप्रवेशोऽवास्तुश्च ।
१२	र.	११।६	,,	११।०९	रे.	१।५०	दि.	७।२७	व्य.	४२।३७	वि.	११।०६	मी. ९।५०	८।२३।२८	२६।२६	६।४३	५।१७	८।२९	९	२४	श्रीदामोदर द्वादशी । तुलसीवृक्षेण पारणा । [illegible] । [illegible]व्रतारम्भः । नवान्नपार्वणम् । ***
१३	चं.	१५।५२	,,	१।०४	अ.	७।४२	,,	९।४८	व.	४३।४१	तै.	१५।५२	मेष	९।२४।२२	२६।२४	६।४३	५।१७	८।२५	१०	२५	चतुर्दशीव्रतम् । विद्यापतिस्मृतिदिवस् । गृहप्रवेशः । *** घं. ४।५० या. । पञ्चकान्तः (भद्रा) १।५० उ. । * मन्वादिः ।
१४	मं.	२१।१९	,,	३।१२	भ.	१४।०५	,,	१२।२२	प.	४५।०३	व.	२१।०९	मे. ३०।४३	१०।२५।१६	२६।२२	६।४४	५।१६	८।२१	११	२६	भ. २१।९ उ. ५३।५१ या. ।
१५	बु.	२६।३२	,,	५।२१	कृ.	२०।३९	,,	२।५८	सि.	४६।२३	व.	२६।३२	वृष	११।२६।१०	२६।२०	६।४४	५।१६	८।१७	१२	२७	कार्तिकी-पूर्णिमा-१५ । श्रीहरिहरक्षेत्रस्नानम् । सोनपुरमेला । सामाविसर्जनम् । भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः । *

आकाशक ग्रह— (काल—उत्तर-पूर्वमे)

याम्यायन, याम्यगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु । शुद्ध-अशुद्ध समय । बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. श. पश्चिमास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—यत्रतत्र वर्षाक योग साधारणतया नीके अछि, समय सुखद रहत ।

विशेष कथन—यमद्वितीयायाम्—या तु भोजयते नारी भ्रातरं युग्मके तिथौ । अर्चयेच्चापि ताम्बूलैर्न सा वैधव्यमाप्नुयात् । भ्रातुरायुःक्षयो राजन् न भवेत्तत्र कर्हिचित् । भगिन्या पठनीयो मन्त्रः—भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम् । प्रीतये यमराजस्य यमुनायाः विशेषतः ॥ ज्येष्ठभगिन्यास्तु—'भ्रातर्ज्येष्ठाऽनुजाताऽहम् ।' इति शेषः॥ छठिमे संकल्प—नमोऽद्येत्यादि इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुःखदारिद्र्यसकलपातकक्षयअपस्मारकुष्ठादिमहाव्याधिसकलरोगक्षयचिरजीविपुत्रादिलाभगोधनधान्यादिसमृद्धि-सुखसौभाग्यअवैधव्यसकलकामावाप्तिकामा अद्य स्वांश्च सूर्यायार्घमहं दास्ये इति संकल्प्य नमो भगवते सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य पूजनादिकं कुर्यात् ॥ एकादश्यां रात्रौ देवोत्थापनम्—ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः । प्राप्तातवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ ॥ मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्रः शारदपुष्पाणि मनोहराणि । अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द, त्यज निद्रां जगत्पते । त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम् ॥

रा.
सू.
र.
बु. के.
मं.
चं.
शु. श.

का.शु. १ बु. मि. बा. ४३।२९		
र.	६।२७।१४।५९	६०।३६
मं.	५।१६।०४।४७	३७।४४
बु.	७।१५।०२।४२	१०।२५
बृ.	९।१७।१३।३६	७।०३
शु.	६।१२।२२।४७	७५।०७
श.	७।०४।५५।१०	७।३०
के.	११।१६।५२।१२	३।११
रा.	०।१६।५२।१२	३।११
च.	२२।१७।५४	—

का. शु. ८ बु. मि. बा. ४३।१८		
र.	७।०४।१९।५१	६०।४६
मं.	५।२०।२९।०१	३७।११
बु.	७।११।१८।३७	४९।३१
बृ.	९।१८।०९।५०	७।५७
शु.	६।२१।०८।१८	७५।०७
श.	७।०५।४४।३९	७।०३
के.	६।१६।२९।५५	३।११
रा.	०।१६।२९।५५	३।११
च.	२२।१७।५५	—

[शेष पृष्ठ १७ पर]

मार्गकृष्णपक्षः । संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् ११९३ साल, अं० नवम्बर-दिस० १९८५ ई० । "गोमूत्रकत्व रीति व्यवहार करो ।
"कस्तूरीवरकुङ्कुमागुरुयुतमुष्णाम्बु शीर्षं तथा स्निग्धं स्त्रीषु सुखं सुकम्बलवनं सेवेत हेमन्तके ।" मङ्गलाक विषये आमिल*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः सू. राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	चं. अ. घं. मि.	से. ता.	अं. ता.	
१	बृ.	३१।३२	रा. ६।५७	रो. २६।५०	सं. ५।२८	सि. ४७।१६	कौ. ३१।३२	वृ. ५६।३५	१२।२७।१४	२६।१८	६।४४	५।१६	८।१३	१३	२८	पूर्वे दिशि यात्रा । सूत्रोत्थानम् । लतापादपादिरोपणम् ।*
२	शु.	३५।४६	,, ८। ५	मृ. ३२।१६	रा. ७।४१	सा. ४७।३६	तै. ३।४०	मिथुन	१३।२८।१८	२६।१६	६।४५	५।१५	८। ६	१४	२९	भैषज्यपान दिनम् । गुल्मलतौषधीनां रोपणदिनम् गृहप्रवेशो वास्तुश्च ।
३	श.	३८। ३	,, १०।२२	आ. ३६।५५	,, ८।३१	शु. ४७। ४	व. २।५६	मिथुन	१४।२८।२२	२६।१४	६।४५	५।१५	८। ५	१५	३०	म. २।५६ उ. ३८।३ या. । *नवकन्याः पाकारम्भदिनम् ।
४	र.	४१।११	,, ११।१३	पु. ४०।२३	,, १०।५४	शु. ४५।४१	व. १०। ७	मि. २४।३१	१५।३०।२६	२६।१३	६।४५	५।१५	८। १	१६	१	पूर्वोदितो बुधः ३८।५।श्रीगणेश ४ व्रतम् । (दिसम्बर १२) ।
५	चं.	४१।५६	,, ११।३२	पु. ४२।३४	,, ११।४८	ब्र. ४३।१४	कौ. ११।३३	कर्क	१६।३१।३०	२६।१२	६।४६	५।१४	७।५७	१७	२	ज्येष्ठायां रविः ५२।५ । षीठ ५। श्रीमनसादेवी शयनम् ।
६	मं.	४१।२४	,, ११।२०	श्ले. ४३।२८	,, १२। २	ऐ. ३९।४६	ग. ११।४०	क. ४३।२८	१७।३२।३३	२६।११	६।४६	५।१४	७।५३	१८	३	म. ४१।२४ उ. । गं. ३२।२८ उ. ४७।२८ या. ।
७	बु.	३९।३९	,, १०।३८	म. ४३।११	,, १२। २	वै. ३५।२४	वि. ९।३१	सिंह	१८।३३।३६	२६।१०	६।४६	५।१४	७।४९	१९	४	म. ९।३१ या. । मार्गी बुधः ४६।५ ।
८	बृ.	३६।५०	,, ९।३०	पू. ४१।४८	,, ११।२९	वि. ३०। ९	बा. ८।१४	सि. ५६।१५	१९।३४।४८	२६। ८	६।४६	५।१४	७।४५	२०	५	पूर्वोत्तरयोर्यात्रा–मध्यमा ।
९	शु.	३३। ४	,, ८। १	उ. ३९।३६	,, १०।३७	प्री. २४। ६	तै. ४।५७	कन्या	२०।३६। ०	२६। ६	६।४७	५।१३	७।४५	२१	६	द. ति. ३३।४ उ. ।
१०	श.	२८।२७	,, ६।१०	ह. ३६।३३	,, ९।२४	आ. १७।२३	व. ०।४६	क. ५४।३०	२१।३७।११	२६। ४	६।४७	५।१३	७।३७	२२	७	म. ००।४६ उ. २८।२७ या. द. ति. २८।२७ या. ।
११	र.	२३।१२	दि. ४। ५	चि. ३२।५७	,, ७।५८	सौ. १०। ९	बा. २३।१४	तुला	२२।३८।२२	२६। ३	६।४७	५।१३	७।३३	२३	८	उत्पन्ना एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	चं.	१७।३५	,, १।५०	स्वा. २८।५५	,, ६।२२	शो. २।३२	तै. १४।३५	तुला	२३।३९।३३	२६। २	६।४८	५।१२	७।२९	२४	९	प्रतिपच्चयोपक्षयः, द. ५२।१० । प्रदोषत्रयोदशी व्रतम् ।
१३	मं.	११।४१	,, ११।२९	वि. २४।४१	वि. ४।४१	सु. ४६।४५	व. ११।४३	तु. १०।४६	२४।४०।४४	२६। १	६।४८	५।१२	७।२५	२५	१०	म. ११।४१ उ. १८।२७ या. । चतुर्दशी-१४ व्रतम् ।
१४	बु.	५।१०	,, ८।५२	अ. २०।२३	,, ३। १	धृ. ३६।५६	श. ५।१०	वृश्चिक	२५।४१।५५	२६। ०	६।४८	५।१२	७।२१	२६	११	पूर्वोदितः शनिः २८।१ ।
३०	बृ.	०। ७	प्रा. ६।५२	ज्ये. १६।४१	,, १।२६	शू. ३१।२०	ना. ०। ७	वृ. १६।४१	२६।४३।१३	२५।५८	६।४९	५।११	७।१७	२७	१२	प्रतिपत् क्षयः द. ५४।४१ । गं. १०।४१ उ. २५।४१ या. मार्गी-अमा-३० । पार्वणम् ।

[पृष्ठ १६ के शेषांश]

का. शु. १५ शु. मि. का. ४१।१०

र.	७।११।२६।१०	६०।५९
मं.	५।२४।४२।५९	३७।३१
बु.	७। ५।४०।४८	५१। २
बृ.	९।१९।१२।४९	८।५१
शु.	६।२९।५६। २	७५। ७
श.	७। ६।२४।१०	७।३०
के.	६।१६। ७।३९	३।११
रा.	०।१६। ७।३९	३।११
ल.	२२।१७।५६	—

मार्ग. कृ. ७ बु. मि. का. ४३।५

र.	७।१८।३३।२६	६१। ८
मं.	५।२६।० ।४५	३६।५९
बु.	७।२ ।५३।२७	६।२३
बृ.	३।२०।२१।३५	१०।३८
शु.	७।८ ।४२।४६	७५।४२
श.	७।७ ।२४।३८	७।३०
के.	६।१५।४५।२३	३।११
रा.	०।१५।४५।२३	३।११
ल.	२२।१७।५७	—

मा. कृ. १४ बु. मि. का. ४३।०

र.	७।२५।४१।५२	६०।१५
मं.	६।३ ।१६।४१	३५।४६
बु.	७।५ ।२ ।९	३६।१९
बृ.	९।२१।३५।११	११।१२
शु.	७।१७।३१।२३	७५।४२
श.	७।८ ।११। ५	७।३०
के.	६।१५।१ । ८	३।११
रा.	०।१५।१ । ८	३।११
ल.	२२।१७।५८	—

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

वाम्यायन-याम्यगोल, हेमन्त ऋतु, अगुढ समर्थ । बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, ता. १ के. बु. पूर्वोदित, श. पश्चिमास्त, ता. ३ के शु. पूर्वास्त । शेष ग्रह पूर्वोदित, ता. ४ के. बु. मार्गी ।

मौसम—एहि पक्ष मे वर्षाक योग नीक अछि । समय सुखद रहत ।

विशेष कथन—पञ्चोपचार पूजासामग्री—चानन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य । **षोडशोपचार**—"आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा । मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च ।। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा ।।" **पञ्चगव्य**—"गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ।।" **जैमिनीक मतानुसार आयुसाधन**—१. लग्नेश-अष्टमेशासँ, २. लग्न-चन्द्रमासँ, ३. लग्न-होरालग्नसँ । चन्द्रमा लग्न या सप्तममे होथि त लग्न-चन्द्रसँ, अन्यथा शनि-चन्द्रसँ । **दीर्घायु**:—चरे लग्नेशः चरे अष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः द्वि० लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः । **मध्यायु**:—चरे लग्नेशः स्थिरेऽष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः चरेऽष्टमेशः द्वि० लग्नेशः द्वि० अष्टमेशः । **अल्पायु**:—चरे लग्नेशः द्वि० अष्टमेशः, स्थिरे लग्नेशः अष्टमेशश्च, द्वि० लग्नेशः चरेऽष्टमेशः । तीन प्रकारसँ वा दू प्रकारसँ आयु आबए से ग्रहण करी, तीनू प्रकारसँ भिन्नता भेने लग्न-होरा लग्नसँ जे आयु प्राप्त होए से ग्राह्य । **होरा लग्न**—पलात्मक इष्टमे ५ भागसँ लब्धि अंशादि, तकरा राशि आदि बना सूर्यमे जोड़लासँ होरा लग्न होइछ । विषमेऽङ्के रवौ योज्यं समेऽङ्के लग्नमादिषु ।" दीर्घायु ९६, १०८, १२०, मध्यायु ६४, ७२, ८०, अल्पायु ३२, ३६, ४० वर्ष ।

रा. बृ. के. चं. शु. बु. मं. श.

मार्गशुक्लपक्षः । संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, ई. दिसम्बर १९८५ ई० ।
"त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशाः सू.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	चं. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	
२	शु.	३। ०	रा. २।४९	मू. १३। ६	दि. १२। २	गं. २४। ७	बा. २२।२४	धनु	२७।४४।३१	२५।५६	६।४६	५।११	७।१३	२८	१३	चन्द्रदर्शनम् । हरितोव्रतम् ।
३	श.	४।१२	,, १।१४	पू. १०।१०	,, १०।५३	वृ. १७।२८	तै. १८। १	ध. २४।४०	२८।४५।४६	२५।५४	६।४६	५।११	७। ६	२९	१४	मासान्तः । उमामाहेश्वरव्रतम् ।
४	र.	४२।२६	,, ११।५६	उ. ८। ९	,, १०। ५	ध्रु. ११।२६	ब. १४।२६	मकर	२६।४७। ७	२५।५३	६।४८	५।११	७। ५	३०	१५	मूले धनुषि रविः ५५।४१, मु. ३० फलं सामान्यम् । भ. १४।२६ उ. ४८।५६ या. ।
५	चं.	४०।२४	,, ११।१२	श्र. ७। १	,, ६।१८	व्या. ३।१७	ब. ११।५५	म. ३७। २	०।४८।२५	२५।५२	६।५०	५।१०	श. ६। ७	१	१६	मासादिः । षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ या. । विवाहपंचमी (श्रीजानकी विवाहोत्सवः)†
६	मं.	४०।७	,, १०।५३	ध. ७। ३	,, ६।१२	ह. १।५६	को. १०।३०	कुम्भ	१।४९।४३	२५।५१	६।५०	५।१०	६। ३	२	१७	वज्रयोगदण्डादिः ५६।४० । † श्रीबलदेवजयन्ती । पञ्चकारम्भः (भद्वा) ७।१ उ. ।
७	बु.	४०।१६	,, ११। ४	श. ८।१६	,, १०। ८	सि. ५६।१६	ग. १०।२५	कु. ५७।३८	२।५१। ०	२५।५०	६।५०	५।१०	८।५९	३	१८	भ. ४०।३६ उ. ।
८	बृ.	४२।२७	,, ११।४६	पू. १०।४६	,, ११। ८	व्य. ५४।५६	वि. ११।३१	मीन	३।५२।२३	२५।४९	६।५०	५।१०	८।५५	४	१९	भ. ११।३१ या. ।
९	शु.	४४।१२	,, १२।५६	उ. १४।१२	,, १२।३६	व. ५४।३०	बा. १३।५४	मीन	४।५३।४६	२५।४८	६।५०	५।१०	८।५१	५	२०	लतापादपादिरोपणम् ।
१०	श.	५५।३६	,, २।३८	रे. १९।२१	,, २।३४	प. ५४।५१	तै. १७।५६	मी. १७।२१	५।५५। ९	२५।४८	६।५०	५।१०	८।४७	६	२१	भं. ७।२१ उ, २२।२१ या. । पञ्चकान्तः (भद्वा) १९।२१ उ. ।
११	र.	५७।१८	,, ४।३३	अ. २५। ४	,, ४।५२	शि. ५५।४७	वि. २१।५३	मेष	६।५६।३२	२५।४८	६।५०	५।१०	८।४३	७	२२	भ. २१।५३ उ. ५४।१८ या. । मोक्षदाएकादशीव्रतं स्मार्तानाम् ।
१२	चं.	५९।१९	,, ६।४२	भ. ३१।२६	रा. ७।२४	सि. ५७। ५	व. २६।५८	मे. ४८। ४	७।५७।५४	२५।४८	६।५०	५।१०	८।३९	८	२३	श्रीकेशव १२, गोमूत्रेण पारणा । वैष्णवानामेकादशीव्रतम् ।
१३	मं.	६०।०	अहोरात्र	कृ. ३८।००	,, १०। २	सा. ५८।२३	कौ. ३२।२९	वृष	८।५९।१६	२५।४८	६।५०	५।१०	८।३५	९	२४	प्रदोषत्रयोदशी व्रतम् । चुह्लिकास्थापनम् ।
१३	बु.	०। १	दि. ८।५१	रो. ४४।२०	,, १२।३४	शु. ५९।२७	तै. ५। १	वृष	१०।०।३८	२५।४८	६।५०	५।१०	८।३१	१०	२५	चतुर्दशी १४ व्रतम् ।
१४	बृ.	१०। २	,, १०।५१	मृ. ५०। ४	,, २।५२	शु. ६०।००	ब. १०। २	वृ. १७।१२	११। २। ४	२५।५०	६।५०	५।१०	८।२७	११	२६	भ. १०।२ उ. ४२।१० या. ।
१५	शु.	१४।१८	,, १२।१३	आ. ५४।५६	,, ४।४८	ब्र. ५९।४८	ब. १४।१८	मिथुन	१२। ३।३०	२५।५१	६।५०	५।१०	८।२३	१२	२७	मार्गी-पूर्णिमा-१५ । स्नानम् ।

मा. शु. ७ बृ. मि. मा. ४२।५५

र.	८। २।५१। ०	६१।२१
मं.	६। ७।३१।३८	३८।२६
बु.	७।११।१६।११	६६।५७
बृ.	९।२२।५६।२३	११।३७
शु.	७।२६।२२।१०	७५।४२
श.	०। ९। १।५६	६।२३
के.	६।१५। ०।५३	३।११
रा.	०।१५। ०।५३	३।११
म.	२२।१७।५९	—

मा. शु. १३ बु. मि. मा. ४२।१४

र.	८।१०। ०।३९	६१।२४
मं.	६।११।४५।३७	३६।३९
बु.	७।२०। ९।१०	८६।५४
बृ.	९।२४।३०।४७	१२।३९
शु.	८। ५।१२।३१	७५।४२
श.	७। ९।४६।५९	६।३३
के.	६।१४।३८।३८	३।११
रा.	०।१४।३८।३८	३।११
म.	२२।१८। ०	—

आकाशक दशा— (काल—पूर्वमे)

वाम्यावर, वाम्य-गोल, हेमन्त ऋतु । प्रवृत्त समय । सब ग्रह मार्गी, शु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—एहिपक्ष मे वर्षाक योग नीक । दक्षिणदिशा मे झंझावातक विशेष सम्भावना, समय सामान्य, शीतलहरीक सम्भावना ।

विशेष कथन—मार्गमासीय शुक्लपक्षीयप्रथमरविवासरादौ रविव्रतारम्भः । वैशाखमासे तच्छुक्लपक्षीयान्तिमरविवासरे तद्व्रतविराम इति स्मृतिप्रमाणम् । नक्षत्रबोधक-निर्णय—कृत्यसार परिशिष्टमे कोनो मतसँ ११ अंश, कोनोसँ १५ और कोनोसँ २३ वृश्चिकांश ग्राह्य, मृगनेत्रासँ पूर्वहि कर्त्तव्य लिखल अछि । ध्रुवतारा द्वारा लग्नक ज्ञान—ध्रुवक चारू कात १ श्वेत आ १ लाल (शूलिनी) नामक तारा २४ घंटामे मेषसँ मीन धरि घुमैत अछि । ध्रुवसँ पश्चिममे वृ., वायव्यमे मि., उत्तरमे कर्क, सि., ईशानमे कन्या. पूर्वमे तु. वृ., आग्नेयमे धनु., दक्षिणमे म. कु., नैऋत्यमे मीन । शूलिनी पश्चिमादि हो तँ क्रमशः मेष-वृषादि लग्न जानी । लग्नमान—घं. मि. से. मेष-मीन—१।२७।१५, वृष-कुम्भ—१।४०।२४, मिथुन-मकर—२।१।१२, कर्क-धनु—२।१७।१२, सिंह-वृश्चिक—२।१८।४९, कन्या-तुला—२।१४।१२, चन्द्रोदयास्त साधन—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं पमरहितं सहितं सितपक्षे । विषयशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च ॥ उदाहरण—कोनो कृष्णपक्ष पंचमीक रात्रिमान ३०। ३०×५=१५०, १५० – २=१४८, १४८÷१=६।५२ लब्ध चन्द्रोदयमान ।

	रा.	चं.
		बृ.
	मं. के.	र.
		बु. शु. श.

"सर्वे सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्योदयाः प्र.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	च. ल. घं. मि.	से. गते	अं. ता.
१	श.	१७।२६	दि. १।४८	पु. ३८।४४	रा. ६।२०	ऐं. ३८।४५	कौ. १७।२६	मि. ४२।४७	१३। ४।५६	२३।५२	६।५०	५।१०	८।१९	१३	२८
२	र.	१९।१२	,, १।३८	पु. ६०।००	,, अहोरात्र	वै. ३६।३६	ग. १९।१२	कर्क	१४। ६।२१	२३।५३	६।४९	५।११	८।१५	१४	२९
३	चं.	२०।१४	,, २।५५	पु. १।१५	दि. ७।१९	वि. ३३।३१	वि. २०।१४	कर्क	१५। ०।४६	२३।५४	६।४९	५।११	८।११	१५	३०
४	मं.	१९।३८	,, २।४०	श्ले. २।२८	,, ७।४८	प्री. ४९।२६	बा. १९।३८	क. २।२८	१६। ९।११	२३।५५	६।४९	५।११	८। ७	१६	३१
५	बु.	१७।४९	,, १।५७	म. २।३१	,, ७।४९	आ. ४७।२७	तै. १७।४९	सिंह	१७।१०।३६	२३।५६	६।४९	५।११	८। ३	१७	१
६	बृ.	१४।५७	,, १२।४७	पू. १।३४	,, ७।२२	सौ. ३८।४०	व. १४।५७	सिं. १५।१४	१८।१५।००	२३।५७	६।४८	५।१२	७।५९	१८	२
७	शु.	११। ७	,, ११।१५	ह. ५६।२५	रा. ५।२९	शो. ३२।११	व. ११। ७	कन्या	१९।१९।२४	२४। ०	६।४८	५।१२	७।५५	१९	३
८	श.	६।२६	,, ९।२२	चि. ५३।०६	,, ४। २	अ. २५। ६	कौ. ६।२६	क. २४।५०	२०।२३।४८	२४। २	६।४८	५।१२	७।५१	२०	४
९	र.	१।१२	,, ७।१९	स्वा. ४९।११	,, २।२७	सु. १७।३५	ग. १।१२	तुला	२१।२८।१२	२४। ३	६।४७	५।१३	७।४७	२१	५
११	चं.	४९।४१	रा. २।४०	वि. ४५। ३	,, १२।४८	धृ. ९।४६	व. २२।१८	तु. ३१। ५	२२।३२।३५	२४। ४	६।४७	५।१३	७।४३	२२	६
१२	मं.	४३।५९	,, १२।१९	अनु. ४०।५१	,, ११। ७	शू. १।५२	कौ. १६।४६	वृश्चिक	२३।३६।५८	२४। ५	६।४७	५।१३	७।३९	२३	७
१३	बु.	३८।१०	,, १०। ३	ज्ये. २६।५२	,, ९।३२	वृ. ४६।१९	ग. ११।००	वृ. ३६।५२	२४।४१।२१	२४। ६	६।४७	५।१३	७।३५	२४	८
१४	बृ.	३२।५४	,, ०।५६	मू. ३३।१७	,, ८। ५	ध्रु. ३८।५६	वि. ५।३२	धनु	२५।४९।३७	२४। ८	६।४६	५।१४	७।३१	२५	९
३०	शु.	२८।१०	दि. ६।२	पू. ३०।१४	,, ६।५२	व्या. ३२। ४	च. ०।३२	धनु ४४।४१	२६।३७।५३	२४।१०	६।४६	५।१४	७।२७	२६	१०

पूर्वाषाढ़े रविः ३८।२४, द० ति० १७।२६ उ०। म० ४९।५३ उ०। द० ति० १९।३२ या०। म० २०।१४ या०। गं० ५१।२८ उ०। बौधवेत ४ व्रतम्। गं० ६।२८ या०। जनवरी १९८५ ई० प्रारम्भः। म० १४।५७ उ० ४३।२ या०। उत्तराफल्गुनीक्षयः दं० ५८।००। पूर्ववासिणयोर्दशा दिवा घं० १२ उ०। अपूपाष्टका ८। दशमीक्षयः दं० ५४।२१, म० २९।३४ उ० ५२।३३ या०। सकला एकादशीव्रतं सर्वेषाम्। गण्डयोगक्षयः दं० ५२।८ पूर्वास्तो बुधः १२।३। म० ३८।१० उ०। गं० ३०।५२ उ० ४५।५२ या०। प्रदोषव्रतमोदकोत्सवम्। वर्षारम्भः रात्रौ* भ ५।३२ या०। चतुर्दशीव्रतम्। *घं. ९ मि. ३२ उ.। उत्तराषाढ़े रविः ३६।३। पौषी-अमा-३०। पार्वणम्।

श्री प्रभुनाथ प्रसाद के लड़की जन्म ६।४०। रात्रि … ५० कुमार … मूल्य 2.00

श्री शम्भु झा के लड़का। जन्म १०।१०। दिन में तृतीय

पौ. कृ. ५ बु. मि. का. ४२।३४		
र.	६।१५।५०।२३	६१।११
मं.	९।११।५०।२३	३६।१९
बु.	८।००।४३।४९	९६।२६
बृ.	९।२५।४९।०३	१३।२७
शु.	८।१४। ४।२७	७५।४२
श.	७।१०।३१। ७	६।११
के.	६।१४।११।२३	३।११
रा.	०।१४।१६।२३	३।११
ल.	२२।१८।११	—

आत्मज्ञान काल— (काल—पूर्वमे)

याम्यायन, याम्यगोल, हेमन्त ऋतु, कलुष समय। सब ग्रह मार्गी, बु.-पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित। ता. बु० ७ बु० पूर्वास्त।

बीहन—एहि पक्षमे वर्षाक योग नीक। समय सुखद।

विशेष कथन—एहि वर्ष पौषी अमा, अशुभ दिनमे तथा दीपावली वा होलिका शुभ दिनमे पड़ल अछि जकर फल—दुर्भिक्ष तथा सुभीक्ष कहल गेल अछि। पूसक पछबा बसात नीक नहि मानल गेल अछि, एहिसँ उपज स्वल्प होइछ। पौषकृष्ण सप्तमीमे घटा मात मेलासँ भाद्रो एवं आश्विनीमे नीक वर्षा होइछ। पौषकृष्ण त्रयोदशीमे घटा मेलासँ श्रावणी अमा धार, पूर्णिमामे नीक वर्षा होइछ। "पूस अमावस मूल को सरसँ चारों वाय (वायु)। निश्चय बाँधो झोपड़ी, वर्षा होय सवाय।" "सोम, शुक्र, गुरु दिवस, पौष अमावस होय। घर-घर बाजे बधावड़ा, दुखी न देखे कोय" ॥ पौषमे शनिक सुवर्णादि चरणविचार—शनिक राशि-संचार समय चन्द्रमा जन्म राशिसँ १।६।११ मे होथि त सुवर्णपाद, २।५।९मे रजतपाद, ३।७।१०मे ताम्रपाद, आ ४।८।१२में लौहपाद, गोचरीमे शनि अशुभ रहितहुँ सुवर्णपादमे शुभ, रजतपादमे मध्यम, ताम्रपादमे न्यून अशुभ, लौहपादमे पूर्ण अशुभ। साढ़े साती शनिक ९० मासक स्थान विवरण—मस्तकमे ७ मास, नेत्रमे ६ मास हानि, मुखमे ८ मास, कण्ठमे ६, हृदयमे १०, उदरमे ११ मास सर्वत्र लाभे, नाभिमे ४ मास, गुह्य स्थानमे ५ हानि, जानुमे १४, जाँघमे-११, पैरमे ५ मास कष्ट।

रा. । बृ. । मं. के. । बु. । र. । शु. । श.

पौ. कृ. ११ बु. मि. का. ४३। ३		
र.	८।२४।४१।२१	६१।१४
मं.	९।२०।१०।२९	३६।३१
बु.	८।१२।१९।५३	१०३।३१
बृ.	९।२७।२०।४०	१३।२०
शु.	८।२२।५६।२६	७५।४२
श.	७।११।१३।१४	५।३५
के.	६।१३।५८। ८	३।११
रा.	०।१३।५४। ८	३।११
ल.	२२।१८। २	—

"शतकविवाहेषु आर्द्रे होमार्पणे वर्षे । आरम्भे सुतकं न स्यात्कारम्भे तु सुतकम् ॥

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः अ. म. राशी	दि. मा. द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	च. अ. घं. मि.	जे. गते	ई. ता.	पौषशुक्लपक्षः ।
१	श.	२४।१६	दि. ४।२८	उ. २८।३	रा. ५।५६	हृ. २५।५४	ब. २४।१६	मकर	२७।३६। ६	२६।१२	६।४६	५।१४	७।२१	२७	११	द. ति. २४।१६ लतापादपादिरोपणम् ।
२	र.	२१।१८	,, ३।१६	श. २६।४१	सं. ५।२५	व. २०।२५	कौ. २१।१८	म. ५६।३४	२८।३५।२५	२६।१३	६।४५	५।१५	७।१६	२८	१२	चन्द्रदर्शनम् । द. ति. २१।१८ वा. । पञ्चकारम्भः (अथवा) २६।४१ उ. ।
३	चं.	१८।३१	,, २।२०	ध. २५।२७	,, ५।२०	सि. १५।४७	ग. १६।२३	कुम्भ	२९।३२।४१	२६।१४	६।४५	५।१५	७।१५	२९	१३	मासान्तः । म. ४८।५१ उ. ।
४	मं.	१६।४२	,, २।१४	श. २७।७५	रा. ५।४३	व्य. १२। ६	वि. १८।४२	कुम्भ	०।३०।५७	२६।१५	६।४५	५।१५	७।११	१	१४	म. १८।४२ वा. । उ.वा. २ घ. मकरे रविः १५।५३ । मु. १५ कर्म महर्घम् सौम्यायन संक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा *
५	बु.	१६।२१	,, २।२६	पू. २८।३७	,, ६।३६	व. ६।२८	बा. १६।२१	कु. १३।५३	१।२९।१३	२६।१६	६।४५	५।१५	म. ८।४५	२	१५	मासादिः । *घं. मि. उ. । मकरार्कः देवानां दिनं दैत्यानां रजनीप्रारम्भः १५।५३ उ. । मन्वादिः ।
६	बृ.	१७।१६	,, ३।१६	उ. ३३। ६	,, ८।००	प. ७।५१	तै. २१।१६	मीन	२।३०।४०	२६।१८	६।४४	५।१६	८।४१	३	१६	गवां क्रय-विक्रयदिनम् ।
७	शु.	१९।२३	,, ४।२९	रे. ३७।४४	,, ९।५०	शि. ७। ३	व. २४।२३	मी. ३७।४४	३।३२। ७	२६।२०	६।४४	५।१६	८।३७	४	१७	म. २५।२३ उ. ५६।२९ वा. । पं. २५।४४ उ. ४०।४४ वा. । पञ्चकान्तः (अथवा) ३७।४४ उ. ।
८	श.	२८।१५	र. ६।१०	अ. ४३।१९	,, १२। ४	सि. ७।११	व. २८।३५	मेष	४।३३।३४	२६।२२	६।४४	५।१६	८।३३	५	१८	उत्तरदिशि यात्रा ।
९	र.	३१।१२	,, ८। ९	भ. ४९।२१	,, २।२२	सा. ८।१०	बा. १ । १	मेष	५।३५। १	२६।२४	६।४३	५।१७	८।२९	६	१९	लक्षनिर्माणदिनम् । चुल्लिकास्थापनम् ।
१०	चं.	३६।५५	,, १०।१७	कृ. ५५। ७	,, ५।१०	शु. ९।१२	तै. ६ । ३	मे. ६।११	६।३६।२८	२६।२६	६।४३	५।१७	८।२५	७	२०	अ. १ घ. कुम्भे गुरुः १८।४० । लक्ष्मीवारात्कुम्भे गुरुः । विश्वकर्मा पूजा ।
११	मं.	४१।१९	,, १२।२७	रो. ६०।००	अहोरात्र	शु. १०।३६	व. ११।३७	वृष	७।३७।५४	२६।२७	६।४३	५।१७	८।२१	८	२१	म. ११।३७ उ. ४४।१९ वा. । द. ति. ४४।१९ उ. । पुत्रदा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् । सुतीस्नानम् ।
१२	बु.	४५।१६	,, २।२४	रो. २।३५	दि. ८।४४	ब्र. ११।४९	ब. १६।४७	वृ. ३५।३७	८।३९।२०	२६।२८	६।४२	५।१८	८।१७	९	२२	द. ति. ४७।१६ वा. । सोमारायण १२, गोमयेन पारणा । श्रीगोपदः ६६।५३ उ. ।
१३	बृ.	४८।२७	,, ४। ५	मृ. ८।२०	,, १०। २	ऐ. १२।३५	कौ. २१।२१	मिथुन	९।४०।३२	२६।३२	६।४२	५।१८	८।१३	१०	२३	प्रदोष प्रदोषकी व्रतम् । शिवोर्ध्वपानम् । सुतीस्नानम् । पश्चिमदिशि यात्रा दिवा घं. १० मि. २ वा. ।
१४	शु.	५०।३०	,, ५।१७	आ. १३।३७	,, १२। ८	वै. १२।४२	ग. २४।५८	मिथुन	१०।४१।४४	२६।३५	६।४१	५।१९	८। ७	११	२४	म. ५६।३० उ. । अयनान्तर्रविः २।१४ । चतुर्दशी व्रतम् ।
१५	श.	५०।२८	,, ६। १	पु. १७।३७	,, १।४३	वि. ११।५१	वि. २७।२६	मि. १।३०	११।४२।५६	२६।३८	६।४०	५।२०	८। ५	१२	२५	म. २७।२६ वा. । पौषी-पूर्णिमा-१५ । कौशिकीस्नानम् ।

पौ. शु. ५ शु. मि. का. ४३। ८

र.	८। १।२८।२१	६१।२१
चं.	६।२४।२१। २	८६।२४
बु.	८।२४।२९। ८	१०६।४१
बृ.	९।२८।५९। ४	१३।२०
शु.	९।१ ।४८।२८	७६।१७
श.	७।११।५५।२८	५।५५
के.	५।१६।१९।५६	३।११
रा.	०।१६।१९।५६	३।११
ध.	२२।१८।३	—

पौ. शु. १२ शु. मि. का. ४३।१४

र.	९। ८।३९।२०	६१।१५
मं.	६।२८।१३। ४	३६।११
बु.	९। ६।५६।२२	१०१। ७
बृ.	९।० ०।३०।१७	१३।२४
शु.	९।१०।३९।४२	७५।४२
श.	७।१२।४६। ६	४।३८
रा.	६।१३। ९।१८	३।११
के.	०।१३। ९।१८	३।११
ध.	२३।११। ४	—

आकाशस्थ ग्रह— (काल—सूर्यके)

याम्यायन—सौम्यायन, याम्यगोल । हेमन्त-शिशिर ऋतु । मकुद समय । राहु मार्गी, बु. शु. पूर्वास्त, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—एहि पक्षमे वर्षाक योग साधारण, समय सुखद ।

विशेष कथन—कौशिकीस्नान मन्त्र—"गाधिराजसुते देवि, विश्वामित्रमुनेः स्वसः । ऋचीकभार्ये, सत्यार्वे पापं मे हर कौशिकि ! सामान्य स्वप्न विचार—श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित, भावित, दोषज, एहितमने भावित (अनुभव जो प्रभुत एहि तृतीय विलक्षण), स्वप्नक फल ठीक घटित होइछ । सामान्यतः उज्वर वस्तु देखब शौक (भात, कपास, अस्थि छोड़िकए), कारी पदार्थ देखब अशुभ (ब्राह्मण, हाथी, गायके छोड़िकए) । अंगस्फुरण फलानि (पाँचि ओर बाँहिमे स्त्रीसंबंध हेतु विपरीत) हृदय—इच्छापूर्ति, कटि—प्रमोद, नाभि—भार्या-पीड़ा, छाती—विजय, भग—पतिलाभ, पेट—प्रेम, उर—धन, लिंग—पत्नीसौख्य, गुदा—वाहन प्राप्ति, वृषण—सन्तानलाभ, ओष्ठ—लाभ, हनु—भय, मस्तक—भूमिलाभ, ललाट—स्थानलाभ, स्कन्ध—भोग, भ्रूमध्य—सुख, कपोल—शुभ, दक्षिणनेत्र ऊपर—चिन्ता, वामनेत्र ऊपर—प्रियलाभ, दक्षिणनेत्र अपाङ्ग—धनागम, वामनेत्र अपाङ्ग—प्रिय हानि, नेत्रसमीप—मिलन, नेत्रकोण—कार्यलाभ, हस्त—द्रव्यलाभ, भ्रूद्वय—सौख्य, कण्ठ—ऐश्वर्य, ग्रीवा—शत्रु-भय, पृष्ठ—पराजय, मुख—सुभोजन, दक्षिणबाहु—विजय, वामबाहु—हानि, जंघा—स्वामीप्राप्ति, पादोपरि—स्थानलाभ, पादतल—नृपत्व, पादद्वय—शुभ, बाहुमध्य—धनागम, नासिका—प्रीति ।

चं.
रा.
र. बु. शु.
मं. के.
बृ.
श.

माघकृष्णपक्षः । संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, सं० जनवरी-फरवरी–१९८६ ई० । ⁸¹ नवोदकम् ॥ (२१)

मासमें सर्वसेन्छाकं वसि मासपरे त्यजेत् । यथा मासो मद्धिमध्यन्य ग्रहाणी च प्रसूतिका । दयरातेष शुध्यन्ति पुष्पिणी ।

ति.	वा.	तिथयः घं. प.	अं. मि.	नक्षत्राणि न. घं. प.	अं० मि.	योगाः यो. घं. प.	करणानि क. घं. प.	राशयः रा. घं. प.	सूर्योदयः म.-रात्रौ	दि. मा. घं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	म. ल. घं. मि.	मे. गते	सं. ता.	
१	र.	५९। ४	रा. ६।१८	पू. २०।२८	दि. २।४१	प्री. १०। ३	बा. २८।४६	कर्क	१२।४४। ८	२६।४१	६।४०	५।२०	८। १	१३	२६	लतापादपादिरोपणम् । गवां क्रय-विक्रयविनम् ।
२	चं.	५८।२२	,, ६।००	श्ले. २१। २	,, ३।२८	आ. ७।३२	तै. २८।४३	क. २२। २	१३।४५।१९	२६।४४	६।३९	५।२१	७।५७	१४	२७	नवमन्वा: पाकारम्भविनम् ।
३	मं.	५६।२७	,, ५।१४	म. २२।२२	,, ३।३६	सौ. ३।४६	व. २७।२४	सिह	१४।४६।३०	२६।४७	६।३९	५।२१	७।५३	१५	२८	शोभनयोगक्षय: दं. ५५।२७ । म. २७।२४ उ० ५६।२७ वा. । विषशस्त्रादिनिर्माणविनम् ।
४	बु.	५३।२७	,, ४। १	पू. २१।१२	,, ३।१५	श. ५३।४०	व. २४।५३	सि. ३६। ४	१५।४७।४१	२६।५०	६।३८	५।२२	७।४९	१६	२९	श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
५	बृ.	४९।३५	,, २।२८	उ. १९।४१	,, २।३०	सु. ४७।२६	कौ. २१।३१	कन्या	१६।४८।५५	२६।५४	६।३८	५।२२	७।४५	१७	३०	पूर्वदिशि यात्रा दिवा घं० २ मि. ३० वा. ।
६	शु.	४४।५१	,, १२।३३	ह. १६।५१	,, १।२१	धृ. ४०।१५	ग. १७।१३	क. ४५।१६	१७।५०। ६	२६।५७	६।३७	५।२३	७।४२	१८	३१	म. ४४।५१ उ० । पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा ।
७	श.	३९।१५	,, १०।१९	चि. १३।४५	,, १२। ५	शू. ३३।१३	वि. १२। ३	तुला	१८।५१।२३	२७। ०	६।३७	५।२३	७।३७	१९	१	म. १२।३ वा. । फरवरी–२ ।
८	र.	३३।५१	,, ८। ८	स्वा. ९।५१	,, १०।३९	गं. २५।३५	बा. ६।३३	तु. ५१।४६	१९।५२।३७	२७। ३	६।३६	५।२४	७।३३	२०	२	शाकाष्टका ८ ।
९	चं.	२७।५८	सं. ५।४६	वि. ५।४४	,, ८।५३	वृ. १७।४४	तै. ०।५४	वृश्चिक	२०।५३।५१	२७। ६	६।३५	५।२५	७।२९	२१	३	म. ५५।०० उ० । मन्वष्टका ६ ।
१०	मं.	२१। ३	दि. ३।२३	अ. १।१९	,, ७।११	ध्रु. ९।५१	वि. २२। ३	वृ. ५०।३०	२१।५४। ५	२७। ९	६।३४	५।२६	७।२५	२२	४	ज्येष्ठाक्षय: दं ५५।५८। म. २२।३ वा. । पश्चिमोदितो बुधः २२।३६ ।
११	बु.	१६।२५	,, १। ८	मू. ५३।४८	रा. ४। ५	व्या. २। ८	बा. १६।२५	धनु	२२।५६।१८	२७।१२	६।३४	५।२६	७।२१	२३	५	हर्षणयोगक्षय: दं. ५२।३५ । द. ति. १६।२५ उ० । षट्तिला एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पूर्वदिशि यात्रा १६।२५ वा. ।
१२	बृ.	११। ६	,, ११। १	पू. ४६।३६	,, २।२३	ह. ४७।४२	तै. ११। ६	धनु	२३।५७। ३	२७।१६	६।३३	५।२७	७।१७	२४	६	द. ति. ११।६ वा. । श्रविष्ठायां रविः ६।३६ । पश्चिमास्तो बुधः २६।२३ । प्रदोषव्रतम् ।
~~१३~~	~~शु.~~	~~६।२७~~	~~,, ९। ७~~	~~उ. ३८।१४~~	~~,, १।५०~~	~~सि. ४१।१९~~	~~व. ६।२७~~	~~ध. ४१।५५~~	~~२४।५७।४८~~	~~२७।२०~~	~~६।३२~~	~~५।२८~~	~~७।१३~~	२५	७	म. ६।२७ उ. ३४।३१ वा. । नरकनिवारण १४ चतुर्दशीव्रतम् ।
१४	श.	२।३५	,, ७।३३	श्र. ४६।४१	,, १।११	व्य. ३५।३४	शु. २।३५	मकर	२५।५८।१३	२७।२४	६।३१	५।२९	७। ९	२६	८	अमावस्याक्षय: दं. ५७।८। माघी-अमा–३० । पार्वणम् । सर्वकारम्भः (बवरा) ४६।४१ उ० ।

कृषि कॉ. टरस्पपात्र

मा. कृ. ४ बु. मि.-का. ५।२१		
र.	९।११।४७।४१	६१। ८
मं.	७। २।३४।१७	४२।१८
बु.	९।१९।१४।२९	१०८।१५
गु.	१०। २। ८।५२	१४।१८
शु.	९।१९।३०।५३	७५।४२
श.	७।११।१४।५८	५।११
के.	६।१२।४७।२३	३।११
रा.	०।१२।४७।२३	३।११
ल.	२१।१८। ५	—

मा. कृ. ११ बु. मि.-का. ४।५१		
र.	९।२२।५६।१८	६०।५९
मं.	७। ६।१८।३७	४५।१४
बु.	१०। १।१०।४०	९८।५२
गु.	१०। ४।१९।२४	१४।१८
शु.	९।२८।२०। ९	७५। ७
श.	७।११।५४।१०	४।११
के.	६।१२।२५। ७	३।११
रा.	०।१२।२५। ७	३।११
ल.	२२।१८। ६	—

आकाशक बात— (काल—पूर्वमे)

सौम्यायन, याम्यगोल, शिशिर ऋतु, अशुद्ध समय । सब ग्रह मार्गी. बु. शु. पूर्वास्त, शेषग्रह पूर्वोदित । ता. ५ के बु. पश्चिमोदित । ता. ६ के बु. पश्चिमास्त ।

मौसम—एहि पक्षमे मेघाडम्बर, समय सुखद, वस-तस साधारण वृष्टिक योग सम्भव ।

विशेष कथन—शिवलिङ्गपूजातः प्राक् कीर्त्तिमुखपूजा कर्त्तव्या—पद्मपुराणे ॥ शिवप्रदक्षिणा विधिः—'मासप्रसवा नारी वत्सपूर्वघटं यथा । जाह्नवी वर्त्तयेत् तथा कुर्यात् प्रदक्षिणाम् । तथा—शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा ॥ 'गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयन्तथा' (पूजा पङ्कजभास्करे) शिवपूजार्थं शिव-यात्रा-विचार—कृष्णादि तिथिसंख्याके द्विगुणित करी, ५ मोहिमे जोड़ि दी और सातसँ भाग दी—शेष १-२-३ मास शुभ । नष्ट वस्तु लाभालाभ ज्ञान—रो, पुष्य तथा उ. फ., चि. पूषा. ध. रे. अन्धाक्ष, पूर्वमे शीघ्र लाभ । मृ. श्ले. ह. अनु. उषा. श. अश्वि. मन्दाक्ष, दक्षिणमे यत्नसँ लाभ । आ. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. भ. मध्याक्ष, पश्चिम दूरमे श्रवण, अलाभ । पुन. पू. फ. स्वा. मू. ध. उभा. कृ. स्वक्ष, उत्तर, न श्रवण न लाभ । नक्षत्र भेदसँ ज्वरारम्भक फल—स्वा. ज्ये. पू. ३, आ. श्ले. अत्यन्त कष्टकारक; रे. अनु. स्थिरता; भ. ध. श. चि. ११ दिन; वि. ह. श्र. १५ दिन; मृ. कृ. अश्वि. ९ दिन; म. २० दिन; उ.भा., उ. फ. पु. पु. रो. ७ दिन; मू. उषा. १० दिन । सप्त-नाड़ी चक्र—कृ. वि. अनु. भ.—चण्डा, रो. स्वा. ज्ये. अश्वि—वायु, मृ. चि. रे.—अग्नि; आ. ह. पूषा. उभा.—सौम्या; पुन., उफ. उषा. पूभा.—नीरा; पुष्य, पूफ. अभि. ध.—जला; श्ले, म. श्र. श.—अमृता ।

	श.	गु.
		र. बु. शु.
	के.	
मं.		चं. रा.

माघशुक्लपक्षः । संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, सं० फरवरी १९८६ ई० ।
"स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते । यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे ॥"—पद्मपुराणे

ति.	वा.	तिथयः इ. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. घं. प.	सूर्यांशाः म.कु.-राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	म. ल. घ. मि.	गते	ता.	माघशुक्लपक्षः ।
१	र.	१७।५२	रा. ५।४४	ध. ४६।१२	रा. ११। २	व. ३०।४३	कि. २८।४७	म. १६।२६	२६।५९।१८	२७।२७	६।३१	५।२९	७। ५	२७	९	नृपदर्शनम् । सूचीकर्मदिनम् ।
२	चं.	१४। ७	,, ५।२५	श. ४६।५५	,, ११।१६	प. २६।४५	बा. २७।३४	कुम्भ	२८। ०। २	२७।३०	६।३०	५।३०	७। १	२८	१०	चन्द्रदर्शनम् । लतापादपादिरोपणम् ।
३	मं.	१७।५६	,, ५।४५	पू. ४८।५४	,, २। ३	शि. २३।४८	तै. २७।३८	कु. ३३।२८	२९। ०।४६	२७।३३	६।२९	५।३१	६।४७	२९	११	मासान्तः । *कलियुगान्तः । ब्दर ४ । कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनम् । भ. २९।२ उ. ।
४	बु.	१०।००	,, अहोरात्र	उ. ५२। ८	,, ३।२०	सि. २१।५०	व. २९। २	मीन	०। १।३०	२७।३६	६।२९	५।३१	६।५१	१	१२	ध. ३ घ, कुम्भे रविः ४२।२० । मु. ४५ फलं समर्घम् । विष्णुपदी सङ्क्रान्तेः पुण्यकालः विना घं. १२ उ. ।*
४	बृ.	११। ६	दि. ६।३०	रे. ५६।२८	,, ५। ३	सा. २०।५२	वि. ०। १	मी. ५६।२८	१। २।११	२७।४०	६।२८	५।३२	कु. ८। ८	२	१३	भ. ००।६ या. । मासादिः। द. ति. ०।६ या. । गं. ५६।२८ उ. । पञ्चकान्तः (भद्रा) ५६।२८ उ. । श्रीपञ्चमी,†
५	शु.	३।१४	,, ७।४५	अ. ६०।००	प्रा. ६।२७	सु. २०।४८	बा. ३।१४	मेष	२। २।१२	२७।४३	६।२७	५।३३	८। ४	३	१४	गं. १।२८ या. । पश्चिमाभिमुखयात्रा । †श्रीसरस्वतीपूजनम् ।
६	श.	७।३०	,, ९।२७	अ. १।५५	दि. ७।१३	शु. २१।२९	तै. ७।३०	मेष	३। ३।३३	२७।४६	६।२७	५।३३	८। ९	४	१५	विषशस्त्रयोर्निर्माणदिनम् ।
७	र.	१२।३०	,, ११।२६	भ. ८। २	,, ९।२९	ब्र. २२।३९	व. १२।३०	मे. २४।४०	४। ४।१४	२७।४९	६।२६	५।३४	७।५६	५	१६	भ. १२।३० उ. ४५।११ या. । माघी सप्तमी (अचलासप्तमी) । मन्वादिः ।
८	चं.	१७।२२	,, १।३५	कृ. १४।३५	,, १२।१९	ऐ. २४। ६	व. १७।२२	वृष	५। ४।५५	२७।५२	६।२६	५।३४	७।५२	६	१७	भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणम् ।
९	मं.	२३।११	रा. ३।४१	रो. २१। ६	,, २।५१	वै. २५। ७	कौ. २३।११	वृ. ५४। ९	६। ५।३५	२७।५५	६।२५	५।३५	७।४८	७	१८	पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा ।
१०	बु.	२८। २	,, ५।१७	मृ. २७।१२	,, ५।१७	वि. २६।२६	ग. २८। २	मिथुन	७। ६।१५	२७।५८	६।२४	५।३६	७।४४	८	१९	शततारकायां रविः १७।५९ । गृहप्रवेशः ।
११	बृ.	१२। ७	,, ७।१५	आ. ३२।३४	रा. ७।२६	प्री. २६।४८	व. ०। ४	मिथुन	८। ६।४७	२८। २	६।२४	५।३६	७।४०	९	२०	भ. ००।४ उ. ३२।७ या. । जया एकादशीव्रतम् सर्वेषाम् ।
१२	शु.	१३। २	,, ८।२४	पु. ३६।४७	,, ९। १	आ. २६।२१	व. ३।३४	मि. २०।४४	९। ७।१८	२८। ६	६।२३	५।३७	७।३६	१०	२१	माधव द्वादशी । गोदुग्धेन पारणा ।
१३	श.	१६।४२	,, ९। ३	पु. ३९।५५	,, १०।३०	सौ. २५। ५	कौ. ५।५२	कर्क	१०। ७।४९	२८।१०	६।२२	५।३८	७।३२	११	२२	प्रदोषत्रयोदशीव्रतम् । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा-मध्यमा । गृहप्रवेशः ।
१४	र.	१७।१९	,, ९। ५	श्ले. ४१।४७	,, ११। ४	शो. २२।४५	ग. ७। १	क. ४१।४७	११। ८।२०	२८।१४	६।२१	५।३९	७।२८	१२	२३	भ. १७।१९ उ. । गं. ३०।४७ उ. ४५।४७ या. । चतुर्दशी १४ व्रतम् । पश्चिमोदितः शुक्रः ४१।४० ।
१५	चं.	१६।२८	,, ८।५५	म. ४१।५४	,, ११। ६	म. १९।२९	वि. ६।५३	सिंह	१२। ८।५१	२८।१८	६।२०	५।४०	७।२४	१३	२४	भ. ६।५३ या. । माघी पूर्णिमा-१५ । क्षेत्रस्नानम् । कलियुगादिः ।

आकाशक हाल— (काल—पूर्व-दक्षिणमे)

सौम्यायन, गाम्यगोल, शिशिर ऋतु, अशुद्ध समय। सब ग्रह मार्गी, बु. बृ. पश्चिमोदित, शु. पूर्वास्त । ता. २३ के शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—एहि पक्षमे शीत प्रकोप सामान्य रहत, समय सुहावन रहत ।

विशेष कथन—अचलासप्तमीमे स्नानमन्त्र (सातटा अकौन तथा सातटा बैरक पात माथपर राखि)—यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी ॥ एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातं च यत्पुनः ॥ इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके । सर्वव्याधिसमायुक्तं हर माकरि, सप्तमि ।" एहि सप्तमीमे अरुणोदय कालमे स्नान कएलासँ सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ। यदि गंगामे स्नान कयल जाय तऽ कोटि सूर्यग्रहण स्नान तुल्य फल होइछ। पञ्च पञ्च उषः कालः सप्तपञ्चारुणोदयः। अष्ट पञ्च भवेत् प्रातः शेषः सूर्योदयो मतः (देवीभागवते)। **बसन्त—**मधु (चैत) आ माधव (वैशाख)सँ बसन्त होइछ। मधु एवं माधव, दूहू शब्द मधुसँ बनल अछि। मधुक अर्थ एक-प्रकारक रस मानल जाइछ जे वृक्ष, लता तथा प्राणी समकेँ उन्मत्त कऽ दैत अछि, एहि रसक प्राप्ति जाहि ऋतुमे होइछ, ओकरा बसन्त ऋतु कहल जाइछ। **बसन्तपंचमी—**पूर्ण बसन्तमे तऽ नहि पड़ैछ, मुदा बसन्तक प्रभावमे अवश्य पड़ैछ, कारण जे एहि पंचमीक आसन्न बसन्तक कुसुमाकरत्व प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होबय लगैछ—आम्रमे मञ्जरी आबि जाइछ; गुलाब, मालती आदि पुष्पित होबय लगैछ, इत्यादिसँ बसन्तपंचमी नाम कल्पना समुचिते थीक।

चं. र. रा. बु.बृ. शु. के. मं. श.

मा. शु. ४ बु. मि.मा. ४३।४८

र.	१०।००। १।१०	६०।४८
मं.	७।१०।४२। ९	३४।१५
बु.	१०।१२।१७।२९	९०।१२
बृ.	१०। ५।२८।३०	१३।२४
शु.	१०। ७। ८।२६	७५। ७
श.	७।१३।५९।५८	३।४१
के.	६।१२। २।५१	३।११
रा.	०।१२। २।५१	३।११
प.	२२।१८। ७	—

मा. शु. १० बु. मि. मा. ४३।५९

र.	१०। ७। ६।१५	६०।३६
मं.	७।१४।३७।४६	३४।१३
बु.	१०।२१।५७।४८	७७।४०
बृ.	१०। ७। ९। १	१३।२४
शु.	१०।१५।५६।५९	७५। ७
श.	७।१४।२०।५८	२।४३
के.	६।११।४०।३६	३।११
रा.	०।११।४०।३६	३।११
प.	२२।१८। ८	—

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्यांशाः कुम्भ.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कु. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	फाल्गुनकृष्णपक्षः।
१	मं.	३४।२५	रा. ८। ६	पू. ४१।४७	रा. ११। ३	सु. १५। ७	बा. ५।२६	सि. ५८।२२	१३। ६।२२	२८।२२	६।२०	५।४०	७।२०	१४	२५	पश्चिमदिशि यात्रा-मध्यमा रात्रौ घं. ८ मि. ५ ऊः घं. ११ मि. ३ या.।
२	बु.	३११९६	,, ६।१६	उ. ४०। ६	,, १०।२३	धृ. ६।५७	तै. २।५२	कन्या.	१४। ६।५१	२८।२६	६।१६	५।४१	७।१६	१५	२६	म. ५६।२१ उ.। गृहारम्भदिनम्।
३	बृ.	२७।२८	दि. ५।१७	ह. ३७।४१	,, ६।४६	शू. ३। १	वि. २७।२८	कन्या.	१५।१०।१२	२८।३०	६।१८	५।४२	७।१६	१६	२७	गण्डयोगक्षयः दं. ५४।३३। श्री गणेश ४ व्रतम्। म. २७।२८ या.। द. ति. २७।२८ उ.।
४	शु.	२२।२८	,, ३।१६	चि. ३४।३०	,, ८। ५	वृ. ५०।१४	बा. २२।२८	क. ६। ५	१६।१०।३०	२८।३४	६।१७	५।४३	७। ८	१७	२८	द. ति. २२।२८ या.
५	श.	१७। ७	,, ११। ७	स्वा.३०।४८	,, ६।३५	ध्रु. ४२।४३	तै. १७। ७	तुला.	१७।१०।४८	२८।३८	६।१६	५।४४	७। ४	१८	१	मार्च-३।
६	र.	११।२२	,, १०।४६	वि. २६।४३	दि. ४।५७	व्या. ३४।५६	व. ११।२२	तु. १२।४५	१८।११। ६	२८।४२	६।१६	५।४४	७। ०	१६	२	म. ११।२२ उ. ३८।२४ या.।
७	चं.	५।२७	,, ८।२६	अ. २२।३२	,, ३।१६	ह. २७। ६	व. ५।२७	वृश्चिक	१६।११।२४	२८।४६	६।१५	५।४५	६।५६	२०	३	अष्टमीक्षयः दं. ५४।३। शाकाष्टका ८।
६	मं.	५३।५०	रा. २।४६	ज्ये. १८।२८	,, ११३७	व. १६।२३	तै. २६।४०	वृ. १८।२८	२०।११।४२	२८।५०	६।१४	५।४६	६।५२	२१	४	पूर्वभाद्रे रविः ३२।२७। मं. १२।२८ उ. २७।२८ या.। अन्वष्टका ६ नवमी। मातृकृत्यम्।
१०	बु.	४८।३२	,, ११३८	मू. १४।४२	,, १२। ६	सि. ११।५५	व. २१।११	धनु .	२११।२। ०	२८।५४	६।१३	५।४७	६।४८	२२	५	म. २१।११ उ. ४८।३२ या.। पुष्टः शुक्रः ४१।४६ उ.। *११ वर्ष समाप्तम्।
११	बृ.	४३।४६	,, ११।४८	पू. ११।२५	,, १०।४६	व्य. ४।४७	व. १६।१०	धनु २५।४६	२२।१२। ४	२८।५८	६।१२	५।४८	६।४४	२३	६	वरीयान् योगक्षयः दं. ५३।२७। वक्री बुधः ३६।२७। लघ्वतीचारशुद्धिः १८।४० उ.। विजया एकादशी *
१२	शु.	३६।५८	;; १०।११	उ. ८।४६	,, ६।४४	प. ५२।२२	को. ११।५३	मकर.	२३।१२। ७	२६। २	६।१२	५।४८	६।४०	२४	७	दक्षिणपश्चिमयोर्यात्रा रात्रौ घं. १० मि. ११ ऊ.।
१३	श.	३७। ४	,, ८।३७	श्र. ७। ५	,, ६। १	शि. ४७।१७	ग. ८।३१	म. २६।४४	२४।१२।१०	२६। ६	६। ११	५।४६	६।३६	२५	८	म. ३७।४ उ.। प्रदोषत्रयोदशीव्रतम्। शिवरात्रिव्रतम्। श्रीमौरीविवाहोत्सवः। वज्र्यकारम्भः (बदवा)†
१४	र.	३५।१६	,, ८।१६	ध. ६।२३	,, ८।४३	सि. ४३। ५	वि. ६।१०	कुम्भ	२५।१२।१३	२६।१०	६। १०	५।५०	६।३२	२६	६	म. ६।१० या.। चतुर्दशी १४ व्रतम्। शिवदर्शनम्। पूर्वोदितो गुरुः ४१।१। †७।१६ उ.।
३०	चं.	३४।४१	,, ८। २	श. ६।५०	,, ८।५३	सा. ३६।५५	च. ४।५८	कु. ५३। २	२६।१२।१६	२६।१४	६। ६	५।५१	६।२८	२७	१०	फाल्गुनी-अमा-३०। पार्वणम्। पश्चिमास्तो बुधः १२।४१। सोमवारीव्रतम्। गोसहलिका। मन्वादिः।

संवत् २०४२, शकः १९०७, सन् १३९३ साल, ई० फरवरी-मार्च १९८६ ई०।
"व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे। आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्॥" (११)

का. कृ. २ बु. मि. का. ४४। १		
र.	१०।१४। ६।३१	६०।२१
मं.	७।१८।१३। ६	३३।१५
बु.	१०।२६।११। ६	५०।३१
बृ.	१०। ८।४८।२८	१३।२४
शु.	१०।२४।४३।२४	७५। ७
श.	७।१४। ३।५०	१।४६
के.	६।११।१८।२१	३।११
रा.	०।११।१८।२१	३।११
प.	२२।१८। ६	—

का. कृ. १० बु. मि. का. ४४।२७		
र.	१०।२१।१२। ०	६०।११
मं.	७।२२।२१।५५	३२।२०
बु.	११। २।५०। २	७।३७
बृ.	१०।१०।४०। ६	१४।१८
शु.	११। ३। ३।२४	७७।३१
श.	७।१७।४६।२५	१।४६
के.	६।१०।५६। ६	३।११
रा.	०।१०।५६। ६	३।११
प.	२३।१८।१०	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन-याम्यगोल, शिशिर ऋतु, अशुद्ध समय। सबग्रह मार्गी, मं. श. पूर्वोदित। बु. शु. पश्चिमोदित। बृ. पश्चिमास्त। ता. ६ के बु. वक्री। ता. ६ के बृ. पूर्वोदित।

मौसम—एहि पक्षमे साधारणतः दाह, समय सामान्य रहत।

विशेष कथन—शिवरात्रि—ई सर्वविदिते अछि जे संसारक उत्पत्ति, स्थिति आओर संहार तीनू विभूतिमे क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश छथि। तदनुसार परब्रह्मक जे प्रलयंकारी वा संहारकारी स्वरूप छंन्हि, उएह थिकाह रुद्र अथवा शिव, ओ रुदन करबाक कारण रुद्र आ संसारक हित करबाक कारणें शिव, परस्पर विरोधी नामसँ प्रविष्ट भेला पर उपर्युक्त सन्देह भ्रमपूर्ण सिद्ध होइछ। कारण जे बिना विनाश वा प्रलय भेने शिव वा शुभक सृष्टि नहि भय सकैछ, कोनो अन्नक, यावत् ओकर कण पृथ्वीमे भऽ विनष्ट नहि भऽ जाइछ, तावत् अनेक कारणक सृष्टि नहि भऽसकैछ। बीजकें माटिमे मिलि जायब ईश्वरक रुद्र रूप आ पुनः अनेक रूपमे प्रकट भेनाइ शिव रूप थिक। तँ एकहि शक्तिकें रुद्र आ शिव रूप जानल जाइछ, से यथार्थ थिक। एही रुद्र किम्वा शिवक महोत्सवक दिन थिक—शिवरात्रि। लिङ्गपुराणमे कहल गेल अछि जे—हवनक आगि मुहँसँ फूकी—हाथ, पंखा, आदिसँ नहि। होम एकहि हाथसँ करी, आ तर्पण दूहु हाथसँ। द्वार अथवा आचार्यक भेदसँ दू सहोदरक उपनयन एकहु मण्डपपर भए सकैछ। आचार्य एवं ब्रह्माकें क्षौरादि करएबाक चाही। (ब्रह्मवैवर्तपुराण)।

रा.
र. बु. शु. श.
के.
चं. मं. श.

"रतौ सुप्तोत्थिते स्नाते भुक्ते वान्ते च सङ्गरे । सभायां विदुषां राज्ञां कुर्यात्ताम्बूलचर्वणम् ॥ आयुःक्षयभयाद्विज्ञानुनाह्निसेवेत*

ति.	वा.	तिथयः दं. प.		घं. मि.	नक्षत्राणि न.	दं. प.		घं. मि.	योगाः यो.	दं. प.	करणानि क.	दं. प.	राशयः रा.	दं. प.	सूर्यांशाः कु.मी.-राशौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	कु. ल. घ. मि.	मे. घते	सं. ता.	फाल्गुनशुक्लपक्षः।
१	मं.	३५।२२	रा.	८।१७	पू.	८।३३	दि.	६।३३	शु.	३७।४५	कि.	५। २	मीन		२७।१२।१६	२९।१८	६। ८	५।५२	६।२४	२८	११	कल्याणेश्वरतः परिक्रमारम्भः।
२	बु.	३७।२६	,,	६। ८	उ.	११।२६	,,	१०।४४	शु.	३६।३८	बा.	६।२५	मीन		२८।१२।२२	२९।२२	६। ८	५।५२	६।२०	२९	१२	चन्द्रदर्शनम् । *(अथवा) १६।३४ उ० ।
३	बृ.	४०।३८	,,	१०।२२	रे.	१६।३४	,,	१२।४५	ब्र.	३८।११	तै.	६। ३	मी.	१६।३४	२९।१२।११	२९।२६	६। ७	५।५३	६।१६	३०	१३	मासान्तः । द. ति. ४०।३८ उ० । मं. ४।३४ उ० १६।३४ या. । कन्यकान्तः*
४	शु.	४४।५४	,,	१२। ४	अ.	२०।४६	,,	२।२६	ऐ.	३६।५४	व.	१२।४६	मेष		०।११।५६	२९।३०	६। ६	५।५४	६।१२	१	१४	भ. १२।४६ उ० ४४।५४ या. । द. ति. ४४।५४ या. । पू. मा. ४ च. मीने रविः†
५	श.	४६।४६	,,	२। १	भ.	२६।४८	,,	४।४८	वै.	३८। ०	व.	१७।२१	मे.	४३।२५	१।११।४७	२९।३४	६। ५	५।५५	मी.७।३२	२	१५	मासादिः । चुह्लिकास्थापनम् । ५४।५५ !
६	र.	५५।१०	,,	४। ८	कृ.	३३।१७	रा.	७।३३	वि.	३६।२७	कौ.	२२।२६	वृष		२।११।३५	२९।३८	६। ४	५।५६	७।२८	३	१६	चुह्लिकास्थापनम् । ‡७।२२ उ. । (जनकपुरे–अन्तर्गृही परिक्रमा ।**
७	चं.	६०।००	प्रा.	६। ४	रो.	३६।५४	,,	१०। २	प्री.	४०।५७	ग.	२८।४६	वृष		३।११।२३	२९।४२	६। ४	५।५६	७।२५	४	१७	उत्तराभाद्रे रविः। **श्रीबंतन्यजयन्तीमहोत्सवः।
७	मं.	०।२८	दि.	६।१४	मृ.	४६। ६	,,	०।२६	आ.	४२। ८	व.	०।२८	वृ.	१३। ०	४।११।११	२९।४६	६। ३	५।५७	७।२१	५	१८	भ. ००।२८ उ. ३२।४६ या. ।
८	बु.	५।११	,,	८। ६	आ.	५१।३७	,,	२।४१	सौ.	४२।४८	व.	५।११	मिथुन		५।१०।५६	२९।५०	६। २	५।५८	७। ७	६	१९	०। †२५।४७, मु. १५ फलं महर्घम् । षडशीतिसंक्रान्तेः पुण्यकालः द. २५।४७ उ. ।
९	बृ.	६। ५	,,	९।३६	पु.	५६। ६	,,	४।२६	शो.	४२।४२	कौ.	६। ५	मि.	४०। १	६।१०।३२	२९।५४	६। १	५।५९	७।१७	७	२०	वक्री शनिः ४२।५५ । पश्चिमदिशि यात्रा दिवा घं. ९ मि. २६ उ० ।
१०	शु.	११।५०	,,	१०।४४	पु.	५८।३५	,,	५।५०	अ.	४१।४३	ग.	११।५०	कर्क		७।१०। ५	२९।५८	६। ०	६। ०	७।१४	८	२१	भ. ४२।४० उ. । उत्तरदिशि यात्रा ।
११	श.	१३।३१	,,	११।२८	श्ले.	६०।००	प्रा.	६।००	सु.	३६।५०	वि.	१३।३१	कर्क		८। ९।३८	३०। २	६। ०	६। ०	७।११	९	२२	भ. १३।३१ या. । मं. ५०।४३ उ० । आमलकी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	र.	१३।४६	,,	११।३१	श्ले.	१।४३	दि.	६।४०	धृ.	३६।४४	बा.	१३।४६	क.	१।४३	९। ९।११	३०। ६	५।५९	६। १	७। ८	१०	२३	गोविन्द द्वादशी । पर्वा दम्ना पारणा । मं. ५।४३ या. । प्रदोष १३ व्रतम् ।
१३	चं.	१२।५०	,,	११। ६	म.	२।३१	,,	६।५६	शू.	३२।४५	तै.	१२।५०	सिंह		१०। ८।४४	३०।१०	५।५८	६। २	७। ५	११	२४	चतुर्दशी १४ व्रतम् । पुष्टोगुणः ४१।१ उ० । शुद्धारम्भश्च ४१।१ उ. ।
१४	मं.	१०।३८	,,	१०।१२	पू.	२।१५	,,	६।५१	गं.	२७।५३	व.	१०।३८	सिं.	१६।५३	११। ८।१६	३०।१४	५।५७	६। ३	७। २	१२	२५	भ. १०।३८ उ. ३६।०० या. । होलिकादाहः रात्रौ घं. ९ मि. ३३ उ. ।
१५	बु.	७।२२	,,	८।५४	उ.	०।४८	,,	६।१५	वृ.	२२।१२	व.	७।२२	कन्या		१२। ७।४८	३०।१८	५।५६	६। ४	६।५६	१३	२६	हस्तलाघवः घं. ५७।४७ । फाल्गुनी-पूर्णिमा–१५ । अंशस्नानम् । पूर्वोदितो बुधः २३।६ । मन्वादिः । सं. २०४३ प्रारम्भः‡

फा. शु. २ बु. मि. था. ४४।४१		
र.	१०।२८।१२।२२	५९।५७
मं.	७।२६। ६।५२	३१।२६
बु.	११। १।२२।२३	३१। ७
बृ.	१०।१२। ९।१०	१४।१८
शु.	११।१२।११।५९	७४।३१
श.	७।१४।५६।४२	०।४६
के.	६।१०।३३।५१	३।११
रा.	०।१०।३३।५१	३।११
च.	२२।१८।११	—

फा. शु. ८ बु. मि. था. ४४।५५		
र.	११। ५।१०।५६	५९।४०
मं.	७।२९।४७।१९	३०।३५
बु.	१०।२९। ५। ४	४७।५८
बृ.	१०।१३।४७। ४	१३।२८
शु.	११।२०।५२।५८	७४।३३
श.	७।१४।५७।११	०। ९
के.	६।१०।११।३६	३।११
रा.	०।१०।११।३५	३।११
च.	२२।१८।१२	—

फा. शु. १५ बु. मि. था. ४५।९		
र.	११।१२। ७।४८	५९।२९
मं.	८। ३।१८।३३	२९।४९
बु.	१०।२२। २।१४	१२। ४
बृ.	१०।१५।२६।२३	१४।१८
शु.	११।२९।३३।५७	७३।५६
श.	७।१४।५३।२६	११। ६
के.	६। ९।४९।२१	३।११
रा.	०। ९।४९।२१	३।११
च.	२२।१८।११	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन-याम्यगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु । अशुद्ध-शुद्ध समय । बु. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पश्चिमास्त, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. २६ क बु. पूर्वोदित । ता. २० के श. वक्री ।

मौसम—एहिपक्षमे बात प्रकोप अधिक । समय समान ।

विशेष कथन—होलिकादहनोत्सवक हेतु पंचमीसँ दस दिन पहिनहिसँ इन्धन (लकड़ी) एकत्र करबाक विधान अछि । पूर्णिमाक रात्रिमे चाण्डाल वा प्रसूतिकाक घरसँ बच्चाक द्वारा आगि मंगबाय गामक बाहर खूब बाजा बजबैत गीत आदि गबैत होलिका जराबक चाही । एहिसँ राक्षसी (होलिका) लुप्त होइछ, आ बालग्रह शान्त होइछ । रात्रिमे ई कार्य कैलाक बाद निर्धारित दिन होलिकोत्सवमे सभ वर्गक लोक सम्मिलित भऽ परस्पर आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा-विनोद आदिसँ उत्सवक शोभा बढ़बैत छथि । प्राचीने कालसँ अबीर उड़ायब, पिचकारी द्वारा जलक्षेपण आदि एहि उत्सवक प्रधान कर्म आबि रहल अछि, जे वसन्तोत्सवक अंग मानल जाइछ । आब हऽ 'होरी खेलब' शब्दे एहि अर्थमे प्रयुक्त भऽ जाइत अछि, वस्तुतः ई उत्सव हँसी-खुशीक संग आमोद-प्रमोदक हेतु अछि । अग्रामे होलिकाक दहन निषेध—"ग्रामे दीपिता होली राष्ट्रभङ्गं करोति वै" तथा च—प्रतिपत्पक्षमेकं चेद्धोलिदाहो विधीयते । हाहाभूतं जगत्सर्वं दुष्कमुष्कं च जायते ॥ होलिकादाहे वायुफलम्—पूर्वे वायुः होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् । पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः । यदीशानेऽप्यनावृष्टिकर्म्यं राजा समाचरेत् ॥

चैत्रकृष्णपक्षः । संवत्, २०४३, शक: १९०७, सन् १३९३ साल, अं० मार्च-अप्रील १९८६ ई० ।
पूर्वं पश्येद्तुस्नाता यादृशं नरमङ्गना । तादृशं जनयेत् पुत्रं ततः पश्येत् पति प्रियम् ।।—माधमिश्रः।।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्यांशा अं. राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मी. ल. घ. मि.	अं. तारी	चं. ति.	चैत्रकृष्णपक्षः
१	बृ.	३।१५	वि. ७।२३	वि. ५५।३३	रा. ४। ६	धृ. १५।५०	कौ. ३।१५	क. २७। ४	१३। ६।४०	३०।२२	५।५६	६। ४	६।५६	१४	२७	द्वितीयाक्षय: दं. ५५।१४ । द. ति. ३।१५ उ. ५८।१९ मा. ।
३	शु.	५२।५३	रा. ३। ४	स्वा. ५१।५६	,, २।४१	व्या. ८।५३	व. २५।३६	तुला	१४। ६। १	३०।२६	५।५५	६। ५	६।५३	१५	२८	भ. २५।३६ उ. ५२।५३ मा. । उपनयनम् । दीक्षाग्रहणम् ।
४	श.	४७। ३	,, ०।४४	वि. ४७।५६	,, १। ४	ह. ११।३१	व. १६।५८	तु. ३३।५६	१५। ५।२२	३०।३०	५।५४	६। ६	६।५०	१६	२९	वज्रयोगक्षय: दं. ५२।२० । मार्गी बुध: ५०।१९ । श्रीगणेश ४ व्रतम् ।
५	र.	४१। ४	,, १०।१९	अ. ४३।४५	,, ११।२३	सि. ४६। ४	कौ. १५। १	वृश्चिक	१६। ४।४३	३०।३४	५।५३	६। ७	६।४७	१७	३०	उत्तरदिशि यात्रा, सूतीस्नानम् । व्रतबन्धनम् । दीक्षाग्रहणञ्च ।
६	चं.	३५।१६	,, ७।५४	ज्ये. ३६।४०	,, ६।४४	व्य. ३८।२३	ग. ८। ५	वृ. ३६।४०	१७। ४। ४	३०।३८	५।५२	६। ८	६।४४	१८	३१	भ. ३५।१६ उ. । गं. ३३।४० उ. ४८।४० मा. । रेवत्यां रवि: २०।२३ ।
७	मं.	२६।२२	दि. ५।३७	मू. ३५।५०	,, ८।१२	व. ३०।५१	वि. २।१४	धनु	१८। ३।२५	३०।४२	५।५२	६। ८	६।४१	१९	१	भ. २।१४ मा. । अप्रील–४
८	बु.	२४। १	,, ३।२७	पू. ३२।२१	,, ६।४७	प. २३।४१	कौ. २४। १	ध. ४६।४०	१९। २।४६	३०।४६	५।५१	६। ९	६।३८	२०	२	विश्वशस्त्रादिनिर्माणदिनम् ।
९	बृ.	१९।१६	,, १।३२	उ. २०।१६	दि. ५।४०	शि. १७। २	ग. १९।१६	मकर	२०। २। ८	३०।५०	५।५०	६।१०	६।३५	२१	३	भ. ४७।१९ उ. ।
१०	शु.	१५।२३	,, ११।५८	श्र. २७।४५	,, ४।५५	सि. ११। ३	बि. १५।२३	म. ५७।१५	२१। १।३०	३०।५४	५।४९	६।११	६।३१	२२	४	भ. १५।२३ मा. । पञ्चकारम्भ: (भदवा) २७।४५ उ. । विचारम्भदिनम् ।
११	श.	१२।२७	,, १०।४७	ध. २६।४५	,, ४।३०	सा. ५।१०	बा. १२।२७	कुम्भ	२१।५९।५२	३०।५८	५।४८	६।१२	६।२८	२३	५	पापमोचिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	र.	१०।३१	,, १०। २	श. २६।५८	,, ४।३३	शु. १।२८	तै. १०।३६	कुम्भ	२२।५८।५३	३१। २	५।४८	६।१२	६।२४	२४	६	शुक्लयोगक्षय: दं. ५६।३६ । प्रदोषव्रतोपवासोव्रतम् । वारुणीयोग: १०।३६ उ. ।
१३	चं.	९।५८	,, ९।४६	पु. २८।२०	,, ५। ७	ब. ५५।४४	व. ९।५८	कु. १३। ०	२३।५७।५४	३१। ६	५।४७	६।१३	६।२१	२५	७	भ. ९।५८ उ. ४०।१८ मा. । चतुर्दशी १४ व्रतम् ।
१४	मं.	१०।३७	,, १०। १	उ. ३१। १	,, ६।१०	ऐ. ५४।२५	श. १०।३७	मीन	२४।५६।५५	३१। ९	५।४६	६।१४	६।१८	२६	८	ध्वलकलशान्यस्तरक्तपताकान्वितस्नुहीधारणम् ।
३०	बु.	१२।४०	,, १०।५०	रे. ३३।५५	,, ७।२०	वै. ५३।५७	ना. १२।४०	मी. ३३।५५	२५।५५।५६	३१।१२	५।४६	६।१४	६।१५	२७	९	चंत्री–अमा–३० । पार्वणम् । गं. २१।५५ उ. ३६।५५ मा. । पञ्चकान्त: (भदवा) ३३।५५ उ. ।

चं. कृ. ८ बृ. मि. मा. ४५।१३		
र.	११।१९। २।४६	५९। ९
मं.	८। ६।४३।५५	२९। ५
बु.	१०।२२।५२।४०	३०।२२
बृ.	१०। ७। ३।३४	१३।२४
शु.	०।१८।१२।५३	७३।५६
श.	७।१४।४३।४९	२। ३
के.	६। ९।२७। ६	३।११
रा.	०। ९।२७। ६	३।११
ल.	२२।१८।१४	—

चं. कृ. ३० बु. मि. मा. ४५।३६		
र.	११।२५।५५।५६	५८।५३
मं.	८। ९।५८।४५	२६।५४
बु.	१०।२८।२३।२६	६१। ६
बृ.	१०।१८।३६।२८	१३।२८
शु.	०।१६।४८।४०	७३।२१
श.	७।१४।२६।२१	२। ३
के.	६। ९। ४।५१	३।११
रा.	०। ९। ४।५१	३।११
ल.	२२।१८।१५	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन, याम्यगोल, वसन्तऋतु, शुद्ध समय। श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित।

मौसम—पक्षभरि वायुवेग अधिक। मौसम प्रतिकूल।

विशेष कथन—तडागारम्भे सूर्यभाद् गणना—स्थान-नक्षत्रफलानि क्रमश:—पूर्व २ जलशोष, अग्नि. ३ बहुजल, दक्षिण २ असनाश, नै. २ अमृतजल, पश्चिम ३ जल, वा. २ जलशोष, उत्तर ३ स्थिर जल, ई० १ जलशोष, मध्य ५ पूर्ण जल, बाह्य ३ अमृतजल। कूपारम्भ रोहिणीभात्—प्रत्येक ३-३ मे क्रमश:—स्वादु जल, निर्जल, धातु जल, निर्जल, अमृतजल, निर्मल जल, जलहानि, मधुरजल, क्षारजल। कूपखनन दिक् फलम्—कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धि:। सूनोर्नाश: स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत्पीडा शत्रुत: स्याच्च सौख्यम् ।। दिशाक वश शुभाशुभ वृक्ष—पूर्वमे अश्वत्थ (पीपर), दक्षिणमे प्लक्ष (पाकड़ि), पश्चिममे वट (बड़) तथा उत्तरमे उदुम्बर (गूलर) अशुभ। ई वृक्ष सभ क्रमश:—पश्चिम, उत्तर, पूर्व तथा दक्षिणमे शुभ कहल गेल अछि। गृहसमीप अशुभ वृक्ष—काँट बला, दूध बला तथा फल बला वृक्ष बृहत् संहिताक अनुसार अशुभ। पुन्नाग, अशोक, अरिष्ट, बकुल, कटहर, शमी, आ साल शुभ मानल गेल अछि। लिंगपुराणानुसार—केराक वन गृह समीप निषेध अछि। संहितानुसार—जलाशय वास्तुसँ केवल उत्तर आ ईशान दिशामे शुभप्रद होइछ।

र. | बु. रा. | शु. बृ. | के. | मं. | चं. | श.

चंत्रशुक्लपक्षः । संवत् २०४३, शकः १९०७-८, सन् १३९३ साल, अं. तारीख १९८६ ई०।
"सर्वे मे सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥"

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.	सूर्योदयाः मो.मे.-रात्रौ	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मी. ल. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	चंत्रशुक्लपक्षः
१	बृ.	१९।४५	दि. १२। ३	अ. ३६।५४	रा. १०।४३	वि. ५४।२१	व. १५।४५	मेष	२६।५४।४२	३१।१६	५।४५	६।१५	६।१२	२८	१०	चन्द्रदर्शनम् । वासन्तीनवरात्रारम्भः । दुर्गोत्सवः कलशस्थापनम् । द. ति. १५।४५ उ. । इन्धनस्थापनम् ।
२	शु.	१९।५६	,, १।४०	भ. ४५।४५	,, १२। २	प्री. ५५।२४	कौ. १६।५६	मेष	२७।५३।२८	३१।२०	५।४४	६।१६	६। ९	२९	११	द. ति. १९।५६ या. । इन्धनस्थापनम् ।
३	श.	२४।५६	,, ३।४१	कृ. ५२। ६	,, ३।३५	आ. ५६।५०	ग. २४।५६	मे. २।२१	२८।५२।१४	३१।२४	५।४३	६।१७	६। ५	३०	१२	मासान्तः । म. ५७।३३ उ. । मन्वादिः । इन्धनस्थापनम् । मु० द्वि० *इन्धनस्थापनम् ।
४	र.	३०।११	,, ५।४३	रो. ५८।४८	,, ८।१३	सौ. ५८।२६	वि. ३०।११	वृष	२९।५१। ०	३१।२८	५।४२	६।१८	६। १	३१	१३	म. ३०।११ या. । अश्विन्यां मेषे रविः ५४।३८। मु. ४५ धर्म समर्घम् । शकः १९०८ आरम्भः ५४।३८ उ. ।*
५	सं.	३५।१६	रा. ७।४८	मृ. ६०।००	प्रा. ८।४२	शो. ५६।४७	व. २।४३	वृ. ३१।५७	०।४६।४५	३१।३२	५।४२	६।१८	मे. ७। ९	१	१४	मेषविषुवसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ या. । द. ति. ३५।१६ उ. । हरिद्वारे कुम्भयोगः (सतुआइन) इन्धनस्थापनम्
६	मं.	३९।५४	,, ९।३६	मृ. ५। ७	दि. ७।४४	अ. ६०।००	कौ. ७।३५	मिथुन	१।४८।३०	३१।३६	५।४१	६।१९	७। ५	२	१५	द. ति. ३९।५४ या. । सूर्यषष्ठी ६ व्रतम् (वासन्तीय रविषष्ठी) । जुड़ शीतल । मूर्तीस्नानम् । इन्धनस्थापनम् ।
७	बु.	४३।४२	,, ११। ६	आ. १०।५०	,, १०।००	अ. ०।४२	ग. ११।४८	मि. ५९।२४	२।४७।१५	३१।४०	५।४०	६।२०	७। १	३	१६	म. ४३।४२ उ. । सूर्यषष्ठीव्रतस्य पारणा । द्विरागमनम् । मुण्डनम् । इन्धनस्थापनम् ।
८	बृ.	४६।२३	,, १२। ०	पु. १५।३६	,, ११।५३	सु. ०।५५	वि. १५। २	कर्क	३।४५।४६	३१।४४	५।३९	६।२१	६।५७	४	१७	म. १५।२ या. । अशोकाष्टमी । अशोककलिकापानम् । महानुवत्सनम् । द्विरागमनम् । वधूप्रवेशः ।
९	शु.	४७।५४	,, १२।४८	पु. १९।१५	,, १।२०	धृ. ०।१५	बा. १७। ८	कर्क	४।४४।१६	३१।४८	५।३८	६।२२	६।५३	५	१८	शुक्लोदयः दं. ५८।२१ । श्रीरामनवमी ९ व्रतम् । श्रीहनुमद्ध्वजारोपणम् ।
१०	श.	४८। ५	,, १२।५९	श्ले. २१।४२	,, २। ७	गं. ५५।५८	तै. १७।५९	क. २१।४२	५।४२।४६	३१।५२	५।३८	६।२२	६।४९	६	१९	गं. १०।४२ उ. २५।४२ या. ।
११	र.	४७। १	,, १२।२५	म. २२।४६	,, २।४३	वृ. ५२।१९	व. १७।३३	सिंह	६।४१।१६	३१।५६	५।३७	६।२३	६।४५	७	२०	म. १७।३३ उ. ४७।१ या. । कामदा एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । वि०
१२	सं.	४४।४३	,, ११।२८	पू. २२।३१	,, २।२६	ध्रु. ४७।४१	व. १५।५२	सिं. ३७।१६	७।३९।४६	३२। ०	५।३६	६।२४	६।४१	८	२१	श्रीविष्णु १२ । गोष्ठेन पारणा । नि. विवाहः । उपनयनम् मुण्डनम् । गृहप्रवेशः ।
१३	मं.	४१।२२	,, १०। ८	उ. २१।३०	,, २। १	व्या. ४२।१५	कौ. १३। ३	कन्या	८।३८।१६	३२। ३	५।३५	६।२५	६।३७	९	२२	प्रदोष १३ व्रतम् । मदनभञ्जिका १३ । कन्दर्पपूजा । मूर्तीस्नानम् । १७ मि. २४ उ. । गृहारम्भदिनम् ।
१४	बु.	३७।१२	,, १०।२८	ह. १९।२८	,, १।१८	ह. ३६। ८	ग. ९।१७	क. ४८।१६	९।३६।४६	३२। ६	५।३५	६।२५	६।३३	१०	२३	म. ३७।१२ उ. । चतुर्दशी १४ व्रतम् । गोष्ठानय सठसमाः । गोष्ठालये हस्तंवः । नि. विवाहः ।
१५	बृ.	३२। ९	,, ६।२६	चि. १६।३३	,, १२।११	व. २९।२३	वि. ४।४०	तुला	१०।३५। १	३२।१०	५।३४	६।२६	६।२९	११	२४	म. ४।४० या. । चैत्री-पूर्णिमा-१५ । लोकस्नानम् । दिवाचन्द्रोदितः खग्रासचन्द्रग्रहणं स्पर्शः घं. ४ मि. २ मोक्षः घं.१

चै. शु. ७ बु. मि. भा. ४५।५०		
र.	०। २।४७।१५	५८।३७
मं.	८।११।४४। १	२४।५९
बु.	११। ७। ८। ५	८३।२९
बृ.	१०।२०। ८।४१	१२।३५
शु.	०।२५।२३।५७	७३।२१
श.	७।१४।११।१८	३।११
के.	६। ८।४२।३५	३।११
रा.	०। ८।४२।३५	३।११
भ.	२२।१८।१६	—

चै. शु. १४ बु. मि. भा. ४६। ३		
र.	०। ९।३६।४६	५८।२२
मं.	८।१५।५४।२६	२३।३६
बु.	११।१७।५३।५२	९८।४६
बृ.	१०।२१।३६।४३	११।३७
शु.	१। ३।५९।४५	७३।५६
श.	७।१३।४८।११	३।५८
के.	६। ८।२०।१९	३।११
रा.	०। ८।२०।१९	३।११
भ.	२२।१८।१७	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन, याम्य-सौम्यगोल, वसन्त ऋतु । शुद्ध समय । श. वक्री । शेष ग्रह मार्गी, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—रह्यपरि वायुवेग अधिक । मौसम प्रतिकूल ।

विशेष कथन—प्रत्येक प्राणीक हृदयकें प्रफुल्लित कैनिहार ओ प्रकृतिक नूतन साज-शृंगारक रचयिता वसन्तक शुक्लपक्ष तथा प्रकाशमय मध्याह्नक समय प्रकट होयब वास्तवमे मार्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामक अनुरूप अछि । हुनक प्राकट्य हेतु एहिसँ अधिक उपयुक्त अन्य कोन समय भऽ सकैत छल । रामनवमीक दिन—उपवास, जागरण आदि कार्य तप मानल गेल अछि आ पंचामृत स्नान, प्रतिमार्चन तथा हवन आदि यज्ञ आओर प्रतिमा दान, ब्राह्मण-भोजनादि तऽ दान मानल गेल (यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्—गीता)—असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात् । उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ "अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ । चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः ॥—लिंगपुराण । अशोककलिकापान-मन्त्रः—त्वमशोकहराभीष्ट मधुमाससमुद्भव । पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु ॥ भविष्यपुराण— यो वापीमथवा कूपं देशे तोयविवर्जिते । खानयेत् स दिवं याति बिन्दौ बिन्दौ शतं समाः ॥ उच्छिष्टं घृतं न भक्षणीयं तदुक्तं स्मृतिसारे—ताम्रपात्रे पयःपानमुच्छिष्टे घृतभोजनम् । दुग्धे च लवणं दद्यात्सद्यो गोमांसभक्षणम् ॥

कुण्डली	
चं.	
र. बु. रा.	
बृ.	
शु.	
के.	
मं.	
श.	

"तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुत्तमम् । द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे ॥"—मनुः ।

ति.	वा.	तिथय: घ. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न.	घं. प.	घं. मि.	योग: यो. घं. प.	करणानि क. घं. प.	राशय: रा. घ. प.	सूर्यांशा: अं. राशौ	दि. मा. घं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मे. ल. घं. मि.	वै. गते	अं./ता.	
१	बु.	२६।४१	वि. ४।१०	स्वा. १३। ३	वि. १०।४६	सि. २२। ६	कौ. २६।४९	वृ. ५५। ६	११।३३।१६	३२।१३	५।३३	६।२७	६।२५	१२	२५	द्विरागमनम् । दक्षिणदिशि यात्रा, नवदम्पत्या: पाकारम्भदिनम् ।
२	गु.	२०।४६	,, १।५१	वि. ६। ८	,, १०।१२	व्य. १४।३६	व. २०।४६	वृश्चिक	१२।३१।३१	३२।१६	५।३३	६।२७	६।२१	१३	२६	म. ४७।४५ उ. । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा अनुराधायाम् । गृहारम्भदिनमनुराधायाम् । * द्विरागमनम् ।
३	शु.	१४।४७	,, ११।२६	अ. ५। ०	,, ७।३२	ह. ६।२६	वि. १४।४७	वृश्चिक	१३।२९।४६	३२।१९	५।३२	६।२८	६।१८	१४	२७	म. १४।४४ या. । परिघयोगत्यागः घं. ५२।१८ । वरूथिनी रवि: ३६।१४ । मं. ५४।५० उ. । श्रीवल्लभ ४ जयन्ती ।*
४	श.	८।३७	,, ८।३६	ज्ये. ०।५०	,, ५।५२	सि. ५१।१३	वा. ८।३७	वृ. ०।५०	१४।२८। १	३२।२२	५।३२	६।२८	६।१४	१५	२८	मूलक्षयः घं. ५६।१ । मं. ६।५० या. । नि. विवाहो मध्यमः ।
५	र.	२।४८	,, ६।३८	मू. ५३।२८	रा. २।५४	सि. ४४।३०	तै. २।४८	धनु	१५।२६।१५	३२।२५	५।३१	६।२९	६।११	१६	२९	षष्ठीक्षयः घं. ५४।३३ । पूर्वास्तो बुधः ३५।१५ । कोकिला ६ । क. ति. २।४८ उ. ५७।२१ या. । भ. ५७।२१ उ. ।
७	सो.	५२।३१	रा. २।३१	उ. ५०।३१	,, १।४२	सा. ३७।४८	वि. २४।५६	ध. ७।४४	१६।२४।२९	३२।२८	५।३०	६।३०	६। ८	१७	३०	भ. २४।५६ या. । शर्करा ७। नि. विवाहः ।
८	मं.	४८।४५	,, ११। ०	श्र. ४८।३०	,, १२।५४	शु. ३१।४३	बा. २०।३८	मकर	१७।२२।२९	३२।३२	५।३०	६।३०	६। ५	१८	-१	मई-१ । चक्रकारम्भ: (अथवा) ४८।३० उ. । पारस्करमतेन नि. विवाहः ।
९	बु.	४५।३५	,, ११।४३	ध. ४७।१८	,, १२।२४	शु. २६।२१	तै. १७।१०	म. १७।५४	१८।२०।२९	३२।३५	५।२९	६।३१	६। २	१९	२	नृपदर्शनदिनम् ।
१०	गु.	४३।४०	,, १०।५९	श. ४७।१३	,, १२।२१	ब्र. २१।४८	व. १४।३७	कुम्भ	१९।१८।२९	३२।३८	५।२८	६।३२	५।५९	२०	३	म. १४।३७ उ. ४३।४० या. ।
११	शु.	४२।५७	,, १०।३६	पू. ४८।२०	,, १२।२४	ऐ. १८।१५	ब. १३।१८	कु. ३६। ३	२०।१६।२९	३२।४१	५।२८	६।३२	५।५६	२१	४	वरूथिनी एकादशीव्रतं सर्वेषाम् ।
१२	श.	४३।१२	,, १०।४२	उ. ५०।४४	,, १।४५	वै. १५।४३	कौ. १३।१४	मीन	२१।१४।२९	३२।४४	५।२७	६।३३	५।५३	२२	५	सतापावपाविरोपणम् । नि. विवाहः । † पश्चिमदिशि यात्रा
१३	र.	४५।३१	,, ११।३६	रे. ५४।२३	,, ३।१८	वि. १४।१०	ग. १४।३१	मी. ५४।२३	२२।१२।२९	३२।४७	५।२७	६।३३	५।५०	२३	६	भ. ४५।३१ उ. ४२।२१ या. । प्रदोष शनिप्रदोषव्रतम् । कल्पकान्तः (अथवा) ५४।२३ उ. । सुवीरस्नानम् ।†
१४	सो.	४८।३१	,, १२।५०	अ. ५९। ६	,, ५। ६	प्री. १३।३१	वि. १७। १	मेष	२३।१०।२९	३२।५०	५।२६	६।३४	५।४६	२४	७	भ. १७।११ या. चतुर्दशी १४ व्रतम् । इन्वनस्थापनम् ।
३०	मं.	५२।३८	,, २।२८	भ. ६०।००	महोरात्र	आ. १३।५१	च. २०।३४	मेष	२४। ८।२८	३२।५४	५।२५	६।३५	५।४२	२५	८	वैशाखी-अमा-३० । पार्वणम् । अन्वनस्थापनम् ।

विo ??o

विo

वै. कृ. मु. ७ मि. आ. ४६।१४		
र.	०।१६।२४।३९	५८। ८
मं.	८।१८।२९।४८	२०।४०
बु.	११।२९।५६।२४	१०५।३९
गु.	१०।२३। ०।२६	१०।१०
शु.	११।२।२६।२०	७३।२१
श.	७।१३।२२। २	४।५९
के.	६। ७।५८। ४	३।११
रा.	०। ७।५८। ४	३।११
ल.	२२।१८।१९	

वै. कृ. १४ मु. मि. आ. ४६।२५		
र.	०।२३।१०।२९	५७।२५
मं.	८।२०।४८। ३	१६।३३
बु.	०।१२।४९।१५	११२।२७
गु.	१०।१३।४।२०।२२	१०।४७
शु.	१।२०।१५।४।२१	७३।४१
श.	७।१२।१२।३१	४।४६
के.	६। ७।३५।४६	३।११
रा.	०। ७।३५।४६	३।११
ल.	२२।१८।२०	—

आकाशक बात— (काल—दक्षिणमे)

सौम्यायन, सौम्यगोल, बसन्त ऋतु, शुद्ध समय । श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित । ता. २६ के बु. पूर्वास्त ।

मौसम—पछबरि महावात प्रकोप, मौसम प्रतिकूल ।

विशेष कथन—देवालय, जलाशय, गृहारम्भमे राहुमुख-ज्ञान—देवालयमे मीनक सूर्यसँ ३-३ मास मी. मे. वृ. मे ईशान, मि. क. सि. में वायव्य, क. तु. वृ. मे नैऋत्य, ध. म. कु. मे आग्नेय । जलाशयारम्भमे मकरक सूर्यसँ ३-३ मास तथा गृहारम्भमे सिंहक सूर्यसँ ३-३ मास उपर्युक्त दिशामे राहुक मुँह रहैत छैक । यत्र राहुमुखं तत्पृष्ठकोणे खातं शुभं भवति । पृष्ठदिशा—ई. वा. नै. म. कोण महक क्रमशः—म. ई. वा. नै. मानल जाइछ । इष्टिकाऽऽरम्भः—उत्तराचित्रयोर्वे पुष्ये ज्येष्ठान्ते रोहिणीकरे । स्थिरेऽङ्गेऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिकारम्भणं चरेत् ॥ तथा गेहे सुधालेपः इष्टिकारम्भवद्भवेत् ॥ वारिपूर्णघटदानविधिः—वारिपूर्णघटाय नमः ३। कुम्भोपरि ब्राह्मणाय नमः ३। घटं तिलत्वा सोमवेत्यादि मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे पुण्यकाले वा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो मम स्वर्गकामो मेषार्कं व्याप्य प्रत्यहं घटपरिमितजलं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे; ततो दक्षिणां दत्वा पठेत्—" एष धर्मघटो नित्यं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकः । अस्य प्रदानात् सफला मम सन्तु मनोरथाः । ददाति यो हि वैशाखे सम्पूर्णमुदकान्वितम् । पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैर्विमुच्यते ॥ "प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका ।"

बु.	शु.	र. रा.	बृ.
चं.	के.	मं.	श.

वैशाखशुक्लपक्षः । संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९३ साल, सं० मई १९८६ ई० ।
स्ववत्तां परदत्तां वा यो हरेत वै वसुन्धराम् । षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः"—वात्स्ये ।

ति.	वा.	तिथयः ई. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. ई. प.	घं. मि.	योगाः यो. ई. प.	करणानि क. ई. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्योदयाः मे.-सू.-राशौ	दि. मा. ई. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मे. ल. घं. मि.	मे. पत्रे	अं. ता.
१	शु.	१७।२२	रा. ४।२२	भ. ४।५०	दि ७।२१	सौ. १४।४६	कि. २५। ०	मे. २१।२४	२५। ६। ७	३२।५७	५।२५	६।३५	५।३८	२६	९
२	श.	६०।००	प्रा. ५।२४	कृ. ११। ७	„ ६।५१	शो. ११।१७	बा. २६।५८	वृष	२६। ३।५५	३३। ०	५।२४	६।३६	५।३४	२७	१०
२	र.	२।१५	दि. ६।२५	रो. १७।४२	„ १२।२८	अ. १७।५४	कौ. २।३५	वृ. ५०।५५	२७। १।४३	३३। ३	५।२३	६।३७	५।३०	२८	११
३	चं.	७।३६	„ ८।२७	मृ. २४। ९	„ ३। १	सु. १९।२८	ग. ७।२६	मिथुन	२७।५६।३१	३३। ६	५।२३	६।३७	५।२७	२९	१२
४	मं.	१२।११	„ १०।१९	आ. २९।५९	„ ५।२२	धृ. २०।३२	वि. १२।११	मिथुन	२८।५७।१९	३३। ९	५।२२	६।३८	५।२४	३०	१३
५	बु.	१५।५६	„ ११।४४	पु. ३५। ०	रा. ७।२२	शू. २०।५६	बा. १५।२६	मि. १९। ८	२९।५५। ७	३३।१२	५।२२	६।३८	५।२१	३१	१४
६	बृ.	१८।२९	„ १२।४५	पु. ३८।५३	„ ८।२४	गं. २०।३३	तै. १८।२९	कर्क	०।५२।४३	३३।१५	५।२१	६।३९	५।१८	१	१५
७	शु.	२०। ०	„ १।२०	श्ले. ४५।३५	„ ११।३८	वृ. १९।१५	व. २०। ०	क. ४५।३५	१।५०।१९	३३।१८	५।२०	६।४०	६।५८	२	१६
८	श.	२०। ८	„ १।२१	म. ४६।५६	„ ०।२०	ध्रु. १६।५२	ब. २०। ८	सिंह	२।४७।५५	३३।२१	५।२०	६।४०	६।५४	३	१७
९	र.	१८।५६	„ १२।५५	पू. ४६।१०	„ १०।३५	व्या. १३।३०	कौ. १८।५६	सि. ५७।५५	३।४५।३०	३३।२४	५।१९	६।४१	६।५१	४	१८
१०	चं.	१६।३६	„ ११।५६	उ. ४२।११	„ १०।११	ह. ९। ९	ग. १६।३६	कन्या	४।४३। ५	३३।२७	५।१९	६।४१	६।४२	५	१९
११	मं.	१३।२०	„ १०।३७	ह. ४०।२०	„ ९।२६	व. ३।५८	वि. १३।२०	कन्या	५।४०।४०	३३।३०	५।१८	६।४२	६।४४	६	२०
१२	बु.	९। ०	„ ८।५४	चि. ३७।३६	„ ८।२०	व्या. ५१।२८	बा. ९। ०	क. ८।५८	६।३८।१५	३३।३२	५।१८	६।४२	६।४१	७	२१
१३	बृ.	३।५६	„ ६।३१	स्वा. ३४।१०	„ ७।५७	व. ४४।२३	तै. ३।५६	तुला	७।३५।३६	३३।३४	५।१७	६।४३	६।३७	८	२२
१५	शु.	५२।२४	रा. ३।१५	वि. ३०।१६	„ ५।२५	प. ३६:५७	वि. २५। १	तु. २६।१७	८।३३। ३	३६।३६	५।१७	६।४३	६।३३	९	२३

नवचन्द्राः वाकारम्भदिनम् । इन्धनस्थापनम् ।
चन्द्रदर्शनम् । इन्धनस्थापनम् । *नि. विवाहः । दीक्षाग्रहणम् । इन्धनस्थापनम् ।
कृत्तिकायां रविः २१।२४। बाबूकालिकरविकललाब्धिः । द्विरागमनम् । गृहप्रवेशः । कर्णवेधनम् । मुण्डनम् ।*
अक्षय ३ । सत्ययुगादिः । द्विरागमनम् । भ. १६।२६ उ. । इन्धनस्थापनम् । दि०
भास्वान्तः । भ. १२।१३ या. । इन्धनस्थापनम् ।
ह. २ प. वृषे रविः ५१।४२ । मु. ३० कर्ण साम्यम् । हाटकुचान्तः । व. ति. ५।२६ उ. । इन्धनस्थापनम् ।
वास्तुपि: । व. ति. १८।२९ या. । विष्णुपदी संक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ या. । इन्धनस्थापनम् ।
घं. १४।१५ उ. ४९।३५ या. । वृषादित्ये विरीषवीजपानम् । नि. विवाहो मघायाम् । दि० ह०
मखनिर्माणदिनम् । दि०
नि. विवाहः रात्रौ घं. १० मि. ३१ उ. । जानकीनवमी
गंगे त्यामगस्त्यास्तः । उपनयनम् । मुण्डनम् नि. विवाहः । बलावधारामपुत्रप्रतिष्ठानम् । गृहप्रवेशो वास्तुश्च ।
सिद्धियोगश्च: दं. ५४।४ । मोहिनी एकादशी व्रतम् सर्वेषाम् । छन्दोबालामुण्डनम् । वि०
श्री नरसिंह १२ । कुशोदकेन पारणा । प्रदोष १३ व्रतम् । नि. विवाहः । गृहप्रवेशः ।
चतुर्दशीक्षयः दं. ५४।२३ । चतुर्दशी १४ व्रतम् । भ. ३८।१६ उ. ।
भ. २५।१ या. । वैशाखी-पूर्णिमा—१५ । स्नानदानम् । नि. विवाहः ।

वै. शु. ५ बु. मि. आ. ४६।२६

र.	०।२६।५५। ७	४७।४०
चं.	८।२२।४७। ६	१५।५२
बु.	०।१३।५७।३०	११९।२७
बृ.	१०।२३।३३।१८	१०।४७
शु.	१।२८।१६।२८	७३।२७
श.	७।१२।२१।१४	—४।३६
के.	६। ७।१३।३४	३।११
रा.	०। ७।१३।३४	३।११
ल.	२२।१८।३१	—

वै. शु. १२ बु. मि. आ. ४६।४६

र.	१। ३।१८।१५	५७।३०
चं.	८।२४।१८।१४	१४।१९
बु.	१। ७।२१।२५	११३।११
बृ.	१०।२६।४३।१६	८।३५
शु.	२। ७।४३। ८	७१।२७
श.	७।११।४७।५३	७।५०
के.	६। ५।५१।१९	३।११
रा.	०। ६।५१।१९	३।११
ल.	२२।१८।२२	—

आकाशक हाल— (काल—दक्षिण-पश्चिममे)

सौम्यायन-सौम्यगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु । शुद्ध समय । श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षभरि वायुवेग अधिक, मौसम प्रतिकूल, पक्षक उत्तरार्धमे साधारण ।

विशेष कथन—अक्षय तृतीया वसन्तमे होइछ । भारतीय धार्मिक प्रथाक अनुसार पहिने दान आओर पश्चात् भोजनक नियम अछि तदनुसार कृषिप्रधान देशक हेतु ई ऋतु दानकरबाक लेल प्रशस्ततर अछि । एहि तृतीयामे गंगादि तीर्थस्नान, तर्पण, श्राद्ध तथा अनेक प्रकारक दान अनन्तफलद होइछ । नृसिंहावतार—भगवानक १० अथवा २४ अवतारमे चारिटा मुख्यतया अनुग्रहावतार छैन्हि—राम, कृष्ण, नृसिंह तथा वामन । एही हेतु वैष्णवक ओतय चारिटा जयन्ती महोत्सव विशेष मान्य अछि । भगवान् नृसिंह भक्त प्रह्लादक रक्षा और दुष्ट दैत्य हिरण्यकशिपुक वधक हेतु अवतीर्ण भेल छलाह । प्रह्लादक कथासँ सब परिचिते छथि । श्रीनृसिंह भगवानक कथनानुसार, प्रह्लाद पूर्व कल्पमे ब्राह्मण छलाह, पढ़ल-लिखल नहि छलाह, नाम छलन्हि—वासुदेव; आ दुश्चरित्र छलाह । मुदा पूर्व जन्ममे भगवानक व्रती छलाह । व्रतहिक प्रभावसँ हुनकामे भक्ति भेलैन्हि आ हुनक अत्यन्त प्रिय भेलाह । एहि पक्षमे श्रीजगज्जननी जानकीजीक जन्म मिथिलामे भेल छैन्हि । वर्षाक शकुन-जोष्ट परीक्षा—पूर्णकुम्भादृघटस्थाप्यं मृत्पिण्डानां चतुष्टयम् । आषाढादिचतुर्मासनामचिह्नं पृथक् कृतम् ॥ कुम्भे स्रवज्जलेनार्द्रा यावन्तः पिण्डका मृदः । वृष्टिस्तावत्सु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम् ॥"

बृ.
र. बु. रा.
शु.
चं.
के.
मं.
श.

ज्येष्ठकृष्णपक्षः । संवत् २०४१, शकः १९०६, सन् १३९१ साल, ई० मई-जून—१९८४ ई० ।
"न क्षीरे लवणं दद्यान्न ताम्रे पञ्चगव्यं च । क्षीरं तथाग्निदग्धं तु न भुञ्जीत कदाच न ॥"—व्यास ।

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. दं. प.		सूर्यांशाः सू.-राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	चं. ल. घं. मि.	मे.	अं. ता.	
१	श.	४६।५८	रा. ०।१	म. २६।११	दि. ३।४६	वि. २६।२२	बा. १९।४१	वृश्चिक		९।१०।२७	३३।३८	५।१६	६।४४	६।३०	१०	२४	सतापावपादिरोपणम् ।
२	र.	४०।६	,, ९।२०	ज्ये.२२।५	,, २।६	सि. २१।४६	तै. १३।५३	धृ.	२२।५	१०।२७।५०	३३।४०	५।१६	६।४४	६।२७	११	२५	रोहिण्यां रविः १७।१२ । वं. १९।५ उ. ३३।५ वा. । नि. विवाहः । द्विरागमनमप्याभि शुभे ।
३	सो.	३४।१९	,, ७।०	मू. १८।३५	,, १२।४२	सा. १४।१४	व. ७।१४	धनु		११।२५।११	३३।४२	५।१६	६।४४	६।२४	१२	२६	योगवेल ४ लग्नम् । म. ७।१४ उ. ३४।१९ वा. । व. सि. १४।१९ उ. । द्विरागमनम् ।
४	मं.	२८।४९	,, ४।४७	पू. १४।२९	,, ११।३	शु. ६।३६	व. १।३४	म.	२८।४३	१२।२२।२६	३३।४३	५।१५	६।४५	६।२०	१३	२७	व. सि. २८।४९ वा. ।
५	बु.	२३।५२	दि. २।४८	उ. ११।२५	,, ९।४९	ब्र. ०।१३	तै. २३।५२	मकर		१३।१९।५६	३३।४४	५।१५	६।४५	६।१७	१४	२८	बह्मयोगश्च वं. ३६।३९ । उपनयनम्, मुण्डनम्, दीक्षाग्रहणम् । नि. विवाहः । देवादिप्रतिष्ठा ।
६	बृ.	१९।४९	,, १।११	श्र. ९।१३	,, ८।२६	ऐ. ४८।३५	व. १९।४९	म.	३८।२९	१४।१७।१३	३३।४६	५।१५	६।४५	६।१४	१५	२९	म. १९।४९ उ. ५८।१२ वा. । पञ्चकारम्भः (मतान्तरे) ९।१३ उ. । पारस्करमतेन नि. विवाहः ।
७	शु.	१६।४२	,, ११।५६	ध. ७।४६	,, ८।२१	वै. ४३।५७	व. १६।४२	कुम्भ		१५।१४।२७	३३।४७	५।१५	६।४५	६।१०	१६	३०	गवां क्रय-विक्रयदिनम् । सतापावपादिरोपणम् ।
८	श.	१४।३६	,, ११।६	श. ७।२६	,, ८।१२	वि. ४०।२४	कौ. १४।३६	कु.	५२।१४	१६।११।४९	३३।४८	५।१४	६।४६	६।६	१७	३१	गवां क्रय-विक्रयदिनम् ।
९	र.	१३।५१	,, १०।४६	पू. ८।१९	,, ७।२२	प्री. ३७।३१	ब. १३।५१	मीन		१७।८।२४	३३।४९	५।१४	६।४६	६।३	१८	१	म. ४७।३ उ. । पश्चिमोदितो बुधः ५९।३६। तृतीस्नानम् । नि. विवाहः । मूल-६ ।
१०	सो.	१४।१५	,, १०।५६	उ. १०।२४	,, ९।२४	आ. ३५।२०	वि. १४।१५	मीन		१८।५।७	३३।५०	५।१४	६।४६	६।०	१९	२	म. १४।१५ वा. । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा-रेवत्याम् । नि. विवाहः ।
११	मं.	१६।५	,, ११।४०	रे. १३।४९	,, १०।४६	सौ. ३५।८	बा. १६।५	मी.	१३।४९	१९।३।२०	३३।५१	५।१४	६।४६	५।५७	२०	३	अपरा एकादशी सर्वेषाम् । पं. १।४९ उ. १६।४९ वा. । पञ्चकान्तः (मतान्तरे) १३।४९ उ. ।
१२	बु.	१८।५६	,, १२।५०	अ. १८।१८	,, १२।३३	शो. ३५।१९	तै. १८।५६	मेष		२०।०।३३	३३।५२	५।१४	६।४६	५।५३	२१	४	प्रदोष ११ लग्नम् । उत्तराग्निया यात्रा ।
१३	बृ.	२२।५७	,, २।२४	भ. २३।४९	,, २।४५	अ. ३६।१४	व. २२।५७	मे.	४०।२२	२०।५७।३९	३३।५४	५।१३	६।४७	५।५०	२२	५	म. २२।५७ उ. ५५।१६ वा. । चतुर्दशी १४ लग्नम् ।
१४	शु.	२७।३५	,, ४।१५	कृ. ३०।२	,, ५।१४	सु. ३७।३८	ग. २७।३५	वृष		२१।५४।४५	३३।५६	५।१३	६।४७	५।४६	२३	६	समरे प्रतिवादिजयदयोगः ।
३०	श.	३२।३८	,, ६।१५	रो. ३६।३५	,, ७।३८	धृ. ३८।२१	च. ०।६	वृष		२२।५१।५१	३३।५८	५।१२	६।४८	५।४२	२४	७	ज्येष्ठी-अमा ३० । पार्वणम् । वटसावित्रीव्रतम् ।

ज्ये. कृ. ५ बु. मि. आ. ४६।५२

र.	११।१३।१९।५९	५७।१७
चं.	८।२३।२७।१९	८।३४
बु.	१।२२।२७।१०	१०९।२६
शु.	१०।२७।४४।१३	८।६
बृ.	२।११। २।४४	७०।५७
श.	७।११।१४।५४	५।५३
के.	६। ६।२९। ४	३।११
रा.	०। ६।२९। ४	३।११
ल.	२२।१८।२३	—

ज्ये. कृ. १२ बृ. मि. आ. ३६।५६

र.	१।१०। ०।३३	५७।१०
चं.	८।२६। १।१२	६।१६
बु.	२। ४।५९।१६	१०२।३५
शु.	१०।२८।४०।३३	८। ६
बृ.	२।२४।१९।४१	७०।४८
श.	७।१०।४२।१६	५।५३
के.	६। ६। ६।४९	३।११
रा.	०। ६। ६।४९	३।११
ल.	२२।१८।२४	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिमसँ)

सौम्यायन, सौम्यगोल, ग्रीष्म ऋतु, शुद्ध समय। श. वक्री। शेष ग्रह मार्गी, बु. पूर्वास्त। बु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित। ता. १ के बु. पश्चिमोदित।

मौसम—पखबरि वातप्रकोप अधिक, मौसम प्रतिकूल रहत।

बहुविवाह दोषमाह(कालिका पुराणे)—बहुदारः पुमान् यस्तु रागादेकां भजेत् स्त्रियम् । स पापभाक् स्त्रीजितश्च तस्याशौचं सनातनम् ॥ बहुदुःखं भावले स्त्रीभ्यो स्वाम्यसंयोगजं विभो । न तस्य सुकृतं दुःखं किञ्चिदप्यत्र विद्यते ॥ असमयसंयोग निषेधः—सर्वथा वो दिवारात्रौ सन्ध्यायां वनितारतः । सेवते सुरतं तस्मिन् राजयक्ष्मा वलिष्यति ॥ अतएव असमय, दिनमे, प्रातः वा सन्ध्या समय स्त्री-संयोग सर्वथा निषेध कएल गेल अछि । उक्त समयमे स्त्री-संयोगसँ राजयक्ष्मा रोगक संग-संग आयु ओ स्वास्थ्यक हानि होइछ।

ऋतुमती स्त्रीक संग पहिल, दोसर ओ तेसर दिन संस्पर्श त्याग करी। चारिम दिन स्वामीक संस्पर्शमे ऋतुमती स्त्री आबथि । पाँचम दिनमे देवता-पितरक कार्य योग्य ऋतुमती स्त्री होइत छथि । कारण, भावमिश्रक कथन अछि—"प्रथमेऽह्नि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी । तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽह्नि शुद्ध्यति।" व्यासदेवक वाक्य—"भर्तुं स्पृश्या चतुर्थेऽह्नि स्नानेन स्त्री रजस्वला । पञ्चमेऽह्नि योग्या स्याद्दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥"

	र. बृ.	
बु.	रा.	शु.
		चं.
	के.	श.
		ल.

संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९३ साल, ई० जून १९८६ ई० ।
अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् । परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

ति.	वा.	तिथयः दं. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि न. दं. प.	घं. मि.	योगाः यो. दं. प.	करणानि क. दं. प.	राशयः रा. द. प.	सूर्योस्ताः सू.मि.-रात्री	दि.मा. द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	चू.स. घं. मि.	मे. गते	अं. ता.	ज्येष्ठशुक्लपक्षः ।
१	र.	१७।४२	रा. ८।१७	मृ. ४३। ३	रा. १०।२५	शू. ४०।५७	कि. ५।१०	वृ. ३।४६	२३।४८।५७	३३।५६	५।१२	६।४८	५।१८	२५	८	मृगशिरसि रविः १५।३६ । (अषाढ) सभा आरम्भ ...
२	चं.	४२।१३	,, १०। ५	आ. ४६। १	,, १२।४८	ध. ४२। ८	बा. ६।५७	मिथुन	२४।४६। ३	३४। ०	५।१२	६।४८	५।३४	२६	९	चन्द्रदर्शनम् । वक्री बुधः २२।१। उपनयनम्, मुण्डनम्, दीक्षाग्रहणम् । अक्षयवाराब्दमुख्यतिथ्यादिनम् ।
३	मं.	४५।५६	,, ११।१६	पु. ५४।१५	,, २।५४	वृ. ४२।४८	तै. १४। ६	मि. ३७।५७	२५।४३। ८	३४। १	५।१२	६।४८	५।३१	२७	१०	रम्भातृतीयाव्रतम् द. ति. ४३।५६ उ. ।
४	बु.	४७।३५	,, १२।१४	पु. ५८।२०	,, ४।३२	ध्रु. ४२।३०	व. १६।४७	कर्क	२६।४१। ३	३४। २	५।१२	६।४८	५।२७	२८	११	भ. १६।४७ उ. ४७।३५ या. । द. ति. ४७।३५ या. । उमा ४ (उमापूजा) इन्धनस्थापनम् ।
५	बृ.	५०। ६	,, १।११	श्ले. ६०।००	अहोरात्र	व्या. ४१।२५	व. १८।५०	कर्क	२७।३७। ४	३४। ४	५।११	६।४९	५।२३	२९	१२	पं. ५०।१८ उ. । समरे बादित्यवयोगः । उपनयनम्, दीक्षाग्रहणम् । देवादिप्रतिष्ठा । इन्धनस्थापनम् ।
६	शु.	५०।१५	,, १।१७	श्ले. १।१८	दि. ५।५२	ह. ३६।१६	कौ. २०।१०	क. १।१८	२८।३३।५५	३४। ५	५।११	६।४९	५।१९	३०	१३	गं. ५।१८ या. । नि. विवाहः । इन्धनस्थापनम् ।
७	श.	४९। ६	,, १२।५३	म. २।५८	,, ६।१८	व. ३६। ६	गं. १९।४०	सिंह	२९।३०।४५	३४। ६	५।११	६।४९	५।१५	३१	१४	मासान्तः । भ. ४९।६ उ. । * संक्रान्तेः पुण्यकालः दं. १८।२७ या. ।
८	र.	४६।४६	,, ११।४१	पू. ३।२५	,, ६।३३	सि. ३१।५५	वि. १७।५६	सि. १८।१४	०।२७।३५	३४। ७	५।११	६।४९	५।१२	१	१५	भ. १७।५६ या. । द. ति. ४६।४६ या. । मृ. १ घ. मिथुने रविः १८।२७, मु. ४५ फलं समर्घम् । षडशीति-*
९	चं.	४३।२४	,, १०।३२	उ. २।४१	,, ६।१४	व्य. २६।५६	बा. १५। ५	कन्या	१।२४।२५	३४। ८	५।१०	६।५०	मि.७।११	२	१६	मासादिः । पू. भा. ४ च. मीने गुरुः ५३।५६ ।
१०	मं.	३९। ८	,, ८।५१	ह. ०।५६	,, ५।२२	व. २१। ९	तै. ११।१६	क. ३९।४९	२।२१।१५	३४। ९	५।१०	६।५०	७। ७	३	१७	विनायकः दं. ५७।२६ । गंगादशहरा ।
११	बु.	३४। १	,, ६।४६	स्वा. ५५। ६	रा ३।१२	प. १४।४२	व. ६।३४	तुला	३।१८। ५	३४।१०	५।१०	६।५०	७। ३	४	१८	भ. ६।३४ उ. ३४।१ या. । निर्जला एकादशीव्रतं सर्वेषाम् । पश्चिमदिशि यात्रा । उपनयनम्, मुण्डनम्, नि. विवाहः ॥
१२	बृ.	२८।२४	दि. ४।३२	वि. ५१।११	,, १।४०	शि. ७।४२	व. १।१३	तु. ३७।१४	४।१५। ५	३४।११	५।१०	६।५०	६।५९	५	१९	त्रिविक्रम १२ । तिलेन पारणा । प्रदोषव्रतोपवासी १३ व्रतम् ।
१३	शु.	२२।२३	,, १।५५	अ. ४७।११	,, १२। २	सि. ०।२२	तै. २२।२३	वृश्चिक	५।१२। ५	३४।१२	५।१०	६।५०	६।५६	६	२०	साम्ययोपलक्ष दं. ५२।२६ । चतुर्दशी १४ व्रतम् । उत्तरदिशि यात्रा ।
१४	श.	१६।१३	,, ११।१९	ज्ये. ४२।५९	,, १०।२२	शु. ४५। ९	व. १६।१३	वृ. ४२।५९	६। ९। ५	३४।१२	५।१०	६।५०	६।५२	७	२१	भ. १६।१३ उ. ४३।७ या. । गं. ३६।५६ उ. ५१।५६ या. । पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा ।
१५	र.	१०। १	,, ९।१०	मू. ३८।५६	,, ८।४३	शू. ३७।३९	व. १०। १	धनु	७। ६। ५	३४।१२	५।१०	६।५०	६।४८	८	२२	ज्येष्ठी-पूर्णिमा-१५-१ क्षेत्रस्नानम् । मन्वादिः । आर्द्रायां रविः १९।६ स्त्रीपुम्भयोर्योगः । विवाहः ।

ज्ये. शु. ४ बु. मि. का. ४७। १

र.	१।२६।५०।११	५७। २
चं.	८।२६। ७।३०	२।५४
बु.	२।१६।१३।५८	९१।१७
शु.	१०।२६।२५।५१	३।२५
मं.	३। २।१३। ६	७०। ६
गु.	७।१०। ६।५८	३।३१
श.	६। ३।४७।३४	३।११
रा.	०। ३।४७।३४	३।११
के.	२२।१८।२५	—

ज्ये. शु. ११ बु. मि. का. ४७। ५

र.	२। ३।१८। ५	५६।५१
चं.	८।२३।२९। १	०।२१
बु.	२।२६।२९। ७	७८।११
शु.	११। ०। ३।३१	४।१९
मं.	३।१०।४१।४३	७०। ६
गु.	७। ६।१३।१६	४।३८
श.	६। ३।२२।१९	३।११
रा.	०। ३।२३।१९	३।११
के.	२२।१८।२६	—

आकाशक बात— (काल—परिवर्तने)

सौम्यायन, सौम्यगोल, ग्रीष्म ऋतु । शुद्ध समय । श. वक्री, ता. ९ के मं.वक्री, शेष ग्रह मार्गी, बु. शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित ।

मौसम—पक्षधरि तापमान अधिक, पक्षक उत्तरार्धमे वर्षाक योग । समय शुद्ध ।

विशेष कथन—दशाहरामे गंगा स्नान—ग्रीष्म ऋतु अकर प्रचण्ड गर्मीसँ युक्त ज्येष्ठ मास—शीतल जलमे साधारण स्नानक हेतु स्वभावतः उपयुक्त अछि, मा गंगाजलमे स्नान त सर्वोत्तम होइछ । गंगाजल वस्तुतः स्वाभाविक रूपमे ग्रीष्ममे प्राप्त होइछ, किएक त श्रेष्ठ गंगोत्तरीसँ पिघलल हिमक जल एही ऋतुमे सर्वंत । अन्य ऋतुमे हिम पिघलिकऽ गंगाजीक पावनमात्र जलमे मीलि सकए एकर सम्भावना कम रहैछ । एहि हेतु ज्येष्ठ मासक अभिवर्धमान चन्द्रमासे युक्त पक्ष एकर उत्तरोक समय अछि । भागवतमे लिखल अछि जे गंगा स्नान चलनिहार व्यक्तिके डेग-डेग पर अश्वमेध, राजसूय आदि यज्ञक फल सुलभे रहैत छैन्हि । अन्य महापुराण, महाभारत, रामायण आदिमे गंगाक माहात्म्य भरल पड़ल अछि । आधुनिको विद्वान् गंगाजलक महिमाके पूर्णतः स्वीकार करैत छथि । गंगाक माहात्म्यमे एतेक कहल गेल अछि जे—"यस्य तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ।" अर्थात् गंगाक तीरक निकट जनिक निवास हो, हुनक निवास वैकुण्ठ अर्थात् स्वर्ग मानल जाइछ ।

आषाढकृष्णपक्षः।	संवत् २०४३, शकः १९०८, सन् १३९३ साल, ई० जून-जुलाई १९८६ ई०। सुखर्म्मिद्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः। पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः॥	(३१)

दि.	वा.	तिथयः दं.प.	घं.	मि.	नक्षत्राणि न.	दं.प.	घं.	मि.	योगाः यो.	दं.प.	करणानि क. दं.प.	राशयः रा. दं.प.	सूर्यांशाः मि.-राशौ	दि. मा. दं.प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	मि. सं. घं.मि.	से. गते	अं. ता.	
१	चं.	४। ५	दि.	६।४८	पू.	३५।१२	रा.	७।१५	ध.	३६।२२	कौ. ४। ५	धनु ५०। ४	८। ३। ५	३४।१२	५।१०	६।५०	६।४४	९	२३	द्वितीयाक्षयः दं. ५४।२८।
३	मं.	५६।१५	रा.	२।३६	उ.	३२।५७	दि.	६।२१	ऐ.	२३।३१	व. २६। ४	मकर	९। ०। ५	३४।१२	५।१०	६।५०	६।४६	१०	२४	भ, २६।४ उ. ५३।३५ या.। कन्योनानामुपनयनम्।
४	बु.	४६।२२	,,	१२।५५	श्र.	२६।२८	,,	४।४८	वै.	१७।१४	ब. २१।२८	म. ५८।२६	९।५७। ४	३४।१२	५।१०	६।५०	६।३६	११	२५	श्रीगणेश ४ व्रतम्। अंगारक ४। पञ्चकारम्भः (भद्रा) २९।२९ उ.।
५	बृ.	४६।११	,,	११।३८	ध.	२७।५०	,,	४।१८	वि.	११।३६	कौ. १७।४६	कुम्भ	१०।५३।५८	३४।१०	५।१०	६।५०	६।३२	१२	२६	अन्नप्राशनम्। मुण्डनम्। दीक्षाग्रहणम्। समरे वादित्रवद्घोषः।
६	शु.	४३।५९	,,	१०।४६	श.	२७।१२	,,	४। ३	प्री.	६।५२	ग. १५। ५	कुम्भ	११।५०।५२	३४। ९	५।१०	६।५०	६।२८	१३	२७	भ. ४३।५९ उ.।
७	श.	४१। २	,,	१०।२१	पू.	२७।४८	,,	४।१७	आ.	३। १	वि. १३।३०	कु. १२।३६	१२।४७।४६	३४। ८	५।१०	६।५०	६।२४	१४	२८	भ. १३।३० या.। द. ति. ४१।२ उ.
८	र.	४३।१९	,,	१०।३१	उ.	२९।३७	,,	५। २	सौ.	०। ८	बा. ३३।१०	मीन	१३।४४।४०	३४। ७	५।११	६।४६	६।२०	१५	२९	शोभन योगक्षयः दं. ५८।५। द. ति. ४३।१९ या.। शीघ्रके क्षत्रियस्यान्य वैवाहिकलग्नस्य प्रारम्भः।
९	चं.	४५। ५	,,	११।११	रे.	३२।४३	रा.	६।१६	अ.	५७।२२	तै. १४।१४	मी. ३२।४३	१४।४१।३४	३४। ६	५।११	६।४६	६।१६	१६	३०	गं. २०।४१ उ. ३५।४१ या.। पञ्चकान्तः (भद्रा) ३२।४३ उ०। नि. विवाहोऽश्विन्याम्।
१०	मं.	४७।४८	,,	१२।१८	अ.	३६।५५	,,	७।५७	सु.	५७।२३	व. १६।२६	मेष	१५।३८।२८	३४। ५	५।११	६।४९	६।१२	१७	१	भ. १६।२६ उ. ४७।४८ या.। जुलाई—७।
११	बु.	५१।४६	,,	१।५१	भ.	४२।१२	,,	१०। ४	धृ.	५८।१०	व. १९।४४	मे. ५८।४३	१६।३५।२२	३४। ४	५।११	६।४९	६। ८	१८	२	योगिनी एकादशीव्रतम् सर्वेषाम्। वक्री बुधः ५६।२।
१२	बृ.	५६।१५	,,	३।४२	कृ.	४६।१६	,,	१२।३०	शू.	५९।२७	कौ. २३।५७	वृष	१७।३२।१३	३४। २	५।१२	६।४८	६। ४	१९	३	पूर्वदिशि यात्रा त्रयोदश्याम्। नि. विवाहः रोहिण्याम्।
१३	शु.	६०।००	प्रा.	५।१२	रो.	५४।४६	,,	३। ६	ग.	६०।००	ग. २८।४५	वृष	१८।२९। ४	३४। ०	५।१२	६।४८	६। ०	२०	४	प्रदोषप्रदोषव्रतम्। दीक्षाग्रहणम्। नि. विवाहः। वैवाहिकलग्नसमाप्तिः।
१३	श.	१।१५	दि.	५।४२	मृ.	६०।००	प्रा.	५।१२	गं.	१।१७	व. १।१५	वृ. २८। १	१९।२५।५५	३३।५८	५।१२	६।४८	५।५६	२१	५	भ. १।१५ उ. ३३।४६ या.। चतुर्दशी १४ व्रतम्।
१४	र.	८।१७	,,	७।४७	मृ.	१।१६	दि.	५।४३	वृ.	२।४५	श. ८।१७	मिथुन	२०।२२।४६	३३।५७	५।१३	६।४७	५।५२	२२	६	पुनर्वसौ रविः २२।५७, स्त्रियोर्योगः। पश्चिमास्तो बुधः ४६।५७।
३०	चं.	१०।४६	,,	६।३३	आ.	७।२२	,,	८।१०	ध्रु.	४। १	ना. १०।४६	मि. ५६।२५	२१।१९।३७	३३।५६	५।१३	६।४७	५।४८	२३	७	आषाढी-अमा-३०। पार्वणम्। सोमवारीव्रतम्।

आ. कृ. ४ बु. मि. प्रा. ४७।६		
र.	२। ६।५७। ४	५९।५२
चं.	८।२४।२४।१९	३।११
बु.	३। ३।४४।१५	७७।२२
बृ.	११। ०।३४।२३	३।३८
शु.	३।१७।४९। १	६८।१२
श.	७। ९।१०।२५	४। ०
के.	५। ५। ०। ३	३।११
रा.	०। ५। ०। ३	३।११
ग.	२२।१८।२७	—

आ. कृ. ११ बु. मि. प्रा. ४७। २		
र.	२।१६।३५।२२	५६।५०
मं.	८।१२।४७।२७	४।१४
बु.	३। ७। ३।३७	१७। ३
बृ.	११। ०।२२। ८	२।४४
शु.	३।२६।५०।१४	६८।१२
श.	७। ८।४४।१६	४। ०
के.	६। ४।३७।४७	३।११
रा.	०। ४।३७।४७	३।११
ग.	२२।१८।२८	—

आकाशक बात— (काल—पश्चिमके)

सौम्यायन, सौम्यगोल, ग्रीष्म ऋतु, शुद्ध समय। मं. शु. वक्री। शेष ग्रह मार्गी, ता. २ के बु. वक्री। बु. शु. पश्चिमोदित। शेष ग्रह पूर्वोदित। ता. ६ के बु. पश्चिमास्त।

मौसम—पक्षभरि तापमान अधिक, वर्षाक योग नीक, समय सुखद।

विशेष कथन—आर्द्रासँ १० नक्षत्रक स्त्री संज्ञा छैन्हि। यथा आ. पु. पु. श्ले. म. पू. उ. ह. चि. स्वा.। विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा नपुंसक संज्ञक, शेष १४ नक्षत्र—मू. पू. उ. श्र. ध. श. पू. उ. रे. अ. भ. कृ. रो. मृ. पुरुष संज्ञक छथि। स्त्री-पुरुष योगमे वर्षा, स्त्री-नपुंसक योगमे अनावृष्टि तथा स्त्री-स्त्रीक योगमे कदाचित् अल्पवृष्टि होइछ। शकुन—आषाढकृष्ण अष्टमीक चन्द्रोदय समयमे मेघक दृश्य भेलासँ सुभिक्ष, साफ चन्द्रोदय भेला पर अकाल होइछ। आषाढकृष्ण नवमीमे बिजुली भेलासँ नीक वृष्टि होइछ। पञ्चोपचार—गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पञ्चोपचाराः कथिताः देवानां प्रीतिहेतवे॥ सप्तमृत्तिका—अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात्। गोकुलात्। राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्॥ सर्वौषधि—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सप्तधान्य—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च। श्यामाकं चणकं चेति सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ पञ्चपल्लव—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पञ्चभङ्ग इति प्रोक्तः सर्वकर्मसु शोभनः। पञ्चरत्न—व. मौ. वै. पु. इन्द्रनील।

र.	रा.	बृ.
बृ. बु.		चं.
	के.	मं.
		श.

आषाढशुक्लपक्षः। संवत् २०४१, शाके:१९०८, सन् १३९३ साल, ई० जुलाई १९८६ ई०।
"इक्षुरापः पयोमूलं ताम्बूलं फलमौषधम्। भक्षयित्वापि कर्त्तव्या स्नानदानादिकाः क्रियाः॥"—स्नानदीपिकायाम्।

ति.	वा.	इं. प.	तिथयः घं. मि.	न.	दं. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	यो.	योगाः दं. प.	क.	करणानि दं. प.	राशयः रा.	द. प.	सूर्यांशाः मि.क.-राशी	दि. मा. दं. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	मि.सं. घं. मि.	मे. मते	अं. ता.	आषाढशुक्लपक्षः
१	मं.	४।३५	दि. ११।४३	पु.	१२।४५	दि. १०।१६	व्या.	४।४६	व.	१४।३२	कर्क		२२।१६।२८	३३।५५	५।१३	६।४७	५।४४	२४	८	चन्द्रदर्शनम्।
२	बु.	५।१५	„ १२। ७	पु.	१७। ७	„ १२। ४	ह.	४।४०	को.	१७।१५	कर्क		२३।१३।१८	३३।५४	५।१३	६।४७	५।४०	२५	९	श्रीजगन्नाथरथयात्रा, उपनयनम्, मुण्डनम्, दीक्षाग्रहणम्।
३	बृ.	५।२०	„ १२।४६	श्ले.	२०।२१	„ १।२२	व.	३।४४	ग.	१८।५०	क.	२०।२१	२४।१०।१२	३३।५२	५।१४	६।४६	५।३६	२६	१०	म. ४८।५६ उ.। गं. ९।२१ उ. २४।२१ मा.।
४	शु.	५। ३	„ १२।५१	म.	२२।१८	„ २। २	सि.	१।४७	वि.	१९। ३	सिंह		२५। ७। ५	३३।५०	५।१४	६।४६	५।३२	२७	११	व्यतीपातयोगक्षयः दं. ५६।४९। म. १९।३ मा.। वक्री गुरुः ५८।२६। अनुद्वारम्भश्च ५८।२६ उ.।
५	श.	५।२८	„ १२।२५	पू.	२२।५६	„ २।२६	व.	५४।४७	बा.	१८।५८	सि.	३७।५१	२६। ३।५८	३३।४९	५।१४	६।४६	५।२८	२८	१२	विद्यापत्यादिनिर्वाणदिनम्।
६	र.	५।४१	„ ११।३०	उ.	२२।२६	„ २।१४	व.	४६।५५	तै.	१५।४१	कन्या		२७। ०।५१	३३।४८	५।१४	६।४६	५।२४	२९	१३	करमूले पुलिकमूलबन्धनम्।
७	चं.	५।२२	„ १०।१२	ह.	२०।५४	„ १।३७	सि.	४४।१५	व.	१२।२२	क.	४६।४३	२७।५७।४४	३३।४७	५।१५	६।४५	५।२१	३०	१४	म. १२।२२ उ. ४८।१६ मा.। द. ति. १२।२२ उ.।
८	मं.	८। ३	„ ८।३१	चि.	१८।३३	„ १२।४०	सि.	३७।५५	व.	८। ९	तुला		२८।५४।३७	३३।४६	५।१५	६।४५	५।१८	३१	१५	द. ति. ८।६ मा.।
९	बु.	३। ५	„ ६।२६	स्वा.	१६।२४	„ ११।२५	सा.	३०।५६	को.	३। ५	तु.	५७।३६	२९।५१।३०	३३।४५	५।१५	६।४५	५।१५	३२	१६	दशमीक्षयः दं. ५४।२४। पुन. ४ घ. कर्के रविः ५५।५१। मु. ४५ फलं समर्घम्। चातुर्मास्यः।
११	बृ.	३।३०	रा. १।५१	वि.	११।४३	„ ९।२६	शु.	२३।४२	व.	२४। ०	वृश्चिक		०।४८।३१	३३।४१	५।१५	६।४५	क.७।३२	१	१७	म. २४।०० उ.-५१।३० मा.। याम्यायनसंक्रान्तेः पुण्यकालः दिवा घं. १२ मा.। हरिशयनी एकादशीव्रतं स्मार्तानाम्।
१२	शु.	४।१६	„ ११।२४	अ.	७।४०	„ ८।२०	शु.	१९। १	व.	१८।२४	वृश्चिक		१।४५।३२	३३।४१	५।१५	६।४५	७।२८	२	१८	वाम्ल १२। वैष्णवानां ११ व्रतम्। वास्तादिः।
१३	श.	४। ४	„ ८।५४	ज्ये.	३।२७	„ ६।३२	ब्र.	८।२६	को.	१२।१२	वृ.	३।२७	२।४२।३३	३३।४०	५।१६	६।४४	७।२४	३	१९	मूलक्षयः द. ५५।५४। प्रदोषव्रतोपवासव्रतम्। गं. ५७।२७ उ.। *वसम्। करमूले पुलिकमूलबन्धनम्।
१४	र.	३। ६	„ ६।३०	पू.	५५।३२	„ ३।२९	ऐ.	०।५६	व.	६। ५	धनु		३।३९।३४	३३।३९	५।१६	६।४४	७।२०	४	२०	वैधृतिक्षयः दं. ५२।४१। म. ३३।६ उ.। गं. १२।२७ मा.। पुष्ये रविः २६।४९। स्त्रीपुम्भयोर्योगः। चतुर्दशी १४*
१५	चं.	३।३१	„ ४।१६	उ.	५२।१०	„ २। ८	वि.	४६।३८	वि.	०।१८	ध.	६।४१	४।३६।३५	३३।३८	५।१६	६।४४	७।१६	५	२१	म. ००।१८ मा.। आषाढी-पूर्णिमा-१५। छोड़स्नानम्। मन्वादिः। गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा च।

आ. शु. २ बु. मि. मा.	४६।५७
र. २।२३।११।१८	५६।५१
मं. ८।२०।५४।१९	५।३८
बु. ३। ३। ९।४८	९२।४२
बृ. ११। ०। १। ६	०।५१
शु. ४। ४।४७। ८	६७।११
श. ७। ८।२२।१९	३।११
के. ९। ४।१५।१२	३।११
रा. ०। ४।१५।१२	३।११
ल. २२।१८।२९	—

आ. शु. ६ बु. मि. मा.	४६।११
र. २।२६।१५।३०	५६।५५
मं. ८।१८।५९।४८	२।१९
बु. २।२९।४५। ६	४४।५६
बृ. ११। १। ०।२३	०।२१
शु. ४।१२।३९।४९	६७।१९
श. ७। ८। ७।५३	३। १
के. ९। ३।५३।१७	३।११
रा. ०। ३।५३।१७	३।११
ल. २२।१८।३०	—

आकाशलक्षण— (काल—पश्चिममे)।

सोश्चन-याम्यायन, सोम्यगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु,। शुद्ध-अशुद्ध समय। इं.बु. श. वक्री, शेष ग्रह मार्गी। बु. पश्चिमास्त, शु. पश्चिमोदित, शेष ग्रह पूर्वोदित। ता. ११ के बृ. वक्री—अनुद्वारम्भ।

बौक—पक्षधरि वायुवेग अधिक, झंझावात, समय सुखद।

विशेष कथन—हरिशयनी एकादशीसँ देवोत्थान धरि यज्ञादि (हवन सम्बन्धी) कार्य स्थगित रहैत अछि, कारण जे उक्त समयमे श्रीविष्णु (अग्नि) शयनावस्थामे रहैत छथि तथा 'समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात्' अर्थात् धधकैत आगिमे हवन करी-एहनं श्रुति प्रमाण छंक। पुलिकमूलबन्धन-मन्त्र—"सुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य॥" अकृत्वा पुलिकंबन्धं प्रायश्चित्तीयते नरः। चातुर्मास्ये व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य करात् भवेत्॥ सर्पक भयसँ बचबाक हेतु पुलिकमूल (इसरगदक जड़ी) अवश्य बान्हक चाही। आषाढ़ी पूर्णिमामे पुराणक रचयिता भगवान् श्री वेदव्यासजीक जन्म भेलैन्हि, तँ एहि दिनमे श्री वेदव्यासजीक पूजा कर्तव्य तथा श्रीगुरुदेवक पूजा करब सेहो आवश्यक। श्रीगुरुदेवक पूजा होएबाक कारणे एहि पूर्णिमाक नाम गुरुपूर्णिमा प्रसिद्ध भेल॥ शकुन—आषाढशुक्ल नवमीमे यदि बिजुली तथा मेघ नहि होइक त दुर्भिक्ष। पूर्णिमामे वर्षा हो त अन्नक भाव तेज हो। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्॥

बृ.		
र.	रा.	
	चं. बु.	
शु.	के.	मं.
	श.	

प्रचलित विविध मुहूर्त्त

[**विशेष**—लिखित प्रत्येक मुहूर्त्तविचारमे त्याज्य अंशवाला केवल त्याज्य बुझी, शेष लिखित सभ विहिते बुझी।]

शिशुस्तनपान-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उफा. ह. चि अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे.। शुभतिथि। शुभदिन। स्थिरलग्न २।५।८।११।

सूतिका-स्नान-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. उत्तर. ३, ह. स्वा. अनु. रे.। तिथि—१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। दिन सू. मं. बृ.।

शिशु-विलोकन-मुहूर्त्त

तृतीयमास। तिथि—२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५। दिन—सू. सो. बु. शु.। दिनमे फल, द्रव्य, वस्त्रसँ युक्त।

प्रसूती-नखच्छेदन-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उफ. ह. चि. स्वा. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे.। तिथि—३।५।७।१०।११। १३। दिन शुभ। लग्न—३।५।११।६।७।८। समय—पूर्वाह्न।

शिशु-निष्क्रमण-मुहूर्त्त

जन्मसँ चारिम मास तथा यात्रोक्त समय। अथवा बारहम दिन।

दन्तजनन-फल तथा शान्ति

५ मास धरि अशुभ। छठम माससँ १२म मास धरि शुभ। जन्म कालमे तथा पहिने ऊपरक पंक्तिमे दाँत भेलासँ अशुभ होइछ। शान्तिक हेतु शुभ मुहूर्त्त-मे बालकके हाथी वा नदीमे नावपर बैसाकए सर्वौषधि युक्त फल-फूल, पञ्चगव्य, पञ्चरत्न, सप्तमृत्तिका सहित कलश जलसँ स्नान कराबी (ब्राह्मण द्वारा), ब्रह्माक पूजाकए ६ दिन धरि ब्राह्मण-भोजन कराबी। आठम दिनमे दक्षिणा आदि दी।

अन्नप्राशन-मुहूर्त्त

बालकके छठम माससँ सम मासमे, कन्याके पञ्चम माससँ विषम मासमे। नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्त. ३., चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.। तिथि—२। ३।५।७।१०।१३।१५। शुक्लपक्ष, पूर्वाह्न। शुभ दिन ८ शुद्ध, शुभ लग्न।, त्याज्य—जन्मराशि-जन्म लग्नसँ आठम राशिक नवांशवाला लग्न तथा मेष, वृश्चिक, मीन।

विशेष—जन्म नक्षत्रमे अन्नप्राशन शुभ। ताम्बूल भक्षण सेहो अन्नप्राशनक दिन कराबी।

कर्णवेध-मुहूर्त्त

जन्म दिनसँ १२।१६म दिनक बाद ६।७।८म मासमे चैत्र, पौष तथा जन्म मास, हरिशयन ओ तिथिक्षयके छोड़िक, तकरा बाद, विषम वर्षमे। नक्षत्र—पुन. अश्वि. ह. पु. अभि. मृ. चि. अनु. रे. श्र. ध.। तिथि—१।२।५।६।७।८।१०।११। १२।१३।१५। दिन—सो. बृ. वृ श.। पक्ष—शुक्ल। शुभलग्न—२।३।४।६।७।९।१२। **विशेष**—कर्णवेध संस्कार याम्यायनमे नहि होइछ, एहिमे केवल अग्रहण ग्राह्य थीक।

प्राथमिक-केशकर्त्तन-मुहूर्त्त

पुत्रक हेतु जन्मसँ सम मास, पुत्रीक हेतु विषम मास। उत्तरायण। शुभदिन सो., बु. बृ. शु.। नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. पु. ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रे.। त्याज्य तिथि—रिक्ता, ८।३०। समय—पूर्वाह्न। युग्म वर्षत्यागः समाचारात्।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त

चैत्र छोड़ि उत्तरायणमे पाँचम वर्षमे गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवताक पूजा कए। नक्षत्र—अश्वि. आ. पु. पु. ह. स्वा. वि. अनु. अभि. रे.। तिथि—२।३।५।६।१०।११।१२। शुभलग्न। शुभ दिन। चर रहित शुभलग्न। **विशेष**—उचित मुहूर्त्तमे पाँच वर्षक अभ्यन्तरहु अक्षरारम्भ भए सकैछ।

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त

उत्तरायणमे। गणेश, सरस्वती, लक्ष्मीक पूजा कय। नक्षत्र—मृ. आ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. अश्वि. मूल. पूर्वा. ३, पु. श्ले.। तिथि—२।३।५।६।१०।११।१२। दिन—र. बु. बृ. शु.। शुभ लग्न। शुक्लपक्ष। धनुर्विद्याक हेतु उत्त. ३, रो. रे. अनु. शुभ थिक।

व्रतबन्धन (उपनयन)-मुहूर्त्त

शुद्ध समय (उत्तरायण) नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. पूफा. ह. चि. स्वा. ज्ये. पूषा. श्र. ध. श. पूभा. उभा. रे.। तिथि—२।३।५।१०।११।१२। (प्रदोषरहित) दिन—सू. चं. बु. बृ. शु.। शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्षमे पंचमी तक। अपराह्न त्याज्य। पूर्वाह्न-मध्याह्न विहित। मन्वादियुगादितिथि रहित।

मतान्तरसँ अस्तगत बुध दिन त्याज्य। सामवेदीक हेतु मंगल दिन शुभ।

जन्म राशिसँ २।५।७।९।११म राशिमे गुरुके रहला पर उत्तम, १।३।६।१० मे मध्यम तथा ४।८।१२ मे निन्दित। मतान्तरसँ केवल २।५।७ तथा नवमराशिस्थ गुरु उत्तम शेष राशिस्थ त्याज्य।

विशेष—स्वोच्चेस्वमे स्वमंशे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। रिष्काष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ (मि.चि.) गोचराष्टकवर्गाभ्याम् यदि शुद्धिनं लभ्यते। तस्योपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते रवौ। (रत्नकोश)
"मघुं विनोपवीतस्तु पुनः संस्कारमर्हति।"

मण्डप (मांड़व)-निर्माण मुहूर्त्त

विवाहविहित मुहूर्त्तमे विवाहक-मंडप तथा उपनयनक विहित मुहूर्त्तमे उपनयनक मण्डप एवं उद्योगक दिन (बँसकट्टी) आओर यज्ञक मुहूर्त्तमे यज्ञ मण्डप बनाबी। विवाह उपनयनसँ पूर्व ३, ६ तथा ९म दिन मण्डपादिक निर्माण निषेध। दैवज्ञमनोहरः—"चित्रा विशाखा शततारकाश्विनी ज्येष्ठाभरण्यौ शिवभाच्चतुष्टयम्। हित्वा प्रशस्तं फल-तैल-वेदिकाप्रदानकं- कण्डन-मण्डपादिकम् ॥" विवाहपटले—मङ्गलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमानतः। कार्यः षोडशहस्तो वा द्विषट्हस्तो दशावधि (१६-१२-१०)

वर-वरण (तिलक) मुहूर्त्त

नक्षत्र—कृ. रो. पूर्वा. ३, उत्तरा ३ (आवश्यकमे विवाहक शुभ नक्षत्र सेहो)। शुभ दिन। त्याज्य—रिक्ता, भद्रा, अमा, पात, वैधृति, मासान्त, संक्रान्ति आदि दुष्ट योग। शुभलग्न, शुभसप्ताष्टम शुद्ध। कन्याक आदि दुष्ट योग। शुभलग्न, सप्ताष्टम शुद्ध। कन्याक भ्राता वा ब्राह्मण द्वारा वरके तिलक देबाक चाही।

कन्या-वरण-मुहूर्त्त

वरक तिलक जकाँ कन्याक सेहो वरण कयल जाइछ। वैवाहिक नक्षत्र तथा कृ. पूर्वा ३, स्वा. अनु. उषा. श्र. ध.। शुभ तिथि—दिन। कन्याक वरण वरक पक्षक दिससँ कयल जाइछ।

विवाह-मुहूर्त्त

सौर क्रमसँ वै. ज्ये. आषा. अग्र. माघ. फा. मास। रिक्ता, अमा. रहित तिथि। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। नक्षत्र—रो. मृ. उत्त. ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. (वेध रहित) सप्ताष्टम शुद्ध लग्न। पारस्कर मतसँ अश्वि. चि. श्र. ध.।

द्विरागमन-मुहूर्त्त

सौर वैशा. अग्र. फा. मास। न.—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्त. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे.। विषम वर्ष। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। लग्न—तु. कन्या. मि. मी. म. यात्रोक्त तिथि। कृष्ण ५ तक तृतीयादि विषम वर्षमे शुक्र उदित समय।

द्विरागमनमे १ वर्षक भीतर शुक्रास्तादि दोष नहि होइछ। दक्षिण-सम्मुख शुक्रमे द्विरागमन निषेध। रेवतीसँ मृगशिरा पर्यन्त शुक्रान्धमे द्विरागमन शुभ।

विवाहक दिनसँ १६ दिनक भीतर २।४।६।८।१०।१२।१४।१६ तथा ५।७।९म दिन वधू प्रवेश। बाद प्रथम मासक भीतर विषमदिनमे। एक मासक बाद १ वर्षक भीतर विषम मासमे एक वर्षक बाद विषम वर्षमे तथा ५ वर्षक बाद मास श्रो वर्षक विचार नहि होइछ।

नक्षत्र—उत्तर ३, रो. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. मृ. रे. चि. अनु. श्र. ध. मू. पुन. स्वा.।

रिक्ता-अमा रहित तिथि, दि.—सो. बु. बृ. शु.।

विशेष—नूतन वधू-प्रवेश, सामान्य-वधू-प्रवेश, विलम्बित वधू-प्रवेश एहि तीनूमे विलंबित वधू-प्रवेशके कतेक आचार्य द्विरागमन कहैत छथि। एहि सन्दिग्ध विषयकेँ विद्वानक द्वारा निर्णय होयबाक चाही।

"वधू-प्रवेशो न दिवा प्रशस्तो नृप-प्रवेशो न निशि प्रशस्तः। दिवा च रात्रौ च गृह-प्रवेशः सत्कीर्त्तिदः स्यात्त्रिविध-प्रवेशः।"

गृहारम्भ-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. उत्तरा. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे., (वृष चक्र शुद्ध पृथिवी-शयन रहित)। त्याज्य तिथि—१।४।८।९।१४।३०। दिन—सो. बु. बृ. शु. श.। शुक्लपक्ष, लग्न—२।३।५।६।११।१२.। त्याज्य मास—आषाढ़, आश्विन, चैत्र, पौष (तृण गृहक हेतु सेहो) तथा पशु गृहक हेतु आषाढ़। उत्तम मास—श्रा. का. माघ. फा. वै. अन्य मध्यम सम्मुखकाल वर्जित। वृषचक्र—सूर्य नक्षत्रसँ चन्द्र नक्षत्र ७ तक त्याज्य, बाद ११ तक शुभ शेष ९ अशुभ, पृथ्वी शयन—सूर्यसँ ५।७।९।१२।१९।२६ चान्द्र नक्षत्रमे भूमि शयनावस्थामे रहैछ।

गृह-प्रवेश-मुहूर्त्त

त्याज्य नक्षत्र—भ. अश्ले. म. पूर्वा ३, वि. त्याज्य, दिन—रवि, म. त्याज्य, तिथि—१।४।८।९।१४।३०। शुक्लपक्ष। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२। (१०म शुद्ध गृहारम्भक विहितमास) कुम्भचक्र शुद्ध कुम्भचक्र—सूर्यक नक्षत्रसँ प्रवेश नक्षत्र ५ तक अशुभ, बाद ८ तक शुभ, बाद ८ अशुभ, शेष ६ शुभ।

देवादिप्रतिष्ठा-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे.। तिथि—२।३।५।६।८।१०।११।१२।१३।१५। शुभ दिन। शुक्लपक्ष उत्तरायण। शुद्ध समय।

दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

ग्रहण, शारदीय नवरात्र, अन्यथा उत्तरायण, शुद्ध समय, मास—चैत्र, वैशाख, माघ, फाल्गुन (दक्षिणायनक श्रा. आश्वि. का. मार्ग) नक्षत्र—अश्वि. रो.। मृ. पु. पु. पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. पूषा. उषा. श. पूभा. उभा. रे.। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। तिथि—२।३।५।७।१०।११।१२। लग्न—२।५।६।९।१२। कृष्णमे ५ तक। समय—पूर्वाह्ण, मध्याह्न।

सेवाकर्म (नोकरी) मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. रे.। त्याज्य तिथि—१।९।१२।३०। शुभ दिन। शुभ लग्न।

दोकान आरम्भ-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. पुष्य. उत्तरा ३, ह. चित्रा. अनु. अभि. रे.। त्याज्य तिथि—४।९।१४।३०। त्याज्य दिन—मंगल। त्याज्य लग्न ११। चन्द्र-शुक्र लग्नमे रहलासँ उत्तम।

धन-लगानी (महना)

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. चि. स्वा. वि. अनु. श्र. ध. रे.। लग्न १।४।७।१०। विशेष—बुध दिनमे लगानी नहि करी।

ऋण-कर्जा लेबऽ मे वर्जित समय

संक्रान्ति। वृद्धियोग, मंगल दिन, हस्तयुत रवि दिन सेहो।

नवान्नप्राशन तथा भोजन मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. पु. पु. चि. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. उ. ३। शुभलग्न। अधोलिखित समयमे नहि करी; यथा—मास-चैत, कात्तिक, पौष। विशाखाक सूर्य। १।३।५।७ तारा। तिथि—१।४।६।९।११।१३।१४। दिन—मंगल, शुक्र, शनि। नक्षत्र—उग्र (पूर्वा ३, भ. मघा) श्ले. आ. विष घटी। दग्ध चन्द्र कृष्णपक्ष। चातुर्मास्य।

वन-वाटिका-स्थापन मुहूर्त्त

चर, मृदु तथा क्षिप्र नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ लग्न।

मेधि (मेह्) रोपण-मुहूर्त्त

नक्षत्र—मृ. चि. अनु. रे. उत्त. ३, रो. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पु. श्र. ध. श.। शुभ दिन-तिथिमे खातमे द्रव्य आदि राखि मेधिक अग्रमे धान बान्हिकए।

वर्षाधिपक वृक्ष—मेधि स्थापन करक चाही।

सूर्यमे बाँस, सोम राजा हो तँ खिम्मर, मंगलमे कदम्ब, बुधमे डुम्बरि, गुरुमे आम, शुक्रमे निम्ब, शनिमे पलाश।

धान्यच्छेदन-मुहूर्त्त

शनि-मंगल, रिक्ताकेँ छोड़ि स्थिर लग्नमे। नक्षत्र—मू. ज्ये. आ. श्ले. पूभा. ह. कृ. श्र. ध. मृ. स्वा. म. उत्त. ३, पूषा. भ. चि. पुष्य।

विशेष—प्रत्येक फसिलके उपर्युक्त मुहूर्त्तमे काटी।

मसंन (दाउनि) मुहूर्त्त

नक्षत्र—पूफ. उफ. श्र. म. ज्ये. रो मू. अनु. रे.। शुभ तिथि-दिन।

धान्यरोपण-मुहूर्त्त

नक्षत्र—वि. पूषा. मू. रो. ध. उफ.। शुभ तिथि दिन।

बीज-रखब मुहूर्त्त

नक्षत्र—मू. भा. रे. मृ. स्वा. ह. म. उषा. रो.। शुभ तिथि—दिन, स्थिर लग्नमे बीज-राखी।

बीज-वपन-मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा. ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. ध.। शुभ-तिथि, शुभ दिन, शुभलग्न।

धान्यक स्थिति (बखारी आदिमे राखब) मुहूर्त्त

त्याज्यनक्षत्र—भ. कृ. मृ. श्ले. म. पूर्वा ३, वि. ज्ये.। शुभतिथि—दिन। त्याज्य लग्न—मेष, कर्क, तुला।

यात्राक मुहूर्त्त

नक्षत्र—अश्वि. मृ. पु. पु. ह. अनु. ज्ये. मू. रे.। त्याज्य नक्षत्र—भ. कृ. आ. श्ले. म. उत्तरा ३, वि.। मध्य नक्षत्र—रो. पूर्वा ३., चि. स्वा. श्र. ध. श.। सर्व-दिग्गमन नक्षत्र—अश्वि. पुष्य. मृ. श्र.। विशेष—एहि नक्षत्रमे सब दिशामे यात्राविहित। एहिमे वाम चन्द्रादि दोष नहि। किछु आचार्यक मतसँ पश्चिममे पुष्य, दक्षिणमे अश्विनी, उत्तरमे हस्त अविहित, परन्तु गुरु-वराह आदिक मतसँ ग्राह्य थिक। तिथि—२।३।५।७।१०।११।१३। समय—यर्धप्रहरा रहित (परिशिष्ट देखू)।

विशेष—उपर्युक्त तिथि कुयोगादिघटित भेलाए, आयोर सिद्धियोगादि घटित अविहितो तिथि ग्राह्य थिक। प्रशस्त—सम्मुख दक्षिण चन्द्र। दिक्शूलमे यात्रा निषेध।

दिक्शूल—पूर्वमे शनि, सोम। अग्निकोणमे सोम। दक्षिणमे बृ. बु.। नैर्ऋत्यमे बुध। पश्चिममे रवि, शुक्र। वायव्यमे शुक्र। उत्तरमे मं. बु.। ईशानमे बुध।

चन्द्रवास—मे. सि. ध. मे पूर्व। कन्या, वृष, म. मे दक्षिण। मि. तु. कु. मे पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन मे उत्तर। स्त्रीक यात्रामे कालक विचार होइछ। दक्षिण सम्मुख काल त्याज्य। विशेष—विशिष्टयात्राक हेतु विशिष्ट मुहूर्त विचारी। सम्मुख चन्द्र—लग्नक यात्रामे अधिक महत्व। योगिनीक कतहु सेहो प्रचलन अछि। स्त्री-यात्रामे दक्षिण-सम्मुख काल वर्जित, गृहारम्भ ओ गृह प्रवेशमे मात्र सम्मुख काल वर्जित। पितृ-गृह-यात्रामे कालक विचार नहि हो।

औषध-भक्षण-मुहूर्त

नक्षत्र—लघु, मृदु, चर, मू.। शुभ-तिथि। लग्न—२।६।८।१२। दिन—र. सो. बु. बृ. शु.। जन्मक—नक्षत्रमे नहि।

हवनमे अग्निक वास

शुक्लपक्षसं तिथिक संख्यामे १ जोड़िकए ओहिमे दिन संख्या मिलाबी आओर ४ सं भाग दी, ३।० शेषमे हवन शुभ। १।२ शेषमे हवन अशुभ।

विशेष—अतिरिक्त आओर मुहूर्त सभक विचार शास्त्रमे देखी, स्थानाभावक कारण पंचांगमे एतबए लिखल गेल।

यात्रामे शुभ शकुन

अग्रे धेनुः सवत्सा वृष-गज-तुरगा दक्षिणावर्तवह्निः,
दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विज-वरगणिका श्वेतमाला पताका।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधि मधु सहितं काञ्चनं शुक्लवस्त्रम्।
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो मन्तुकामः॥

दर्शनं—गवादेः, स्पर्शनं—रत्नादेः पाठश्च।

भदवामे त्याज्य

धनिष्ठापञ्चके त्याज्यस्तृणकाष्ठादिसंग्रहः।
त्याज्या दक्षिणदिग् यात्रा गृहस्याच्छादनं तथा॥

विशेष—भदवामे खाट, चटाई आदि नहि बुनक चाही। किछुए कार्य भदवामे नहि होइछ आओर सभ कार्य होइछ।

किछु उपयोगी अन्य बात

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः।
शेषे कर्मणि चान्द्रः स्यादेष मासविधिः स्मृतः॥

सूर्य संक्रान्तिसँ सूर्य संक्रान्ति पर्यन्त सौरमास, अमान्तसँ अमान्तावधि चान्द्र मास। सूर्योदयसँ सूर्योदय पर्यन्त सावन दिन नक्षत्रोदयसँ नक्षत्रोदयपर्यन्त नाक्षत्र दिन।

हवनमे शाकल्य निर्णय

तिलार्द्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्द्धं यवा स्मृताः।
यवार्द्धं शर्करा ग्राह्या सर्वार्द्धं च घृतं स्मृतम्॥

ग्रहक होमार्थ समिध (लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्॥

ब्रतनाशकारक वस्तु

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलभक्षणात्।
उपवासः प्रणश्येत्तु दिवास्वापाच्च मैथुनात्।

शिव-वास

पार्थिव शिव-पूजाक हेतु प्रशस्त तिथि
शुक्ल—२।५।६।८। १३
कृष्ण—१।४।५।८।११।१२।३०

पल्लीपतन फल

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां
स्वजनजनवियोगी लाभदा वामभागे।
उरसि शिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः
करचरणगुदायां सर्वसौख्यं ददाति॥

विशेष—अनिष्टपल्लीपतन शान्त्यर्थ सचैल स्नान कय तिल, उरीद दान करी तथा शिवमन्दिरमे दीप दान कय षडक्षर मन्त्र—'ॐ नमः शिवाय' १०८ बेरि जप करी।

योगिनी

तिथि १,९ पूर्वमे। ३,११ अग्नि कोणमे। ५, १३ - दक्षिणमे। ४,१२ नैऋत्यमे। ६,१४ पश्चिममे। ७,१५ वायव्यमे। २,१० उत्तरमे ८, ३० ईशानकोणमे।

अथ सुर्यादिग्रहाणां विंशोत्तरीमहादशायां ग्रहाणामन्तर्दशाचक्रम्।

र. ०।३।१८	चं. ०।१०।०	मं. ०।४।२७	रा. २।८।१२	बृ. २।१।१८	श. ३।०।३	बु. २।४।२७	के. ०।४।२७	शु. ३।४।०
चं. ०।६।०	मं. ०।७।०	रा. १।०।१८	बृ. २।४।२४	श. २।६।१२	बु. २।८।९	के. ०।११।२७	शु. १।२।०	र. १।०।०
मं. ०।४।६	रा. १।६।०	बृ. ०।११।६	श. २।१०।६	बु. २।३।६	के. १।१।९	शु. २।१०।०	र. ०।४।६	चं. १।८।०
रा. ०।१०।२४	बृ. १।४।०	श. १।१।९	बु. २।६।१८	के. ०।११।६	शु. ३।२।०	र. ०।१०।६	चं. ०।७।०	मं. १।२।०
बृ. ०।९।१८	श. १।७।०	बु. ०।११।२७	के. १।०।१८	शु. २।८।०	र. ०।११।१२	चं. १।५।०	मं. ०।४।२७	रा. ३।०।०
श. ०।११।१२	बु. १।५।०	के. ०।४।२७	शु. ३।०।०	र. ०।९।१८	चं. १।७।०	मं. ०।११।२७	रा. १।०।१८	बृ. २।८।०
बु. ०।१०।६	के. ०।७।०	शु. १।२।०	र. ०।१०।२४	चं. १।४।०	मं. १।१।९	रा. २।६।१८	बृ. ०।११।६	श. ३।२।०
के. ०।४।६	शु. १।८।०	र. ०।४।६	चं. १।६।०	मं. ०।११।६	रा. २।१०।६	बृ. २।३।६	श. १।१।९	बु. २।१०।०
शु. १।०।०	र. ०।६।०	चं. ०।७।०	मं. १।०।१८	रा. २।४।२४	बृ. २।६।१२	श. २।८।९	बु. ०।११।२७	के. १।२।०
यो. ६।०।०	यो. १०।०।०	यो. ७।०।०	यो. १८।०।०	यो. १६।०।०	यो. १९।०।०	यो. १७।०।०	यो. ७।०।०	यो. २०।०।०

प्राचीन-मतसँ विवाहार्थ वर्ग विचार

अ क च ट त प य श वर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्।
सर्पाऽऽखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ॥

कन्यापक्ष ओ वरपक्षमे परस्पर संतोष भऽ जाय तऽ विहित नक्षत्र मासोमे विवाहक आदेश अछि।

मनश्चक्षुषोर्यस्मिन् वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नान्यत् किञ्चिद्विचिन्तयेत्॥

गुरुशुद्धि—कन्याक जन्मराशिसँ २।५।७।९।११ राशिस्थ गुरु श्रेष्ठ, १।३।६।१० मध्यम तथा ४।८।१२ अधम।

रविशुद्धि—वरक राशिसँ ३।६।१०।११म राशिस्थ रवि शुभ, २।५।९म मध्यम तथा १।४।७।८।१२ निन्दित। चन्द्रशुद्धि—वर-कन्याक राशिसँ ४।८।१२ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ।

युग्मेऽब्दे जन्मतः स्त्रीणां शुभदं पाणिपीडनम्। एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः॥

नाड़ी दोषक विशेष—रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणपौष्णयम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते॥

अथ सूर्योदयात् सूर्योदयपर्यन्त—माहेन्द्रादियोगाः

	श्रावण, भाद्र, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख		आश्विन, कार्तिक, मार्ग, पौष		ज्येष्ठ, आषाढ़
र.	मा. २, अ. ८, व. १०, शू. ८, मा. २, शू. २, अ. ६, शू. ८, व. ६, मा. २, व. ४, अ. २=६०	र.	मा. ६, व. ८, अ. ८, शू. २, मा. ४, शू. ६, व. ४, अ. ४, व. ४, अ. ६, शू. ४, अ. ४=६०	र.	शू. ४, अ. ६, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. २, शू. ४, मा. ६, शू. ४, व. ६, शू. २, मा. ४, व. ४=६०
सो.	मा. ४, शू. ६, अ. ६, व. ६, मा. २, अ. २, शू. ४, व. २, मा. ६, व. ८, अ. ८, व. ६=६०	सो.	अ. ४, व. ४, अ. ६, व. २२, अ. ८, व. ७, अ. ४, व. ५=६०	सो.	व. ८, अ. ४, शू. ६, अ. ६, मा. ६, व. ६, अ. ८, व. ४, अ. ४, शू. ४, व. ४=६०
मं.	व. ४, शू. २, मा. ६, व. ४, शू. २, अ. ४, शू. ४, अ. ६, व. ४, शू. २, व. ८, अ. ६, शू. ४, अ. ४=६०	मं.	मा. २, शू. ६, अ. १०, व. ६, शू. २, व. १२, अ. २, शू. २, अ. ६, व. ४, मा. ४, व. ४=६०	मं.	अ. ४, शू. ४, शू. ४, शू. २, अ. ४, व. २, मा. ८, शू. २, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. २, शू. २, अ. ६, व. २=६०
बु.	व. ४, अ. ४, व. ६, अ. ४, शू. २, व. ४, मा. २, व. ४, शू. ४, अ. ६, शू. ६, व. ८, अ. ६=६०	बु.	शू. ४, अ. ४, मा. ६, शू. ४, व. ६, शू. २, व. ८, अ. ४, व. ८, अ. ६, शू. ८=६०	बु.	शू. २, व. ४, अ. ८, व. ६, अ. ८, शू. २, अ. १०, शू. २, व. ८, अ. ६, शू. २, अ. २=६०
गु.	व. ६, शू. ४, व. ४, अ. ६, व. ६, अ. ४, व. ४, मा. ४, अ. २, व. ८, अ. ४, शू. ४, अ. ४=६०	गु.	अ. ४, व. ६, अ. ८, शू. ४, व. ६, शू. ४, अ. ८, व. ६, अ. ६, व. ६, मा. २=६०	गु.	अ. २, शू. २, अ. ४, व. ८, अ. ६, शू. २, व. ६, शू. ४, अ. ४, शू. २, व. ६, अ. ६, शू. ४, व. ४=६०
शु.	शू. २, अ. १६, व. ८, अ. २, शू. २, व. ४, शू. ८, अ. ६, व. ८, अ. २, शू. २=६०	शु.	अ. २, व. ६, शू. ६, व. ६, अ. ८, व. ६, अ. ८, शू. ४, मा. २, व. ६, मा. ६=६०	शु.	शू. ४, अ. १४, व. ८, अ. २, शू. २, व. ४, शू. २, अ. ६, शू. ६, व. ८, मा. २, शू. २=६०
श.	शू. ४, व. ४, शू. ६, अ. ४, शू. २, २, अ. ४, शू. २, अ. ४, शू. ४, व. ४, अ. ४, व. ४, अ. ६, व. ४, अ. २, शू. २=६०	श.	मा. ४, शू. ४, अ. ८, व. ८, अ. ४, शू. २, व. ११, शू. ४, व. ७, मा. २, शू. ६=६०	श.	शू. ४, व. ६, अ. ६, शू. २, व. ४, अ. ४, शू. ६, व. ६, अ. ४, व. ४, अ. ४, शू. २, अ. [illegible], व. ६=६०
	मा=माहेन्द्र, व=वक्र अ=अमृत शू=शून्य		माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम् । वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ।।		यात्रादि परमावश्यक कार्यमे शुद्ध मुहूर्तक अभावमे चक्रोक्त शुभ समयमे कार्य करी ।

रत्नक उपचार प्रयोग—लाल (माणिक्य)—रक्त रोगमे, मोती—दाँतक रोगमे, मूँगो—नखरोगमे, पन्ना—पित्तरोगमे, पोखराज—कुष्ठादि चर्मरोगमे, हीरा-अस्थिरोगमे, नीलम—नेत्ररोगमे, गोमेद—प्रमेहादि वीर्य विकारमे, लहसुनियाँ—स्वरभंगमे, लाजावर्त—पाण्डुरोगमे, स्फटिक—काश, क्षय, प्लीहा आदि रोगमे। जनवरी-फरवरी आदि जन्म मासक क्रम अनुसार रत्न धारण—गार्नेट (रक्तमणि), नीलम—फिरोजा, लाल पत्थर, हीरा, मोती—पन्ना, सुलेमानी पत्थर, लाल मणि, मूँगा, नीलम—फिरोजा, दुधिया पत्थर, पोखराज, फिरोजा (आसमानी रंग) क्रमशः।

नोट—परस्पर विरोधी रत्नक धारण नहि करबाक चाही।

नवग्रहक दान-सामग्री

सूर्यक दान—मणि, गहुम, गुड़, सवत्सा गौ, कमलक फूल, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, सोन, ताम, केसर, मूँगा। जप संख्या ६०००। तान्त्रिक जप मन्त्र—ॐ घृणि: सूर्याय नमः।

चन्द्रमाक दान—बाँसक डाला, अरबा चाउर, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत फूल, चीनी, घी, श्वेत वृषभ, दधि, शंख, मोती, कर्पूर। जप १०,०००। मन्त्र—ॐ सों सोमाय नमः।

मंगलक दान—मूँगा, पृथ्वी, मसुरीक दालि, तेल, गहुम, लाल वृषभ, गुड़, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, लाल फूल, सोन, ताम्र, केशर, कस्तूरी। जप ७,०००। मन्त्र—ॐ अं अङ्गारकाय नमः।

बुधक दान—कांस्य पात्र, हरित वस्त्र, हाथीक दाँत, घी, मूँगा, पन्ना, शस्त्र, सोन, अनेक फूल, कर्पूर, षट्रस भोजन। जप १७,०००। मन्त्र—ॐ बुं बुधाय नमः।

गुरुक दान—पीत अन्न, पीत वस्त्र, पीत फूल-फल, सोन, पोखराज, हरदि, पुस्तक, मधु, लवण, शक्कर, छाता, घोड़ा। जप १९ ०००। मन्त्र—ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

शुक्रक दान—श्वेत चन्दन, चाउर, फूल, अनेक रंगवाला वस्त्र, चानी, हीरा, सोन, घी, दधि, श्वेत, घोड़ा, गौ, शक्कर, सुगन्ध। जप २०,०००। मन्त्र—ॐ शुं शुक्राय नमः।

शनिक दान—नीलमणि, तिल, उरीद, तेल, कारी वस्त्र, फूल-फल, कुरथी, लोहा, महिषी, कारी गौ, जूता, कस्तूरी, सोन। जप १६,०००। मन्त्र—ॐ शं शनैश्चराय नमः।

राहुक दान—सात अन्न, उरीद, स्वर्ण-नाग, नील वस्त्र, गोमेद, कारी फूल, तिल, खड्ग, तेल, लौह, सूप, कम्बल, सतिल-ताम्रपात्र। जप १८,०००। मन्त्र—ॐ रां राहवे नमः।

केतुक दान—कस्तूरी, उरीद, कम्बल, वैदुर्य, वृषभ, कारी फूल, वस्त्र, तिलतैल, लौह, बकरा, शस्त्र, सप्तान्न, सोन। जप ७,०००। मन्त्र—ॐ कें केतवे नमः।

ग्रहक रत्न—लाल, मोती, मूँगा, पन्ना, पोखराज, हीरा नीलम, गोमेद, लहसुनियाँ (क्रमशः)।

विशेष—ग्रह सबहिक वर्णक अनुरूप द्रव्यक दान नीक होइछ। जाहि ग्रहके प्रसन्न करबाक हो ओही दिन जप ओ शान्ति आदि कार्य करी।

विवाह-विवेक तथा ग्रह मेलापक

वर-कन्याक जन्मपत्रीक मेलापकपद्धति वर-कन्याक स्वभाव, रूप ओ गुण अभिव्यक्त करैत अछि। भारतीय संस्कृतिमे प्रेमपूर्वक विवाह कल्याणकारी नहि मानल गेल अछि। विवाहक पूर्व वर-कन्याक जन्मपत्रीक मिलेबाक अभिप्राय केवल परम्परेक निर्वाह नहि, किन्तु भावी दाम्पत्तिक स्वभाव, गुण, प्रेम तथा पारस्परिक व्यवहारक सम्बन्धमे ज्ञात करब थिक। ई सर्वविदित अछि जे एकर परिक हेतु पाठकगण कें देल जाइत अछि, यदि एहन स्थितिमे कोनहु दुनूक स्वाभाविक सम्बन्धमे ज्योतिष द्वारा किछु बताव कS देल जाय तS दोषहुँ दूनूकें परस्पर उपकार कS सकैत अछि।

ज्योतिषमे जन्मकें राशि ओ नक्षत्रकें मन मानल गेल अछि। प्रेम मनसँ होइछ, शरीरसँ नहि, एहि हेतु जन्मपत्रीकेँ जन्म-राशिसँ मेलापक ज्ञान करबाक हेतु कहने छथि। ग्रह-मिलान द्वारा वर-कन्याक भविष्य शक्ति, स्वास्थ्य, विद्या एवं धार्मिक परिस्थितिक ज्ञान करक चाही। द्विवाहिक विवाहमे मंगल दोष कहल गेल अछि, किन्तु कोनहुमे तत्त्व भारिदर्श ए दोष मुक्त अछि। एहिमे सेँ अन्त दोष रहने विवाह करबाक मादेश अछि।

जन्मलग्नसँ तथा चन्द्रलग्नसँ १-४-७-८-१२ एहि स्थान सभमे यदि मंगल कन्याक कुण्डलीमे हो तS ओ पतिघातिनी ओ वरक कुण्डलीमे हो तS ओ पत्नी नाशक होइत अछि। यदि वर-कन्याक कुण्डलीमे मंगल उक्त स्थानमे नहि पड़ए अथवा दुनूक कुण्डलीमे पड़ए तS दुनूमे विवाह सम्बन्ध शुभ कहल गेल अछि।

एकर परिहारमे एक कुण्डलीमे उक्त स्थानक मंगल हो तथा दोसर कुण्डलीमे यदि शनि, रवि, राहु, केतुमेसँ कोनो पापग्रह हो तS उक्त मंगलक दोष नष्ट भS जाइत अछि। कहबाक ई अछि जे, वर ओ कन्याक कुण्डलीमे उपर्युक्त स्थानमे पापग्रहक संख्या देखी। कन्याक कुण्डलीसँ वरक कुण्डलीमे यदि पाप ग्रहक संख्या तुल्य वा अधिक हो तS विवाह शुभप्रद अन्यथा अशुभप्रद होइत अछि। तात्पर्य ई जे, वर ओ कन्यामे जकर ग्रह निर्बल उक्त प्रकारें होइतनि, तकर मृत्यु पूर्व होयत, एहि हेतु कन्याकें अल्प वैधव्य नहि दृष्टिगोचर होइक, ताहि प्रकारें मेलापक विचार कर्तव्य। शास्त्रमे इहो कहल गेल अछि जे कन्याक कुण्डलीमे सप्तम मंगल बालवैधव्यकारक, तकर शान्ति (कुम्भविवाहादि) करैत्वाक बादे विवाह करबाक चाही।

वेध-विचार—रो-अभि. पू०-अनु., उषा-मू., अ-पू., ह-उषा., स्वा-भ., मू-पुन., उभा-पो.। परस्परक नक्षत्र—अश्वि. वि. अ. आधार अ. क्रमशः पुष्य-. पुषा., मघा तथा श्लेषासँ वेधित होइछ। यदि अनुराधामे दिन देखबाक हो तS वरमोने ग्रहके नहि रहने निर्दोष दिन होयत।

अष्ट मेलापक

एहिमे १ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रह मैत्री, ६ गणमैत्री, ७ भकूट तथा ८ नाड़ी ई आठ कूट होइत अछि जे उत्तरोत्तर बढ़ी मानल गेल अछि।

१. वर्ण—वर-कन्याक वर्ण समान अथवा वरक वर्ण श्रेष्ठ हो तS शुभ अन्यथा अशुभ। परिहार—कन्यासँ वरक राशि वर्ण हीन रहलहुँ पर यदि वरक राशिपति कन्याक राशिपतिसँ उत्तम वर्णक हो तS शुभ कहल गेल अछि। वृ० शु० ब्राह्मण, सू० मं० क्षत्रिय, चं० वैश्य, बुध शूद्र तथा शनि चाण्डाल वर्ण।

२. वश्य—वर-कन्याक वश्य समान अथवा वरक वश्य कन्याक हो तS शुभ।

३. तारा—कन्याक नक्षत्रसँ वरक नक्षत्र तक आओर वरक नक्षत्रसँ कन्याक नक्षत्रतक गणना कय ९ सँ भाग दी, यदि शेष ३-५-७ हो तS अशुभ आओर शेष १-२-४-६-८-० हो तS शुभ, कन्याक-वरक तारा शुभ भेने श्रेष्ठ, एकटाक शुभसँ मध्यम एवं दुनू अशुभसँ निन्द्य बुझक चाही।

४. योनि—दुनूक एकहि योनि अथवा योनि मैत्री वा उदासीनता हो तS शुभ आ मध्यम, शत्रुता रहने अशुभ। परिहार—वर-कन्याक नक्षत्रयोनिक वैरिता रहलहुँ यदि वश्य-शुभ एक हो तS शुभ।

५. ग्रहमैत्री—वर-कन्याक राशिपतिमे मैत्री, समभैत्री रहए तS शुभ, शत्रुता अशुभ। परिहार—वर-कन्याक राशिक नवांश पतिमे मैत्री हो वा नवांश पति बलवान् हो तS शुभ।

६. गण—दुनूक गण एक वा एक मनुष्य, एक देवगण, तS शुभ, राक्षस-मनुष्य वा देव-राक्षस गण हो तS अशुभ। परिहार—गण दोष रहलो पर यदि दुनूक राशि पतिक मैत्री वा नवांश पतिक मैत्री रहए तS विवाह शुभ।

७. भकूट—वर-कन्याक राशि परस्पर ६-८-९-५-२-१२ अशुभ। ३-११, ४-१०, ७-७ तथा एकहि राशिमे विवाह शुभ। विशेष—वरक राशिसँ कन्याक राशि ५म अशुभ, किन्तु नवम शुभ एवं वरक राशिसँ कन्याक राशि दोसर अशुभ, किन्तु बारहम शुभ (ज्योतिःप्रकाश)। समसप्तक ओ चतुर्थ-दशमकें शुभ कहल गेल अछि, किन्तु मकर-कर्क, सिंह-कुम्भ. एहि दुनू समसप्तकमे शत्रुता होइछ; एवं तुला मकरसँ, सिंह वृषसँ, कर्क मेषसँ, मीन मिथुनसँ, कन्या धनुसँ, वृश्चिक कुम्भसँ ई वर-कन्याक चतुर्थ दशक शुभ नहि। सारांश ई जे ३-६, ४-७, ५-८, ६-१२, १०-१, ११-२ एकर चतुर्थ दशक शुभ तथा समसप्तकमे ४-१०, ५-११ अशुभ। समसप्तक, तृतीयैकादश ओ चतुर्थ-दशमकें राजकूट मानल गेल अछि, जाहिमे ग्रह-वैरिता, वर्णदोष, नाड़ी दोष, गणदोष नहि होइछ. किन्तु अशुभ सप्तक तथा चतुर्थ-दशमकें त्याग्य करब उचित। षट्काष्टकमे यदि दुनूक राशीशक मैत्री वा दुनूक राशीश एकहि ग्रह हो तS ओ मित्र षट्काष्टक मानल गेल अछि। मित्र षट्काष्टक १-८, २-७, ४-९, ५-१२, ६-११, १०-३ ई छयोटा अछि, जे शुभ मानल गेल अछि। दुष्ट भकूटक परिहार—एकाधिपत्य राशीशमैत्री, नवांश पतिक मैत्री, तारा शुद्धि ओ राशिक वश्यता ई पाँच प्रकारक परिहार मानल गेल अछि, जाहिमे प्रत्येकमे अशेष शुद्धि आवश्यक। भकूट-दुष्टकूटक परिहार—"षेटारित्वं नाबंलेतद्भकूटं षेटग्रोऽस्तिचापि दुष्टं भकूटम्।"

८. नाड़ी—वर-कन्याक भिन्न नाड़ी रहने शुभ, एकहि नाड़ी भेने विवाह अशुभ। परिहार-दुनूक राशि एक ओ नक्षत्र भिन्न तथा दुनूक नक्षत्र एक आ राशि भिन्न हो तS शुभ, एकहु नक्षत्रमे चरणभिन्नतासँ विवाह शुभ।

उपर्युक्त आठो कूटक गुण योग ३६ होय त, जाहिमे अर्द्धाधिक (१८ सँ अधिक) वर-कन्याक गुण-योगक प्राप्तिमे विवाह शुभ। एहनो प्रमाण अछि जे भकूट शुद्ध रहलहुँ १६ सँ स्वल्प गुणैक्य निन्दित। १६ सँ २० धरि मध्यम, २० सँ ३० धरि उत्तम आओर ३० सँ ३६ उत्तमोत्तम। दुष्ट भकूटमे २० तक निन्दित, २५ तक मध्यम, ३० तक तथा ३० सँ ३६ तक उत्तमोत्तम। यदि ग्रह-मेलापक उत्तम हो तS १६ सँ कम गाओ तक शुभ योग ग्राह्य। जन्मनक्षत्र ज्ञात नहि हो तS पुकारोक नामसँ गणना करबाक चाही (शेष ३५ पेजमे)

[illegible]

नामाक्षर-राशि	चु चे चो ला	लि लु ले लो	अ इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो का कि	कु घ ङ छ	के को ह हि	हु हे हो डा	डि डु डे डो	म मि मु मे	मो टा टि टु	टे टो प पि	पु ष ण ठ	पे पो र रि	रु रे रो ता	ति तु ते तो	ना नि नु ने	नो या यि यु	ये यो भा भि	भू धा फा ढा	भे भो जा जि	जु जे जो खा	खि खु खे खो	ग गि गु गे	गो स सि सु	से सो द दि	दु थ झ ञ	दे दो च चि
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रो०	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फ.	उ.फ०	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवणा	धनिष्ठा	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
राशयः	मेष	मेष	१मे. वृ.	वृष	२ वृ. मि. २	मिथुन	३मि. क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सि.	१सि. क.३	कन्या	२क. तु.२	तुला	३तु. वृ.१	वृश्चि.	वृ.	धनु	धनु	१ध. म.३	मकर	मकर	२म. कु.२	कु.	३कु. मी.१	मीन	मीन
वर्णाः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष. १वै.	वैश्य	२ वै. शू. २	शूद्र	३शू. ब्रा.१	ब्राह्म.	ब्राह्मण	क्षत्रिय	क्ष.	१क्ष. वै.३	वै.	२वै. शू.२	शू.	३शू. ब्रा.१	ब्राह्मण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	१क्ष. वै.३	वैश्य	वैश्य	२वै. शू.२	शू.	३शू. ब्रा.१	ब्राह्म.	ब्राह्मण
वश्याः	चतुष्पद	चतु.	चतु.	चतु.	२ च. द्वि. २	द्विपद	३द्वि. ज.१	जल.	जल.	चतु.	च.	१च. द्वि.३	द्वि.	द्वि.	द्वि.	३द्वि.की.१	कीट	कीट	द्विप.	द्वि.	१द्वि. च.३	चतु.	चतु.	२च. द्वि.२	द्वि.	३द्वि. ज.१	जल	जलचर
योनयः	अश्व	गज	छाग	सर्प	सर्प	श्वान	बिडाल	छाग	मार्जार	मूषिक	मू.	गो.	महि.	व्याघ्र	महि.	व्याघ्र	हरिण	हरि.	श्वान	वानर	नकुल	नकु.	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ.	गज
योनिवैरा	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषिक	वानर	मूषिक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो.	अश्व	गो.	श्वान	श्वा.	मृग	छाग	सर्प	स.	छाग	गज	महि.	गज	व्या.	सिंह
राशीशाः	मंगल	मंगल	१मं. शु.	शुक्र	२ शु. बु. २	बुध	३बु. चं.१	चन्द्र	चं.	सूर्य	सू.	१सू. बु.३	बु.	२बु. शु.२	शु.	३शु. मं.१	मं.	मं.	बृ.	बृ.	१बृ. श.३	शनि	शनि	शनि	श.	३श. बृ.१	बृ.	बृह.
गणाः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्ष.	राक्षस	म.	म.	दे.	राक्षस	दे.	राक्षस	दे.	रा.	रा.	म.	म.	देव	देव	राक्षस	रा.	म.	म.	देव
नाड्यः	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	म.	अन्त्य	म.	आदि	आदि	मध्य	म.	म.	म.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	मध्य	आ.	आ.	म.	अन्त्य

ध्रुव-स्थिर-संज्ञक नक्षत्र—उत्त. ३, रो.। चर-चल—स्वा. पुन. श्र. ध. श.। उग्र-क्रूर—पूर्वा, भ. म.। मिश्र-साधारण—वि. कृ.। क्षिप्र-लघु—ह. अश्वि. पुष्य. अभि.। मृदु-मैत्र—मृ. रे. चि. अनु.। तीक्ष्ण-दारुण—मू. ज्ये. आ. आश्ले.। अधोमुख—मू. आश्ले. मिश्र. उग्र.। ऊर्ध्वमुख—आ. पुष्य, श्र. ध. श. ध्रुव.। तिर्यङ्मुख—अनु. ह. स्वा. पुन. ज्ये. अश्वि. मृ. रे. चि.। अधोमुखमें बावली, तरहरा, कूप आदि बनवाना चाही। ऊर्ध्वमुखमें—मठ-मन्दिर वृक्ष आदि रोपण तथा तिर्यङ्मुखमें मोटर-साइकिल, घोड़ा-हाथी आदि यान-वाहनक व्यवहार उत्तम। पर्व—१४।८।३०।१५ संक्रान्ति। अ क च ट त प य श वर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्। सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ॥ यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः। ग्राह्यस्तदादिमो वर्णः इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥ नन्दा—१।६।११। भद्रा—२।७।१२। जया—३।८।१३। रिक्ता—४।९।१४। पूर्णा—५।१०।१५।

युगादि तिथि			
१ सत्य	२ त्रेता	३ द्वापर	४ कलि
का.शु. ६	वै. श. ३	मा.कृ. १३	मा.कृ. ३

नक्षत्रादि	विषयः तिथ्यादि
सर्वे प्रतिपदादि-वाराः	८।१२।१४। मं.शु. पूर्वा ३, अश्वि. म.मू.अ.कृ.वि.ज्ये. पुष्य.
शान्ति-वाराः	१।३।५।७।८।११।१३।१५ र.सो.बु.श. स्वा.श.श्र.ध.रे.ह. पुन. उत्त. ३. रो. अनु.
सर्वे कर्मणि वर्जिताः	७।६।१० गुरुः म. भा. अश्वि.

(कन्या-नक्षत्र)

नक्षत्र-चरण	अ.	भ.	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ.	पु.३	पु.१	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.१	उ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.१	उ.३	श्र.	ध.२	ध.२	श.	पू.३	पू.१	उ.	रे.
अ.	२८	३३	२९	१९	२२	२३	२६	१७	१८	२२	३३	२७	२१	२६	१८	११	९	१३	२३	२७	२३	२०	२७	१५	१३	२६	२५	२६	२६	२१	२१	१५	१६	१५	२५	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२३	१४	१७	२६	२६	११	३४	२५	२१	१९	१८	२२	१९	६	१५	३०	३०	२०	१८	२०	२०	१९	२०	२७	२८	१०	१०	२०	२४	[illegible]	१७	२८
कृ.१	२८	२८	२८	१७	९	१६	१९	२०	२१	२६	२७	२४	१८	२१	२२	१६	१६	१९	२८	१६	२०	१७	२१	२७	२५	१८	१५	१६	११	२५	२५	२७	२०	१८	२०	१२
कृ.३	१९	१९	१९	२८	१९	२६	१७	१८	१९	२२	२३	२०	२०	२३	२४	२१	२१	२४	२३	११	१५	२२	२६	३२	२०	१३	१७	१४	११	२३	२०	३१	२३	२०	२२	१४
रो.	२४	२४	१०	२९	१८	३६	२७	२४	२४	२७	२६	१३	१३	२७	२८	२५	२७	२०	१९	१६	१०	१७	३०	२५	१४	१९	१२	१७	१९	२०	२६	२५	३१	२७	२६	१९
मृ.२	२३	१४	१९	२७	१४	२८	२०	२५	२४	२६	१९	२२	२२	१८	२६	२४	२७	१३	१०	२५	१८	२४	२३	२६	१५	१२	१८	२१	२५	१३	१९	२७	१०	२७	१७	२७
मृ.२	२७	१८	२१	१९	२६	२०	२८	३३	३२	२०	११	१६	२४	२१	२९	३१	३४	२१	१४	२७	२०	१४	११	१३	२१	१९	२४	२१	२५	१२	१३	२१	२४	२८	१७	२७
आ.	१९	२७	२१	१९	३५	२६	३४	२८	२५	१३	२१	१४	२४	३०	२३	२५	२५	२७	२०	२७	२०	१४	१७	५	१६	२८	२७	२३	२३	१७	२०	२१	१६	१९	२७	२७
पु.३	१९	२६	२२	२०	२४	२५	३३	२४	२८	१६	२३	१७	२३	२८	२२	२४	२५	२६	१९	१७	२१	१४	२१	५	१३	२७	२७	२८	२३	१८	१९	११	१७	२०	२८	२८
पु.१	२२	२८	२४	२०	२४	२५	१९	११	१५	२८	३५	२९	१६	२०	१५	१७	१८	२१	२०	२७	२०	१९	२६	११	८	२१	२२	२९	२६	२१	१३	७	११	१७	२५	२६
पुष्य	१२	२२	२७	२३	२४	१७	१०	१८	२२	३५	२८	३०	१९	१५	२४	२६	२७	१२	१२	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	२३	२६	२४	१३	५	१५	१८	२४	१८	२७
श्ले.	२५	२४	२३	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२५	२९	२८	१५	१६	१८	२०	२३	२६	२५	१२	१७	१६	२०	२६	२३	१६	९	१२	१३	२७	९	१९	१३	१९	२०	१२
म.	२१	२१	१८	१९	१२	२०	२३	२३	२२	१७	१९	१६	२८	३०	२७	१७	१७	२३	२६	१२	१८	२५	२७	१४	२४	२०	१२	६	५	११	२५	२६	१९	१८	१९	१२
पू.	२७	१९	२१	२२	२७	१८	२१	२९	२८	२३	१७	१७	३०	२८	३४	२४	२३	९	१२	२६	२०	२७	२५	२५	१९	१८	२७	२१	१९	५	१२	२०	२५	२४	१७	२५
उ.१	१७	२७	२२	२३	२७	२६	२९	२२	२२	१७	२६	१९	२७	३४	२८	१८	१७	१५	१५	२७	१८	२५	३१	२०	११	२६	२८	२२	२१	१२	१९	११	१४	१६	२७	२५
उ.३	२१	२२	१७	२१	२५	२४	३१	२४	२४	२०	२९	२२	१८	२५	१९	२८	२६	२५	१७	२६	१७	१८	२७	११	१६	२१	१०	२६	२५	१७	१७	११	१५	१८	२१	२७
ह.	१०	२०	१७	२१	२६	२६	३३	२४	२४	२०	२९	२४	१८	२३	१७	२६	२८	२७	१९	२७	१८	२०	२६	१२	१४	२७	२८	२३	२४	१९	१९	९	१५	११	२७	२७
चि.२	१३	६	१९	२६	२०	१२	१९	२६	२५	२१	१३	२७	२४	१०	१६	२५	२७	२८	२०	१९	२७	२८	११	१५	२८	१४	२१	१८	१९	१८	१८	२४	१९	२२	११	२१

नक्षत्र-चरण	अ.	भ.	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ.	पु.३	पु.१	पु.	श्ले.	म.	पू.	उ.१	उ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.१	उ.३	श्र.	ध.२	ध.२	श.	पू.३	पू.१	उ.	रे.
चि.२	२३	२६	२९	२४	[illegible]	१२	१३	२०	१९	२०	१२	२६	२६	१०	१८	१८	२०	२१	२८	२७	३५	२५	८	२२	२८	१४	२१	२६	२७	२६	२०	२६	२१	१५	४	१२
स्वा.	२८	३०	१८	१३	१७	२७	२७	२६	२७	२८	२८	१६	१४	२६	२६	२६	२८	२१	२८	२८	२०	१०	२४	१९	२३	२७	१८	२३	२४	१७	२१	२०	२५	२१	२०	१३
वि.३	२३	२३	२१	१६	११	१९	२०	२१	२१	२३	२२	१९	१८	२०	१९	१८	१९	२८	३५	१८	२८	२८	१७	२९	२८	२२	१३	१८	१८	३३	२७	२६	२२	१७	१४	५
वि.१	१७	१७	१५	२०	१५	२३	१३	१५	१५	१९	१८	१६	२२	२४	२२	१८	१९	२८	२४	८	१७	२८	२७	३२	२४	१७	१०	१२	१२	२७	२७	२७	२३	११	१८	१०
अ.	२५	१५	२०	२५	२८	२१	२१	१६	२२	२७	१८	२१	२५	२१	३०	२६	२७	१२	८	२३	१७	२८	२८	३१	१७	१५	२	२५	२६	१२	१२	२२	२५	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१९	२५	१०	२३	२३	१३	३	६	११	२०	२६	३१	२४	१७	१३	१२	२५	२१	१८	२१	३२	३०	२८	१५	२८	१८	२०	२०	२१	२५	२८	११	११	२१	२१
मू.	१२	२०	२५	१९	१३	१४	२१	१५	१२	९	१८	२४	२५	१९	१०	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२९	१६	१६	२८	२८	२६	१६	१६	२२	२५	२२	११	१८	२६	२७
पू.	२६	१९	१८	१३	१९	११	१९	२७	२७	२४	१४	१८	२१	१९	२७	२५	२७	१२	१२	२७	२०	१७	२९	१९	२८	२८	३३	२३	२४	९	१७	२४	१२	३३	२४	३१
उ.१	२६	२७	१४	९	१२	१८	२४	२६	२६	२४	२५	१०	१२	२७	२८	२९	२८	२०	२०	१९	१२	१२	१२	२६	२०	३३	२८	१८	१६	१६	२३	२३	२१	३२	३३	२४
उ.३	२८	३०	१७	१४	१७	२३	२१	२३	२३	२७	२९	१३	७	२२	२३	२६	२५	१८	२५	२४	१७	१४	२८	२२	१७	२६	१९	२८	२६	२६	१८	१८	२४	३१	१३	२४
अ.	२८	२७	१५	१२	१८	३५	२४	२२	२२	२७	२५	१५	१८	२०	२०	२४	२५	१९	२६	२४	१७	१४	२८	२३	१७	२४	१७	२५	२८	३०	२२	१९	२४	३२	३१	२३
ध.२	२१	११	२६	२४	२०	१२	९	१८	१८	२२	१३	२८	१९	६	१३	१६	१८	१७	२५	२६	३०	२८	१४	२८	२१	९	१७	२६	२८	२८	१९	२४	२१	२७	१६	२३
ध.२	२०	११	२६	११	२८	१९	१०	२०	१९	१४	५	२०	२६	१२	२०	१८	२१	१८	१९	२२	२६	१८	१२	२६	३०	१८	१४	१९	२१	२०	२८	३३	२९	१९	८	१५
श.	१५	३१	२८	३३	२६	२५	१८	१०	१०	८	१५	२०	२७	२१	१४	१२	९	२६	२६	१९	२६	२७	२१	१९	२३	२५	२४	१९	१९	२५	३३	२८	१९	९	१८	१७
पू.३	१८	२५	२०	२५	१२	१२	२४	१७	१७	१४	२१	१४	२०	२६	१८	१६	१८	१९	२०	२८	२१	२२	८	१२	२६	३२	३०	२५	२६	२१	२८	१९	२८	१८	२३	२१
पू.१	१५	२२	१७	१९	२६	२६	२५	१८	१८	१८	२५	१९	१७	२३	१५	२४	१९	२०	१३	१९	१४	२१	२७	१२	१५	३१	३१	२९	३०	२६	१७	८	१७	२८	१३	११
उ.	२५	१६	१९	२१	२५	१७	१७	२६	२७	२६	१९	२०	१८	२६	२६	२८	२६	१०	५	२०	१२	१९	२०	२२	२४	२२	३२	३०	२९	१५	६	१६	२२	३३	२८	१४
रे.	२५	२५	१२	१४	१७	२१	२६	२४	२६	२५	२७	१३	१२	२२	२२	२५	२६	२१	१४	१२	६	१३	२७	२२	२७	३१	२१	१९	२३	२३	१४	१६	१८	२१	१३	२८

दैर्घ्य	२१	२१	२१	२१	२१	२५	२५	२५	२७	२७	२७
विस्तार	१६	२१	१६	२१	२१	२१	२१	२५	२१	२५	२७
आय	७	१	५	३	१	५	७	१	५	३	१
वार	७	७	६	७	१	७	२	४	३	६	२
अंश	९	९	३	९	६	९	३	६	९	९	९
द्रव्य	१२	१२	४	१२	८	१२	४	८	१२	१२	१२
ऋण	५	३	७	१	३	७	५	३	७	१	३
नक्षत्र	६	१८	११	३	२०	१५	१०	५	२७	२७	२७
तिथि	१२	३	१	९	२	१५	१०	५	३	१५	१२
योग	३	९	१०	१५	१०	२१	५	११	२७	२७	२७
आयु	७२	४८	६६	२४	३२	१२०	४०	८०	४८	१२०	७२

दैर्घ्य	२६	२६	२६	३१	३१	३१	३१	३३	३३	३३	[illegible]
विस्तार	२५	२७	२६	२५	२७	[illegible]	३१	२७	२६	३१	[illegible]
आय	५	७	१	७	५	३	१	३	५	७	[illegible]
वार	१	५	२	३	१	६	४	४	३	२	२
अंश	३	९	६	६	९	३	६	९	९	९	९
द्रव्य	४	१२	१२	१२	१२	४	८	१२	१२	१२	१२
ऋण	७	५	३	५	७	१	३	१	७	५	१
नक्षत्र	२२	२७	५	१७	२७	१०	२०	२७	१५	३	१८
तिथि	१०	९	८	५	६	७	८	३	६	९	१५
योग	११	२७	१६	२२	२७	५	१०	२५	२१	१५	९
आयु	४०	२४	८	६०	६६	११२	८	४८	६६	३४.	१२०

दैर्घ्य	४०	४०	४५	४५	४५	४१	४५	४१	४१	४१	४१
विस्तार	४१	३९	४१	४१	३९	३९	४५	३५	३९	३५	१
आय	७	१	७	५	३	५	१	३	७	३	१
वार	४	५	६	१	३	१	४	७	६	७	४
अंश	६	९	९	९	९	९	९	६	९	६	९
द्रव्य	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	८	१२	८	१२
ऋण	५	३	५	७	१	७	३	१	५	१	३
नक्षत्र	२१	३	९	१८	२७	२४	२७	५	२१	५	२४
तिथि	११	९	१३	१३	१५	६	१५	५	१२	५	९
योग	११	१५	१८	९	२७	१२	२७	११	२१	१६	१२
आयु	५६	२४	१२०	१२०	१२०	६६	१२०	८	७२	८०	३२

दैर्घ्य	४३	३९	४९	३७	३५	४९	३५	४९	४९	३१
विस्तार	४१	३३	४५	३३	४५	४१	३३	४३	४०	४९
आय	३	७	५	३	१	१	३	३	७	१
वार	५	५	७	५	७	७	७	७	७	७
अंश	३	९	९	६	६	३	९	३	३	९
द्रव्य	४	१२	१२	८	८	४	१२	८	४	११
ऋण	१	५	७	१	३	३	१	१	५	१
नक्षत्र	१०	९	९	२३	२६	७	६	८	१०	१९
तिथि	४	६	१५	१०	५	७	१५	११	४	१९
योग	५	१३	१८	२२	१३	१७	३	४	५	६
आयु	६४	६६	१२०	५६	८०	११२	१२०	५६	६४	७२

दैर्घ्य तथा विस्तारक घात पिण्ड। पिण्ड के ९, ६, ६, ८, ६, ८, ८, ४, ८, सँ क्रमशः गुणन कए ८, ७, ९, १२, ८, २७, १५, २७, १२०सँ क्रमशः भाग देला पर आयवारादि होइछ। विषमाय शुभ। सूर्यादिवार सूर्यांश अशुभ। तिथ्यात्मक नक्षत्र इत्यादि आदिम एक योगके मेष, दु आदिमे गृहस्वामी धन धनिक शुभ, अर्थात् वारादिक ज्ञान। गृह तथा गोत्र पतिक नक्षत्र एके नहि नीक। नव पृष्ठ (शुभ)-द. प. दिशा, नै. वा. कोन ऊँच हो। पूर्व पृष्ठ (शुभ) मध्यमे ऊँच, चारु कात नीच। नाग पृष्ठ (अ.) द. उ. ऊँच, बीचमे नीच। दैत्य पृष्ठ (अ.) पू. ई. अ. ऊँच, प. नीच।

आनन्दादियोग-चक्रम्

सं०	योगाः	रविः	सोमः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	फलानि
१	आनन्दः	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	अनु.	उषा.	श.	सिद्धिः
२	कालदण्डः	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्युः
३	धूम्रः	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	असुखम्
४	धाता	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	सौभाग्यम्
५	सौम्यः	मृ.	श्ले.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	बहुसुखम्
६	ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	धनक्षयः
७	केतुः	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	असुखम्
८	श्रीवत्सः	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	सम्पत्तिः
९	वज्रः	श्ले.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	क्षयः
१०	मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	लक्ष्मीक्षयः
११	छत्रम्	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	राजसम्मानम्
१२	मित्रम्	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टिः
१३	मानसम्	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	सौभाग्यम्
१४	पद्मः	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	धनागमः
१५	लुम्बः	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	धनक्षयः
१६	उत्पातः	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	प्राणनाशः
१७	मृत्युः	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	मृत्युः
१८	काणः	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेशः
१९	सिद्धिः	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	कार्यसिद्धिः
२०	शुभः	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	कल्याणम्
२१	अमृतम्	उ.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	अ.	नृपसम्मानं
२२	मुसलम्	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	मानहानिः
२३	गदः	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	रोगः
२४	मातंगः	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	कुलहानिः
२५	रक्षः	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	अ.	उ.	महाकष्टम्
२६	चरः	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	बहुमानम्
२७	सुस्थिरः	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	अभीष्टसिद्धिः
२८	प्रवर्धमानः	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	शोभनाप्तिः

मुहूर्तविचारे सिद्धयादियोगचक्रम्

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	दिन
३। ८।१३	१। ६।११	३। ८।१३	२। ७।१२	५।१०।१५	१। ६।११	४। ९।१४	सिद्धियोग
५।१०।१५	५।१०।१५	२। ७।१२	१। ६।११	३। ८।१३	४। ९।१४	१। ६।११	अमृतयोग
१। ६।११	२। ७।१२	१। ६।११	३। ८।१३	४। ९।१४	२। ७।१२	५।१०।१५	मृत्युयोग
१२	११	१०	९	८	७	६	यमयोग
दि. ४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१। ६। ८	अर्द्ध
रा. ४।६	४।७	२।१०	५।७	५।८	३।१०	१। ६। ८	प्रहरा

जन्म-नक्षत्रसे विंशोत्तरी दशा ज्ञान चक्र

दशापति	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
नक्षत्र	कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	श्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू.फा. पू.षा. भ.
वर्ष-सं०	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

संक्षिप्त वैतरणी दान

ॐ कृष्णगव्यै नमः ३। ॐ वा० नमः ३। ॐ यमद्वारे पथि घोरे वा मास्ते याति वा मृतम्। दातारं मास्ते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता। यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्येनां कृष्णां वैतरणीं च गाम्॥ इति पठित्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय—"ॐ यमद्वारस्थित-वैतरणीनदीसुखसन्तरणकाम इमां कृष्णां गां रुद्रदैवतायमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे" यो स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ॐ अद्य कृतैतत् कृष्णगवीदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतम्—दक्षिणा। प्रतिग्रहीता ॐ स्वस्तीत्युक्त्वा गोपुच्छं गृह्णन् यथा शक्तं कामस्तुति पठेत। गोसन्निधाने ॐ एतावद्द्रव्य-मूल्यककृष्णगव्यै नमः पूर्ववत्।

संक्षिप्त दाह संस्कार

कर्ता स्नानमूत्रवस्त्रादि पहीरि पूर्वमुह बैसि नूतन-मृत्तिका पात्रये जल अभिमन्त्रित कय—ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गङ्गां च यमुनां च सरिद्वराम्॥ कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसान्तथा॥ धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थपिण्डारकन्तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुरः सागरांस्तथा॥ मनसें ध्यान करैत जलसें दक्षिण शिर शवके स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय यज्ञोपवीत पुष्प चन्दनादिसें अलंकृत कय चितापर उत्तर मुहे अधोमुख पुरुषकें तथा स्त्रीगणकें उत्तान शयन करा, अपसव्यकय दक्षिणाभिमुख भय वाम हाथे उल्क लय—ॐ देवाश्चाग्निमुखाः सर्वे हुताशनं यथायुक्तेन दहन्तु। मनमे ध्यान करैत—ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्॥ धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यांल्लोकान् स गच्छतु। इति मन्त्रद्वयं पठित्वा त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य ज्वलदुल्मुकं शिरो देशे दद्यात्। ततस्तृण-काष्ठघृतादिकं चितायां निक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत्। ततः प्रादेशमात्रसप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणा सप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकं प्रति प्रहारसप्तकं विधाय—ॐ क्रव्यादाय नमस्तुभ्यमित्येकैकां काष्ठिकामग्नौ क्षिपेत्। तत ॐ अहरहर्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवस्वतो न तृप्यति सुराया इव दुर्मतिः॥ इति यमगाथां गायन्तो बालपुरस्सराः वृद्धपश्चिमाः पादेन पादस्पर्शम् अकुर्वाणाः बान्धवाः जलाशयं गच्छेयुः। ॐ अमुकगोत्रामुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। बादमे लोह-पाथर-आदिक स्पर्श। विशेष सर्वकृत्यक द्वितीय भागमे देखी।

दशगात्र पिण्डदान (संक्षेप)

रात्रौ दाहश्चेत्तर्हि न रात्रौ पिण्डदानं भवति अग्रिम दिने एव पिण्डद्वयं देयम्। क्रमः—ॐ अमुकगोत्र पितरमुकप्रेत एष शिरः पूरकः प्रथमः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। २ कर्णाक्षिनासापूरक, ३ गलांस-भुजवक्षःपूरक, ४ नाभिलिङ्गगुदपूरक, ५ जानुजङ्घापादपूरक, ६ सर्वमर्मपूरक, ७ सर्वनाडीपूरक, ८ नखदन्तलोमादिपूरक, ९ वीर्यपूरक, १० पूर्णत्वतृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरक।

ग्रह-मैत्री सारणी

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द्रमा, मंगल गुरु	बुध	शुक्र, शनि
चन्द्रमा	सूर्य, बुध	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि	
मंगल	सूर्य, चन्द्रमा, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	मंगल, गुरु, शनि	चन्द्रमा
गुरु	सूर्य, चन्द्रमा मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	मंगल, गुरु	सूर्य, चन्द्र
शनि	बुध, शुक्र	गुरु	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
राहु, केतु	शनि, शुक्र, बुध	गुरु	सूर्य, मंगल, चन्द्र

ग्रह-बल

	चेष्टाबल	परम उच्च	दिग्बल	कालबल
सूर्य	मकरसँ मिथुन तक	मेष १०°	दशम भाव	दिनमे
चन्द्र		वृष ३°	चतुर्थ भाव	रात्रिमे
मंगल	अयन वक्री रहथि सघन वा पूर्णिमाकें चन्द्रमाक संग रहलासँ	मकर २८°	दशम भाव	रात्रिमे
बुध		कन्या १५°	लग्न	दिन-रात्रि
गुरु		कर्क ५°	लग्न	दिनमे
शुक्र		मीन २७°	चतुर्थ भाव	दिनमे
शनि		तुला २०°	सप्तम भाव	रात्रिमे
राहु		वृष २०°		
केतु		वृश्चिक २०°		

नैसर्गिक बल सूर्यक सबसँ अधिक तकरा बाद अवरोही क्रमसँ चन्द्रमा, शुक्र, गुरु, बुध, मंगल और शनि।

मैथिली श्रीरामचरितमानस

मैथिली रूपकार : मैथिली-विभूति आचार्य श्रीरामलोचनशरण

मुद्रक : श्री हिमालय प्रेस (ऑफसेट), पटना]

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

मिथिला ओ मैथिलीक पुनरुत्थानक दिशा मे सतत योगदान कयनिहार अथच गोस्वामी तुलसीदासक यावती साहित्य कें मैथिली मे रूपान्तरित कए मैथिली कें श्रीसम्पन्न बनौनिहार वयोवृद्ध साहित्यसेवी आचार्य श्री रामलोचन शरण कें मैथिली साहित्य संस्थान मैथिली-विभूतिक सम्मानोपाधि सँ अलंकृत कए अपना कें कृतार्थ मानैत अछि।

१९७० मे मैथिली साहित्य संस्थान, पटना द्वारा आयोजित सार्व... दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक भू० पू० उपकुलपति श्रीधर... सोहनी ८१ वर्षक वयोवृद्ध साहित्यसेवी आचार्य श्रीरामलोचनशरण... मैथिली-विभूतिक सम्मानोपाधि प्रदान कएल। [१८९०–१९७... ई...

[पञ्चांग संशोधक : पं० श्री शिवशंकर झा. शास्त्री, नागदह (मधु...